"'वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)

t 2023
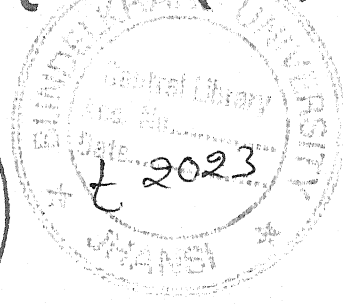
हिन्दी विषय के अन्तर्गत

डॉक्टर आफ फिलॉसफी

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2005

शोध निर्देशक
(डॉ वेद प्रकाश द्विवेदी)
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा
संयोजक, हिन्दी पाठ्यक्रम एवं शोध समिति
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोध छात्रा
(कु० अर्चना सिंह)
पुत्री श्री छत्रपाल सिंह
पूर्व नायब तहसीलदार
ए-300, आवास विकास, बाँदा

अतर्रा महाविद्यालय अतर्रा, बाँदा (उ०प्र०)

डॉ वेद प्रकाश द्विवेदी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा
संयोजक हिन्दी पाठ्यक्रम एंव शोध समिति
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

प्रमाण पत्र

मै प्रमाणित करता हूँ कि कु0 अर्चना सिंह आत्मजा श्री छत्रपाल सिंह ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के अन्तर्गत हिन्दी विषय डाक्टर आफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु ***" वीरेश्वर सिंह गोरा बादल व्यक्तित्व एवं कृतित्व "*** शोध प्रबन्ध मेरे निर्देशन में विश्वविद्यालय की शोध परिनियमावली की धारा 7 के अन्तर्गत निर्धारित अवधि तक उपस्थित देकर पूर्ण किया है।

शोध प्रबन्ध सर्वथा नव्य, मौलिक एंव शोध के क्षेत्र में नयी मान्यतायें एवं नयी अवधारणाओं को स्थापित करने वाला है।

शोध प्रबन्ध मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय में प्रेषित करने की प्रबलतम संस्तुति करता हूँ।

शोधार्थिनी के समुज्जवल भविष्य का आकांक्षी हूँ।

दिनांक :- 03 /12/2005

शोध निर्देशक

वेदद्विवेदी

डॉ वेद प्रकाश द्विवेदी

घोषणा-पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के अन्तर्गत हिन्दी विषय में डाक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "**वीरेश्वर सिंह गोरा बादल व्यक्तित्व एवं कृतित्व**" मेरी नवीन एवं मौलिक कृति है।

दिनाँक : 28/11/2005

शोध छात्रा
अर्चना सिंह
कु० अर्चना सिंह
एम०ए० (हिन्दी)

प्राक्कथन

कथा साहित्य आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। कथा के माध्यम से हिन्दी साहित्य में एक अभूतपूर्व क्रान्ति भी हुयी है। स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के बाद के कथा साहित्य में अनेकों क्रान्तिकारी मोड़ भी आये हैं। कथाकारों ने मुख्य रूप से सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक राजनीतिक जीवन की जटिलता को अभिव्यक्त किया है। कथा साहित्य में युगीन सन्दर्भो का भी प्रतिनिधित्व हुआ है तथा नये सामाजिक यथार्थ को भी कथा साहित्य ने अभिव्यक्ति दी है।

वीरेश्वर सिंह एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होने हिन्दी साहित्य की विपुल सेवा की है उनकी कहानियों पर कथा सम्राट प्रेमचन्द्र भी मुग्ध थे और वे उन्हे हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकारों में मानते थे। वीरेश्वर सिंह की कहानियाँ आंचलिकता का संस्पर्श लेकर पारिवारिक सामाजिक दायित्वों के बीच प्रेम संवेदनाओं का विकास करती है उनकी कहानियाँ मनोरजंन के लिये नही बल्कि साहित्य में स्थायी प्रेरणायें देने वाली हैं। इस कथाकार की सम्पूर्ण रचनायें यदि प्रकाश में आ गयी होती तो उनका सम्यक रूप से मूल्यांकन हो गया होता और उन्हें हिन्दी साहित्यकारों की उपेक्षा का शिकार न होना पड़ता।

वीरेश्वर ने जहां एक ओर " उँगली का घाव " के माध्यम से कथा साहित्य में एक हलचल उत्पन्न की है। 'बिजली ' उपन्यास के माध्यम से राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति की तथा गोरा बादल के नाम से कवितायें विशेष रूप से कुंडलियां लिखकर हिन्दी को एक पहचान प्रदान की। 'बाल साहित्य के क्षेत्र में उन्होने किशारों को नये राष्ट्रीय संस्कार प्रदान किये। इस प्रकार कथा उपन्यास तथा काव्य सभी क्षेत्रों को अपनी रचनाओं से एक नयी दिशा प्रदान की। उन्होने परिमाण में भले ही प्रकाशित साहित्य उतना न लिखा हो किन्तु गुणात्मक की

दृष्टि से उनका साहित्य अत्यन्त मूल्यवान है। वीरेश्वर जी के शब्दों मे " मै तो यह मानता हूं कि हिन्दी में एक कविता, एक कहानी, एक लेख, एक छोटी सी अच्छी चीज लिख देने में वही पुण्य फल वही अमृत है जो गंगा स्नान या एक हजार गायों के पुण्य में है वही सुख संतोष है जो गरीबों के आंसू पोंछने में है।"

कथाकार के अतिरिक्त उनके नाट्य साहित्य की उपलब्धि पर नाटिका की भूमिका में ऋषभ चरण जैन की टिप्पणी अत्यन्त मार्मिक हैं– " ठा0 वीरेश्वर सिंह, बी0ए0 हिन्दी की उन महान आशाओं में है जिनके विकास पर हमारी दृष्टि सर्तक भाव से लगी हुयी है।

उन्होने एक कहानी लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य से स्पर्श किया है। उनकी कहानियाँ कला, स्वाभाविकता और मौलिकता की दृष्टि से इतनी भव्य, सुन्दर और अभिनन्दनीय हैं कि अपने आप साहित्यक जीवन में ही उन्होने अपनी गिनती हिन्दी के श्रेष्ठ लेखकों में करा ली है। "

कथा, नाट्य तथा काव्य सभी क्षेत्रों में राष्ट्रीय जीवन धारा तथा नारी जागरण से जुड़े होने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हो उठी है।

भाषा एवं अभिव्यंजना के धनी वीरेश्वर सिंह अपनी शिल्प कला के लिये भी स्मरणीय रहेगें हिन्दी में कम लिखकर भी वीरेश्वर सिंह बहुत दिनों तक जीवित रहने वाले साहित्यकार होगें क्योंकि उन्होने जीने योग्य हिन्दी लिखी है। एक ऐसी हिन्दी जिसमें जन भावना का प्रतिनिधित्व हो तथा राष्ट्र के लिये बलिदान करने की प्रेरणा प्राप्त हो। वस्तुतः वीरेश्वर हिन्दी के एक विशिष्ट कथाकार है वे हिन्दी के एक अनन्य पुजारी और गर्वीले भक्त हैं जिनके हाथों में फूलों के दोने है और समर्पण की भाव भूमि है।

ऐसे महत्वपूर्ण कथाकार नाट्य शिल्पी और कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अभी तक कोई शोध कार्य नही हुआ था। प्रथम बार मुझे सर्वथा अछूते रचनाकार पर शोध कार्य करने का अवसर मिला। इसे मै अपना परम सौभाग्य

मानती हूँ। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ज्ञान के संवर्धन में अनेक नवीन जानकारियों को प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

इस शोध प्रबन्ध के निर्देशन के लिये मै हिन्दी विभाग के अध्यक्ष तथा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के हिन्दी पाठ्यक्रम एवं शोध समिति के संयोजक पूज्यपाद गुरूवर डा0 वेद प्रकाश द्विवेदी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने अपने सुयोग्य निर्देशन से इस शोध प्रबन्ध को पूर्णता प्रदान की। यदि आपका स्नेह पूर्ण संरक्षण और निर्देशन न मिलता तो मै यह कार्य कदापि सम्पन्न नही कर पाती। शोध कार्य करने की प्रेरणा महान साहित्यकार वीरेश्वर सिंह जी के अन्तरंग विद्वान काव्य मर्मज्ञ डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' डी0 लिट्0 ने वीरेश्वर जी के साहित्य पर शोध कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। अतः उनके प्रति श्रद्वानत हूँ। मेरे पूज्य पिता श्री क्षत्रपाल सिंह जी पूर्व नायब तहसीलदार ने मेरे शोध कार्य में पर्याप्त रूचि एवं प्रेरणा प्रदान की। परमपूज्या मातृश्री श्रीमती सोमवती ने अपने वात्सल्य स्नेह से मुझे स्नेहिल संरक्षण ही नही दिया बल्कि शोध कार्य में पर्याप्त समय देकर मेरे कार्य को सुगम बनाया। पारिवारिक दायित्वों से मुझे मुक्त रखकर मुझे अध्ययन का अवसर प्रदान किया। मै अपने अनुज भ्राता कौशलेन्द्र प्रताप सिंह के प्रति किन शब्दों में आभार प्रकट करूं जिन्होने कवि परिवार से सम्पर्क करके उनके दुर्लभ साहित्य, पत्र एवं चित्रों आदि को उपलब्ध कराके शोध कार्य में भारी सहायता प्रदान की। जिन महानुभावों का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है उनमें कवि परिवार के श्री अजीत सिंह, पूर्व अध्यक्ष छात्र संघ पं0जे0एन0 कालेज बांदा, श्री सुरेन्द्र सिंह एडवोकेट, जय सिह एडवोकेट आदि प्रमुख है। नगर के जिन साहित्यकारों ने शोध कार्यो में सहयोग प्रदान किया उनमें डा0 राजा राम पटैरिया, श्रीमती शान्ती खरे, अध्यक्ष देवेन्द्र खरे शोध संस्थान, श्रीं नरेन्द्र पुण्डरीक जी (केदार शोध संस्थान के अध्यक्ष) डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' डी0लिट0 निदेशक, चन्द्र दास शोध संस्थान,

बांदा डा0 रामगोपाल गुप्त, अध्यक्ष हिन्दी विभागाध्यक्ष, पं0जे0एन0 कालेज बांदा आदि प्रमुख है। इन सबके प्रति मै चिर कृतज्ञ हूँ।

इसके अलावा शोध कार्य में जिन लोगो का सहयोग विशेष सराहनीय है उन लोगों में श्री विचित्र पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, अतर्रा कालेज, अतर्रा, श्री बलराम सिंह कछवाह, बाँदा, 'आज' समाचार पत्र बाँदा के चीफ व्यूरो श्री धर्मेन्द्र सिंह गौतम का उल्लेख करना आवश्यक समझती हूं क्योंकि हर परिस्थिति में इनका सहयोग मेरे शोध कार्य का आधार बनता गया है। शुभि कम्प्यूटर के अग्रज तुल्य श्री हिमांशु खरे के प्रति किन शब्दों में धन्यवाद करूं क्योंकि उनके ही सहयोग का परिणाम है कि यह शोध ग्रन्थ आपके हाथ में है।

विश्वविद्यालय के विद्वानों तथा पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिन्होने सद् परामर्शो एवं पुस्तकीय सहायता प्रदान करके मुझे प्रोत्साहन एवं आर्शीवाद प्रदान किया। अन्त में उन सभी लेखकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं जिन्हे अध्ययन करके मुझे अनेक सन्दर्भ प्राप्त हुये तथा शोध प्रबन्ध को प्रमाणिक रूप प्रदान किया जा सका।

शोध छात्रा

दिनांक 28/11/2005

अर्चना सिंह

कु० अर्चना सिंह

एम0ए0 हिन्दी

वीरेश्वर सिंह ''गोरा बादल व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

विषयानुक्रमणिका

भीखू की कुंडलियाँ

गोरा बादल की कुंडलियाँ

गोरा बादल की कहनी

जयगाँधी

बाल कवितायें

सवेरा (प्रकाशित), यमराज, गदहा, खाट पर लेटे हुये,

तकिया, गांधी जयंती , पुत्र के प्रश्न, बच्चों से, धूप,

फूल में, जुगनू, कम्बल(प्रकाशित), दियासलाई

स्फुट रचनायें-

चौराहे की लालटेन, तैराक, चींटी, बहता है पसीना,

स्वप्नागन्तुक, मातृस्तवन, स्मृति चित्र, सांध्यबेला, स्वर्ग,

अमर यौवन, अंधकार, याद, मुँह मोड़ चले,

आये मेरे प्रियतम आये, अज्ञात, दो बातें, जनतंत्र

विहान,

उदबोधन, रेलवे का कुली, प्रेमाकुंर ,परिवर्तन,पूस

ब- कथा साहित्य

उगंली का घाव (प्रकाशित)

अपराध (प्रकाशित)

मातृत्व की टेक (प्रकाशित)

अप्रकाशित कहानियाँ

यात्रा भंग, शिक्षा मन्दिर, प्रेम का अंत,

पतिवृता (प्रसारित)

स- नाट्य साहित्य

बिजली नाटिका (प्रकाशित)

भूमिका

हिन्दी साहित्य में ऐसे अनेक प्रकाश स्तम्भ छूटे हुये हैं जिन्होने अपने आलोक से देशकाल का अवलोकित किया और अपने रचनात्मक अनुदान से साहित्य की विभिन्न विद्याओं को लाभान्वित किया। ऐसे ही महान साहित्य सृजकों में वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' भी प्रमुख हैं।

उन्होने एक पूरे काल खण्ड को अपनी कहानियों द्वारा दिशा प्रदान की बाल कविताओं द्वारा बालकों को संस्कारिक करने का कार्य किया तथा अपने नाट्य कृतियों द्वारा इतिहास और देशकाल को एक नया संदेश प्रदान किया।

प्रेमचन्द्र की परम्परा में जिन रचनाकारों ने ग्राम्य जीवन आंचलिक सौन्दर्य और यर्थाथपरक जीवन को साहित्य में प्रतिबिम्बित करने के लिये प्रयत्नशील रहे उनमें वीरेश्वर सिंह का प्रमुख स्थान रहा है।

गाँधी वादी जीवन दर्शन पर आस्था रखने वाले रचनाकारों का मार्क्सवादी विचारधारा में गहरा मेल स्थापित करना भी वीरेश्वर जी का एक प्रमुख विशेषता है। उनका साहित्य भी भारतीय जीवन दर्शन और प्रगतिशील और मार्क्सवादी जीवन दर्शन दोनों को समाहित करता हुआ चलता है। भारतीय जागरण में लाल क्रान्ति का 'सबेरा' एक नयी सृष्टि करता दिखायी पड़ता है। वस्तुततः वीरेश्वर जीवन मूल्यों के रचनाकार हैं। उन्होने 'उंगली का घाव' जैसे कथा संकलन लिखकर जहाँ एक ओर समाजिक सम्बन्धों की तथा पारिवारिक भावनाओं की अमर कहानियाँ लिखी हैं वही 'बिजली' जैसी नाटिका लिखकर नारी जागरण और भारतीय स्वतंत्रता में नारियो की क्रान्तिकारी भूमिका का उल्लेख किया है तथा भारतीय नारी के स्वाभिमानी चरित्र की व्यंजना की है। बाल साहित्य के क्षेत्र में वीरेश्वर जी ने सवेरा, फूल, धूप, गाँधी जयन्ती, गजराज, जुगनू, दियासलाई आदि कवितायें लिखकर तथा देशप्रेम के बालगीतों की रचना

करके एक नया संस्कार देने का प्रयत्न किया है। वस्तुतः उनका उददेश्य बालकों, युवकों मे राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाना है वहीं दूसरी ओर उनमें एक विवेकशील मानवता की रचना भी करना है।

वीरेश्वर सिंह हिन्दी को उज्जवल और शक्तिशाली बनाने के लिये ही रचनायें लिखते रहे हैं उनका उद्देश्य न तो मनोरजंन है न ही फैशन। वह अपने को हिन्दी का गर्वीला पुजारी मानते हैं जिसके हाथों में फूलों के दोने हैं इन दोनो को कवि कहानीकार, नाटककार आदि रूपों में भेट करने के लिये उनके मन में कामना है वह रचनाओं के द्वारा गरीबों के आँसू पोंछ लेना चाहते हैं तथा हिन्दी को जाग्रत भारत की आवाज बना देना चाहते है। कवि वीरेश्वर के शब्दों में – " हिन्दी के उज्जवल और शक्तिशाली भविष्य में विश्वास रखकर उसके एक अनन्य और गर्वीले पुजारी की तरह फूलों का यह दोना हिन्दी को भेंट करते हुये मुझे संतोष हो रहा है। मै तो यह मानता हूँ कि हिन्दी में एक कविता, एक कहानी, एक लेख, एक छोटी सी अच्छी सी कोई चीज लिख देने में वही पुण्य फल, वही महत्व है जो गंगा स्नान या एक हजार गायों के पुण्य में है। वही सुख संतोष है जो गरीबों के आँसू पोंछ देने या खद्दर के पहनने ओढ़ने में है हिन्दी केवल एक भाषा ही नही यह जाग्रत भारत की आवाज है यह वही मंत्र है जिसमें जप जाप और प्रताप के नये अवतार होगें मै हिन्दी लिखता हूँ, हिन्दी पढ़ता हूँ, हिन्दी बोलता हूँ तो मै उतना ही अधिक सुधरता हूँ, जाग्रत होता हूँ, विस्तृत बनता हूँ। इन कहानियों में हिन्दी संसार के सामने प्रस्तुत करने में मुझे इसलिये संतोष हो रहा है कि मैने इतनी हिन्दी लिखी है हाँ अमर भारत की अमर हिन्दी लिखी है और मेरे जीवन के इतने क्षण निश्चित रूप से धरती के हुये हैं। काल प्रवाह में कुछ वर्षो की दूरी तक तो यह कहानियाँ चलेगी ही और जहाँ तक जब तक यह तरंगित रहेगीं तब तक हिन्दी साहित्य प्रेमियों के हृदय बदलेगी। ऐसी आशा है। "

कथाकार वीरेश्चर की उंगली के घाव में लिखी हुयी यह पंक्तियाँ वस्तुतः उनकी महान साधना को व्यक्त करती हैं। निसंदेह वीरेश्वर सिंह हिन्दी के एक समर्थ कथाकार क्रान्तिकारी नाटय शिल्पी एवं भावुक कवि के रूप में अपने महान योगदान के लिये स्मरणीय रहेगें। अभी तक वीरेश्वर सिंह जी का अधिकांश साहित्य अप्रकाशित रहा है उनकी प्रकाशित 'उंगली का घाव' कथा संकलन तथा बिजली नाटिका और कतिपय कविताओं ने हिन्दी के पाठकों को ध्यान आकृष्ट किया था।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र वीरेश्वर सिंह की कहानियों को हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में रखने के प्रबल पक्षधर थे किन्तु ऐसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कथाकार, नाटककार और कवि पर अभी तक कोई शोध कार्य नही हो पाया था। मेरा पूर्ण विश्वास है कि इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से हिन्दी संसार वीरेश्वर सिंह के साहित्यकार रूप से परिचित हो सकेगा तथा उनका अवदान प्राप्त हो सकेगा।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय के अर्न्तगत वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' का व्यक्तित्व के अन्तर्गत जन्म, जन्म स्थान, शैशव, पारिवारिक वृत्त, माता–पिता, पत्नी आदि, शिक्षा, संस्कार जीवन की प्रमुख घटनायें निर्वाण आदि का विवेचन किया गया है। इस अध्याय का प्रमाणिक बनाने के लिये शोध कत्री ने कवि के परिवार से साक्षात्कार करके अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की हैं तथा जीवन वृत्त को प्रमाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' के कृतित्व के आयाम के रूप मे है जिसके अन्तर्गत काव्य कृतियां कथा साहित्य, नाट्य साहित्य और जीवनी साहित्य को लिया गया है। काव्य कृतियों में भीखू की कुंडलियां, गोरा बादल की कुंडलियां, गोरा बादल की कहनी, जय गांधी, बाल कवितायें आदि

साहित्य के अन्तर्गत उंगली का घाव (प्रकाशित) कहानी संग्रह एवं अप्रकाशित कहानियां शीर्षक से कहानियों का परिचय दिया गया है। नाट्य साहित्य के अन्तर्गत बिजली नाटिका (प्रकाशित) एंव अप्रकाशित एकता क्लब (बाल एंकाकी) आदि का परिचय दिया गया है। जीवनी साहित्य के अन्तर्गत ललित यात्रा (अप्रकाशित) कृति का परिचय इसी अध्याय के अन्तर्गत वर्णित है।

तृतीय अध्याय वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' की काव्य साधना से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत भाव सौन्दर्य, कल्पना सौन्दर्य, राष्ट्रीय चेतना एवं विविध मनोभावों का अंकन किया गया है और वीरेश्वर की भाव सम्पदा का निरूपण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' का कथा साहित्य से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत उनके कथा साहित्य का परिचय तथा राष्ट्रीय चेतना की कहानियां, आंचलिक कहानियां, प्रगतिशील कहानियां आदि शीर्षको में उनकी कथा सृष्टि निरूपित किया गया है। और इसी अध्याय में कथा साहित्य की उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' के नाट्य साहित्य से सम्बन्धित है। जिसमें बिजली नाटिका (प्रकाशित) की कथा वस्तु, बिजली नाटिका की कथा वस्तु, बिजली नाटिका की नाट्य परक उपलब्धियाँ आदि पर आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

षष्टम अध्याय वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' साहित्य का कला पक्ष है जिसके अन्तर्गत काव्य की भाषा, कथा साहित्य की भाषा, नाट्य साहित्य की भाषा, छंद योजना, मुहावरे, लोकोक्तियां आदि के सम्बन्ध मे विश्लेषण किया गया है।

सप्तम अध्याय वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' समग्र मूल्यांकन से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत कवि के रूप मे मूल्यांकन कथाकार के रूप में

मूल्यांकन तथा नाट्यकार के रूप में मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय में मूल्यांकन से सम्बन्धित कठिनाइयों उनके साहित्य के प्रकाशन सम्पादन आदि के भी प्रश्न उठाये गये है। मूल्यांकन के विविध आधारों को लेकर किये गये अध्ययन से ज्ञात होता है कि वीरेश्वर सिंह आधुनिक हिन्दी कथा, नाट्य एवं काव्य के क्षेत्र में गौरवपूर्ण नक्षत्र हैं।

शोध प्रबन्ध के अंत में उपसंहार के अन्तर्गत रचनाकार के महान योगदान की चर्चा करते हुये उनकी राष्ट्रीय अवदान को हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि की संज्ञा दी गयी है।

अध्याय-1

वीरेश्वर सिंह ' गोरा बादल ' का व्यक्तित्व

जन्म

जन्म स्थान

समय

शैशव

पारिवारिक वृत्त- माता, पिता, पत्नी, (विवाह), पुत्र, पुत्री आदि
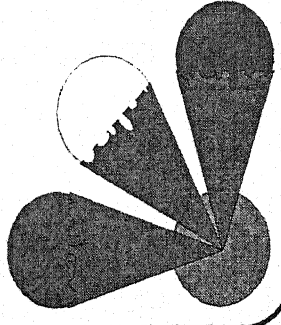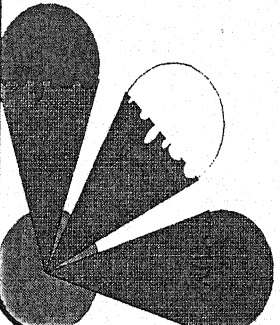
शिक्षा

संस्कार

जीवन की प्रमुख घटनायें

निर्वाण

अध्याय-१

हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने कथा साहित्य में वीरेश्वर सिंह का नामोल्लेख तो किया है किन्तु उनका साहित्य अप्रकाशित होने के कारण उन्हें वह स्थान नही प्राप्त हो सक़ा, जिसके वे अधिकारी हैं। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी ने वीरेश्वर की कहानियों के सम्बन्ध में उन्हें हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियां कहते हुये उन्हें सर्वश्रेष्ठ कहानीकार माना हैं। [1] उनकी कहानियों पर मुग्ध होते हैं तथा उन्हे कुछ लिखने के लिये प्रेरित करते हुये, उनके लेखन के प्रति कृतज्ञता स्वीकार करते हैं।[2]

जागरण कार्यालय — सरस्वती प्रेस

28—10—1932

प्रिय वीरेश्वर सिंह जी—

कार्ड मिला, चांद में आपकी कहानी पढकर बड़ा आनन्द आया। कई जगह तो मंत्र मुग्ध हो गया। आपकी कहानी मिल गयी है। अबकी अर्थात 3 नवम्बर के अंक में अवश्य जायेगी और अंक भी आपकी सेवा में पहुचेगा।

मै आपकी पढ़ाई में विध्न नही डालना चाहता लेकिन कभी—कभी कुछ लिखा करें तो एहसान समझूंगा।

सप्रेम

प्रेम चन्द

वीरेश्वर का जन्म बिहार प्रान्त के जनपद 'आरा' के रूपपुर स्टेट में सन् 1908 में हुआ था । वीरेश्वर सिंह के पिता श्री गंगोत्री प्रसाद सिंह तथा माता राजदेवी कुमारी सिंह थी। इनके पूर्वज रूपपुर स्टेट के मालिक थे। किंवदती के अनुसार इनके पूर्वज दो सगे भाई आपस में तलवार लेकर लड़ रहे थे। उसी समय एक पुरोहित आये और उन्होने कहा कि यदि आपको लड़ना है तो आप मुझे मार डालो और बीच—बचाव के लिये आये। बीच—बचाव में तलवार

लग जाने के कारण पुरोहित दिवंगत हो गये उसी समय से देवी प्रकोप के कारण रूपपुर स्टेट का राजपरिवार अभिशप्त हो गया। इस परिवार में कोई भी लड़का या लड़की जन्म होने के एक साल की अवधि में ही पिता की मृत्यु हो जाती थी।[3] पति की मृत्यु के बाद माँ राजदेवी अपने मायके अल्लापुर इलाहाबाद में आ गयी। वीरेश्वर की मां का परिवार इलाहाबाद में रहने लगा। इस परिवार मे शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती थी तथा पर्दे की प्रथा से दूर रखा जाता था। [4]

राजदेवी चार बहनें थी, जिसमें बड़ी बहन सुभद्रा कुमारी सिंह चौहान कवियत्री थी, जिन्होने " बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी " की रचना करने वाली श्रीमती सुभद्रा कुमारी सिंह चौहान वीररस की कवियत्री के रूप में ख्याति अर्जित की। इनका विवाह जबलपुर के लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ था। उनके कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति के व्यापक परिवेश उद्घटित हुये हैं। प्रेमचन्द्र ने जिस ग्राम परिवेश को चित्रित किया था उसी की अगली कड़ी में वीरेश्वर ने ग्राम्य संस्कृति के आंतरिक और मार्मिक पक्षों का उद्घाटन करके हिन्दी प्रगतिशील लेखन को एक नयी दृष्टि दी।

कथाकार, कवि, नाट्यशिल्पी वीरेश्वर सिंह की जीवन यात्रा विविध अनुभूतियों से दिग्ध, ग्राम्य चेतना से मार्मिक, गांधीवादी संस्कारो से निर्मित, जनवादी चेतना ने यर्थाथ के अर्न्तविरोधों की गहरी पहचान से सम्पृक्त होने के कारण एक नयी विचार संवेदना को लेकर चलती है।[7]

रचनाकार के व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी मां श्रीमती राजदेवी तथा उनकी मौसी श्रीमती सुभ्रदा कुमारी सिंह चौहान की विशेष भूमिका है। माँ और मौसी की करूणा, राष्ट्रीय चेतना वीरेश्वर में व्याप्त है। पिता श्री गंगोत्री प्रसाद सिंह का स्वाभिमान, ओज, निष्ठा और निर्भीकता का गुण उसमें समाविष्ट

है। उनके पैतृक परिवेश ने उन्हें स्वाभिमान, निर्भीकता, प्रशासनिक दक्षता जैसे गुण प्रदान किये। युग तथा देशकाल ने उनमें समष्टिगत चेतना, गांधीवादी चेतना तथा प्रगतिशील चेतना के संस्कारों से उत्सर्जित किया। युग बोध एवं युगीन सन्दर्भो ने उन्हें प्रेमचन्द्र, निराला जैसी चेतना प्रदान की । उन्होने युग की चुनौतियों को स्वीकार किया। कविता और साहित्य, नाट्य के क्षेत्र में उनके अभिनव प्रयोग जनसस्कृति की ओर, राष्ट्रीय संस्कृति बोध की ओर ले जाने वाले क्रान्तिकारी प्रयोग है। [8]

दूसरी बहन सुन्दर कुमारी सिंह का विवाह बलिया जिले के हल्डी स्टेट के मालिक कैप्टन महेन्द्र सिंह के साथ हुआ। तीसरी बहन कमला सिंह का विवाह बनारस के डा0 हुबदार सिंह के साथ हुआ। सभी बहनों ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी।[5]

इस प्रकार वीरेश्वर सिंहका पैतृक जन्म स्थान रूपपुर स्टेट आरा (बिहार) था। उनका शैशव इलाहाबाद और बांदा में व्यतीत हुआ। उनका बाल्यकाल सुख एवं बैभव में व्यतीत हुआ। राजपरिवार की पृष्ठभूमि होने के कारण उनमें राजसी गुणों का समावेश था। सामंतीय वातावरण में जन्में वीरेश्वर सिंह क्रान्तिकारी 'गोराबादल' के कवि के रूप में रूपान्तरित हुये, मौसी सुभद्रा कुमारी चौहान के वीरगीतों ने उन्हें राष्ट्रीय जीवन धारा की ओर उन्मुख किया। गाँधी आन्दोलनों ने उनमें राष्ट्रीय जीवन शक्ति प्रदान की। 'भीखू' पात्र के माध्यम से उन्होने गोदान का नया काव्यात्मक संस्करण तैयार किया। ' रामचरित मानस का नियमित पाठ करते-करते उन्हें तुलसी जनप्रिय कवि लगने लगे। कबीर की रचनाओं ने उनमे स्वाधीनता, निर्भीकता का भाव भर दिया। निराला के साहचर्य ने उन्हें जीवनबोध-प्रदान किया। महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन के काव्य से वे प्रभावित हुये।[6]

सचमुच वीरेश्वर के निर्माण में उनके राज्यवंश, लोकतंत्र की मिली

जुली भूमिका है। माँ की छाया और उसका प्यार उनके व्यक्तित्व माँ कृति के रूप में विद्यमान हैं, कवि के बाल्य एवं शैशव जीवन की कुछ छवियां 'माँ' कृति के माध्यम से उद्‌घटित हो उठती हैं–

' तेरा प्यार भरा माँ आंचल
कैसे इसके गुन गाँऊ, माँ
जब इसको अवलोक मूक
हो जाता है मेरा नन्हा मन ''[9]

कवि कथाकार वीरेश्वर के बचपन के संधाती पिल्ला–पूसी हैं। गिल्ली–गोली, गेंद उनके प्रिय खेल है। परिवार में मात्र एक मात्र संतान होने के कारण बचपन में उन्हें जो साथी, संधी मिले हैं, उनका स्मरण कवि ने किया है।

'' पिल्ला–पूसी, संग–सँधाती
गिल्ली–गोली, गेंद गपाती
घूम रहे हैं,
झूम रहे हैं
डोल रहे हैं,
बोल रहे हैं
सभी खेल हैं
ईंट रेल हैं
इसमें अपना, मगन मेल है।'' [10]

ईटों से रेल बनाने का खेल भी कवि का अपना प्रिय खेल रहा। क्रीडा में मग्नता का उल्लेख कवि ने स्वंय किया।

क्रीडा के प्रति अभिरूचि सर्वथा स्वाभाविक है। बाल्यकाल में कवि को न धूप की चिंता थी, न छांह की। कभी तितली पकड़ता और कभी पंतग

उड़ाता है, कभी गुलेल चलाता है, कभी गोलीपार । कवि वीरेश्वर के शब्दों में

'' धूप कहाँ है,

छांह कहाँ है ?

काँटो की परवाह कहाँ है?

पतगं उड़ायी

गोली पार

गुलेल चलायी। '' [11]

बाल्य जीवन के सहज चित्र वीरेश्वर की सहजता को प्रमाणित करते हैं बचपन में अपनी ही बगिया के बागों में आम चुरा कर खाने, मुँह में चोप के फदकने के चित्र है।

'' चुरा आम बगिया के खाये

फिर चोप मुँह में फदकाये। '' [12]

वीरेश्वर को माँ का प्यार मिला किन्तु उसे भय भी रहता माँ की डांट डपट का, खेत में निकल जाने, फिर घर आने में सहम जाते, पंजो के बल धीरे–धीरे घर में घुसते और अंदर जाकर चुप बैठते फिर किताब खोलकर पढ़ने का बहाना करते। माँ के पुकारने पर पुस्तक लिये–लिये ही उनके पास जाते।

कवि ने इस प्रकार की प्रवृत्ति का बड़ा सहज मनौवैज्ञानिक वर्णन करके बाल्य–जीवन की संरचनात्मक छवियों का आकलन किया है–

'' वह अनन्त, वह अथकित क्रीडा

गोधूली संध्या बन जाती

जाने कब निशि भी आ जाती

: अरे देर हो गयी' चौक यों

खेल छोड़ फिर मृगशावक ज्यों

भाग द्वार पर पहुंच ठिठककर
सहमें हिय में साहस भरकर
पंजे के बल धीरे–धीरे
कम्पित हिय वह मेरा चलना
अन्दर जा,चुप बैठ
खोल पुस्तक यों ही पढ़ने सा लगना।
फिर माँ उस तेरी पुकार पर
पुस्तक लिये लिये ही मेरी
तब सम्मुख जाने की ब्रीडा
वह अनन्त, वह अथकित क्रीडा'' [13]

वीरेश्वर बचपन में दीवारों को खुरचते थे, उसमें कुछ चित्र बनाने और कभी कुछ आलेखन करते। माँ चुपचाप सब कुछ देखती। बालक थककर कभी माँ की छड़ी को उठाता और फर्श पीटता और कभी खाट की पटरी को । जिससे माँ का ध्यान बालक की ओर आये और वह 'लगाव माँ से ' कुछ क्षण प्यार के पुनः प्राप्त कर ले । बाल्यपन में प्यार की अभिलाषा माँ के प्रति लगाव तथा अनुशासित जीवन के कतिपय रेखा चित्र कवि जीवन की बाल्य सुधियों को मुखरित करते हैं–

' खड़े किसी कोने में होकर
सजल नयन नख से
यों ही दीवार को खुरचना
तुझे जताने को कुछ
अस्फुट गुनगुन करना
तेरा करना काम निरंतर

इधर न देना ध्यान रंच भर

मेरा वह दीवार ख़ुरचना

चुपचुप तुझे कोरसे लखना

थक करके फिर बैठ

पास की उठा छड़ी को

फर्श पीटता कभी

खाट की उस पटरी को

घूर घूर मुझे निरखना

तुम कुछ बोलों यही परखना

जिससे मै उदगार कह

सकूँ अपने मन के

तुम झुक जाओ मान

दिखाँऊ मै तज करके। [14]

वीरेश्वर की बाल्याकृति भोली–भाली, चेहरा गोल तथा मुख लावण्यशील था–

' भोला गोल, सलोना मुखड़ा

फूल और भी लगता प्यारा

ओह, रूठने योग्य हो गया

अब तेरे आँखों का तारा '' [15]

वीरेश्वर की माँ हृदय से अत्यन्त करूण थी किन्तु बहिरंग रूप में वे संजीदा हो जाती। उनमें अनुशासन और प्यार का विचित्र समन्वय था।

'' संजीदा ऊपर से बन

भीतर पानी पानी हो जाना

मुझ दिल के टुकड़े से भी

मुख छिपा पोंछेतें आँसू जाना। '' [16]

माँ बचपन में शिशु को गरम दूध पिलाती , रूठे बालक को मनाती, दूध पिलाकर मुंह पोछती, शीष पर हाथ फेरती और फिर गृह प्रबन्ध में जुट जाती थी।

' तेरा आकर मुझे उठाना

अपनी गोदी में बिठलाना

दूध गरम कर फूँक–फूँक

मृदु मना पिलाना

मेरा हँस रूठना और

तेरा समझाना

दूध पिला मुँह पोंछ

शीश पर हाँथ फेर

प्यार भरे दो शब्द और

पुनः चूम कर

गृह प्रबन्ध में फिर जुट जाना

मेरा भी सब भूल

पुनः खेलना, कूदना, हँसना, गाना '' [17]

शैशव जीवन की मधुर स्मृतियों के माध्यम से कवि जीवन की जो बाल्य सुलभ प्रवृत्तियां मुखरित हुयी हैं उनमें उसकी क्रीडा प्रियता, माँ के प्रति आकर्षण एंव माँ के प्रति शिशु के अनुराग का केन्द्रीय भाव परिपुष्ट होता है। क्रीडा और ब्रीडा दोनो ने मिलकर शिशु को स्वच्छंदता और अनुशासन प्रियता के संस्कार प्रदान किये। माँ के प्रति कृतज्ञता का ज्ञापन भी सिद्ध करता है कि शिशु

जीवन से ही कवि–कथाकार वीरेश्वर में मातृ–भक्ति के संस्कार थे, जो कालान्तर में जननी जन्मभूमि के प्रति रूपान्तरित हो गये।

कवि का जीवन मिट्‌टी के दीवारों के बीच बीता। घर के छप्पर पर पड़–पड़ कर पड़ती बूंदे और मिट्‌टी की दीवार का कटना। जल से मोरी का रूँधना पनालों से मोटी जल धाराओं का टूटना और उस चिंता में माँ का बच्चे को गोद में लेकर चिंतातुर होना बाल्य काल की संघर्ष मयी स्थितियों को भी उजागर करता है–

' वायु प्रताणित पड़ पड़ पड़ पड़
छप्पर पर बूँदो की मार
कटी जा रही थी बाहर–भीतर
सब मिट्‌टी की दीवार
वह तीखी बौछार
घर का आंगन बना हुआ था
छोटा मोटा पारावार
रूँधी हुयी थी जल से मोरी
और पनाले से अटूट हर हर
गिरती थी मोटी धार
जब यह जल ताण्डव विकराल
गहन हो रहा था ज्यों काल
तुम उस समय दुलाई ओढ़े
एक खाट पर चुप बैठी
कुछ सोच रही थी अपने मन में ।'' [18]

बालक वीरेश्वर गौरांग थे, वालारूण सूर्य की भांति उसमें कान्ति

थी। एक मात्र संतान होने के कारण माँ की गोद के रत्न थे, वे बाल अंनग की भांति अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण, लावण्ययुक्त, कमनीयकांत व्यक्तित्व से सम्पन्न थे–

''माँ, तुमने ही तो बतलाया

जब मै इस दुनिया में आया,

मै रोया तो हर्षित जग में

उमड़ पड़ा आनन्द

लोक विलोक रहा था मुझको

ज्यों चकोर नभ चँद

मुसका उठा बाल रवि

लख मेरा सोने सा रंग

पुलकी पुर अंगना हुआ

पैदा घर बाल अनंग

एक बूँद सागर की

मै नन्हा सा बाल

पाकर माँ की गोद, तरंगित

बना समुद्र विशाल

भर गयी गोद

हृदय भी भरा

भरी आँखें, पुलकित

जग भरा

स्वर्ग अपनी निधि

देकर भरा

सदन मेरा मुझको

पा भरा। '' [19]

सचमुच ही बालक वीरेश्वर के जन्म से पिता गंगोत्री प्रसाद सिंह और राजदेवी कुमारी माँ का सदन प्रफुल्लित हो उठा। एक मात्र संतान होने के कारण माँ की गोद धन्य हो उठी । स्वर्णिम रंग की भांति चमचमाते दीप्त भाल वाले बाल्य शिशु को पाकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे स्वर्णिम बाल रवि धरती पर उतर आया हो। पुर अंगनाओं को बाल अनंग मिल गया।

बालक बीरेश्वर बचपन से मिलनसार प्रवृत्ति के थे। मेलजोल, बढ़ाने में कुशल थे। स्कूल मन मारकर धीरे–धीरे जाने लगे। उनका मन उड़ती हुयी तितलियों में और फूलों से लगता था। प्रकृति प्रेम और स्कूली शिक्षा के प्रति उदासीनता का चित्रण कवि ने किया है–

" भूल गया अब तो वह जादू
जिससे अपने आप
धूल कंकड़ो से मन बहला
लेता था चुपचाप।
जिसे लगाया हाँथ बन गया,
वह ही सुन्दर खेल
जिससे कर दी बात
हो गया उससे अपना मेल
मन मारे धीरे धीरे
जब जाता अपने स्कूल
तितली में उड़ता मन
मुझको बहँका लेते फूल ।" [20]

वीरेश्वर को माँ का प्यार ही नही मिला, वे उनके काव्य रचना की प्रेरणा स्रोत भी बन गयी।

" काव्य कल्पना या
जो मेरे विचार, उद्‌गार
माँ, तू इनकी स्रोत
तथा तू ही इनकी आधार " [21]

पारिवारिक वृत्त

वीरेश्वर सिंह की माँ राजदेवी कुमारी सिंह हिन्दी की प्रख्यात कवियत्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी सिंह चौहान की बहन थी। अत्यन्त सुन्दरी, विनम्र, स्वाभिमान प्रिय, कवि हृदय, गौरांग व्यक्तित्व की धनी थी। माँ का परिवार इलाहाबाद अल्लापुर के निवासी थे, जहां शिक्षा को सर्वोच्च वरीयता दी जाती थी। राजदेवी ने प्रयाग विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। [22] पति की मृत्यु के बाद वीरेश्वर सिंह की माँ राजदेवी ने ससुराल छोड़ मायका इलाहाबाद में शरण ली उस समय उनके भाई रामप्रसाद सिंह बांदा में दरोगा के पद पर तैनात थे और दूसरे भाई राजबहादुर सिंह भी उनके साथ रहकर वकालत करते थे। माँ बदायूं के स्कूल मे हैड मिस्ट्रेस के पद पर नौकरी करती थी। उन्ही के सहारे पुत्र का लालन–पालन चलता था।

वीरेश्वर सिंह के पिता गंगोत्री प्रसाद सिंह बिहार प्रान्त के जनपद आरा के रूपपुर स्टेट से सम्बन्धित थे। पिता, शिक्षा प्रेमी, स्वाभिमानप्रिया एवं प्रशासक थे। पिता श्री गंगोत्री प्रसाद गया (बिहार) में डिप्टी कलेक्टर थे। वे अपने ही समान वीरेश्वर को भी प्रशासक बनाना चाहते थे,किन्तु बाल्य काल में ही पिता के निधन के कारण उनकी आकांक्षाये साकार रूप नही ले पायी। [23]

वीरेश्वर का विवाह 1935–36 में हुआ था। वीरेश्वर सिंह की पत्नी श्रीमती रमा सिंह चौहान ठाकुर थी। पत्नी शिक्षित थी। शिक्षिका के रूप में कार्य करते हुये नवम्बर 1984 में दिवंगत हो गयी। [24]

वीरेश्वर के 2 पुत्र और 2 पुत्रियां थी। बड़े पुत्र सुरेन्द्र सिंह बांदा में एडवोकेट हैं, दूसरे पुत्र पत्रकारिता और ठेकेदारी से जुड़े हुये हैं। पुत्रियों में बड़ी पुत्री अंजली सिंह का विवाह बांदा के प्रसिद्ध वकील ठा0 ललक सिंह के पुत्र नरेन्द्र सिंह के साथ हुआ तथा दूसरी पुत्री श्रीमती संतोष सिंह दुर्ग में व्याही हैं।[25] वीरेश्वर सिंह के परिवार के सभी सदस्य सम्प्रति बांदा में निवास करते हैं। सिविल लाइन स्थित अपने मकान में रहते हैं, मकान में एक बगीचा भी है जिसमें वीरेश्वर सिंह जी के हाथों से लगाये पेड़ पौधे हैं।
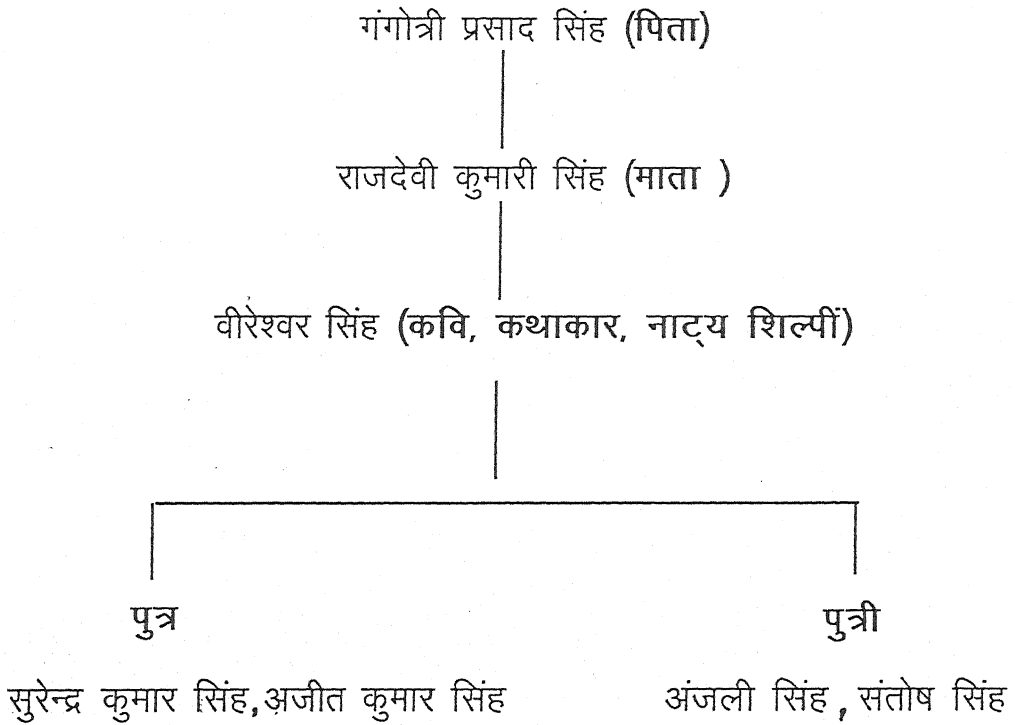
शिक्षा

वीरेश्वर सिंह ने एम0ए0 अंग्रेजी साहित्य विषय से इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त की थी। उन्होने इसी विश्वविद्यालय से एल0एल0बी0 की उपाधि भी प्राप्त की।[26] वकालत से लेकर पत्रकारिता तक उन्होने नये कीर्तिमान स्थापित किये। टाइम्स आफ इण्डिया में उन्होने एडिटर के रूप में कार्य किया।

वीरेश्वर सिंह ने एम0ए0 अंग्रेजी मे होने के कारण रेवेन्यू आफीसर का पद प्राप्त किया। बाँदा बदांयू, चंदौली, मुजफ्फरनगर आदि स्थानों मे रहने के बाद माँ की तबियत ठीक न होने के कारण नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और बांदा में आकर वकालत करने लगे साथ ही अपने पारिवारिक परिवेश के अनुकूल ही अपनी साहित्यक प्रतिभा को उभारा। कवितायें और कहानी लिखना उनका शौक था। मुंशी प्रेमचन्द के लड़के अमृतराय से मौसी सुभद्रा कुमारी चौहान की पुत्री सुधा चौहान का विवाह हो जाने से प्रख्यात कवि निराला और अन्य लेखकों का जमघट लगा रहता।

वीरेश्वर ने एक ओर रामचरित मानस और गीता को अध्ययन के लिये चुना, दूसरी ओर पश्चिम के महान कवि दान्ते, होमर , मिल्टन, सेक्सपियर, वर्डसवर्थ को अपने अध्ययन का विषय बनाया। [27]

अध्ययन काल में वे 150 इन्द्रा बोर्डिग हाउस, इलाहाबाद में रहते थे।

संस्कार

वीरेश्वर सिंह के परिवार की पृष्टभूमि, मौसी सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय कवियों में गूंज, प्रेमचन्द्र, निराला का सानिध्य, बांदा में निराला आदि के आगमन के कारण नगर में गोष्ठियां, वीरेश्वर सिंह द्वारा साहित्यकार संघ की स्थापना, सभी ने वीरेश्वर को साहित्य लेखन के संस्कार प्रदान किये। [28] उनके पिता राजवंश से जुड़े हुये थे, अतः सुसंस्कृत, समृध्द ठाकुर परिवार में जन्म होने के कारण उन्हे साहित्य रचना वंश परम्परा से मिली। स्वाभिमान, प्रियता उन्हे अपने पैतृक परिवार से मिली।

मातृ स्नेह दुलार में पले वीरेश्वर में मातृभक्ति का संस्कार उन्हे अपनी माँ से प्राप्त हुआ। पिता श्री के बचपन में दिवगंत हो जाने के कारण उन्हें

संघर्ष का जीवन मिला। अपने परिवार में अकेले होने के कारण वे लाड़ प्यार में पले।

मौसी सुभद्रा कुमारी चौहान के कारण तथा उनकी बेटी सुधा चौहान का विवाह मुंशी प्रेमचन्द्र के बेटे अमृतराय से होने के कारण साहित्यकारों का जमघट लगा रहता था। अतः वीरेश्वर सिंह में भी मिलनसारिता व उपकार की प्रवृत्ति एंव संस्कार बाल्यकाल से रहे। [29]

वीरेश्वर न झुकना जानते थे, न टूटना। वे सिद्धान्तों में अटल थे। साहित्य साधना के क्षेत्र में भी वे किसी वाद से नही बंध सके। किसी वाद विशेष से न बधने के कारण वीरेश्वर एक बड़ी सीमा तक उपेक्षित रहे। [30]

स्मृतियों की छांव में वीरेश्वर सिह– डा0 राजाराम पटैरिया ' अन्वेषी' "

" डा0 वीरेश्वर सिंह का व्यक्तित्व बहु आयामी रहा है, वे सन् 1970 से 1980 के दशक में प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में भी बहुचर्चित रहे। चित्रगुप्त मंदिर की स्थापित गोष्ठियों में उन्होने सदैव भाग लिया और उनका रचना एवं चिंतन धर्म मैने उनसे वहीं कई बार सुना। मानस में अंतरात्मा नामक विषय पर आपका सम्बोधन जिला जज पं0 बाल कृष्ण शर्मा ने भी सराहा। अन्यान्यों ने भी आपकी चिंतन धारा का समर्थन किया। आज भी मुझे याद है उनक़ी तेज़तर्रार प्राकृतिक छवि तुलसी की समन्वयवादी धारा से समझौता नही करती थी। वे मार्क्सवाद व तुलसी के समन्वयवाद के मध्य निधि के रूप में स्थापित कवि व गद्यकार थे, गद्यात्मक व्यक्तित्व की सरल धारा में पद्यात्मक तरंगो का सम्मिश्रण उनके संबोधन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था। समालोचना का सरल स्वाभाव उनकी अंजलि वाणी में घुलामिला रहा। गद्य–पद्य में मिश्रित 'चम्पू' का सा गुण उनके व्यक्तित्व में सदैव रहा। वाणी में जितना तेज प्रखर था उतना ही हृदय संवेदनशील रहा। 'साहित्यकार संसद' द्वारा संचालित संगोष्ठियों

में आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति आपने या तो स्वयं की या फिर उन्होने अन्यों से प्रेरित कर अभावों को भरा। अध्यात्म में आपकी अच्छी पकड़ रही। गीता की मासिक गोष्ठियों में आपने सदैव भाग लिया और अपनी सदप्रेरणा से सभी को प्रभावित किया। अस्तु व्यक्तिगत रूप से मै आपका ऋणी रहा और उमंगभरी स्मृतियां रह–रह कर यदा कदा मुझे गतिशील बनाये रखती है।''

वीरेश्वर को अध्ययन के संस्कार अध्ययनशील मां से मिले। वे अपने उत्तरार्द्ध जीवन में भी अच्छी पुस्तको के पठन–पाठन में व्यस्त रहे। अध्ययन प्रियता का संस्कार इतना गहरा था कि कि वे आजीवन अध्ययन के प्रति निष्ठावान थे। जनपद में साहित्य कारों के लिये साहित्यकार संघ' की स्थापना की, जिसमें निराला, प्रेमचन्द्र, अमृतराय, रामविलाश शर्मा, बच्चन जी प्रभृति साहित्यकार बांदा में आते रहे। गोष्ठियों में बराबर वीरेश्वर सिंह सचिव के रूप में सक्रिय रहे। [31]

वे प्रवृत्या स्वाभिमान प्रिय, करूण, एवं संवेदनशील प्रकृति के व्यक्ति थे। वे बांदा जनपद में साहित्यिक गोष्ठियों में आते रहे। अपने पड़ोसी साहित्यकर्ता अनुसंधानकर्ता डा0 ललितसे प्रभावित हुये, उनकी खोजों तथा अनुसंधानों मे गहरी रूचि थी। अपने जीवन के अन्तिम दिनों मे वे डा0 ललित के साहित्यक योगदान पर एक पुस्तक भी लिख रहे थे,जो उनके निधन के कारण अपूर्ण ही रह गयी।

वीरेश्वर सिंह के साहित्यिक गोष्ठियों में भाग लेने तथा विचार विमर्श करने का उल्लेख बांदा जनपद के साहित्यकार डा0 राजाराम पटैरिया ने ' स्मृतियों की छांव में ' नामक संस्करण में किया है। [32]

वे अपनी करूण रस की कविताओं 'भीखू की कुंडलियों ' का पाठ नही कर पाते हैं। छंद पूरा करते करते फफक–फफक रोने लगते थे। काव्यपाठ के साथ करूणा का ऐसा साधारणीकरण अन्यत्र कहीं नही देखा गया।[33]

वीरेश्वर के प्रिय विषय थे तुलसी, प्रेमचन्द्र, वे मनायोग पूर्वक तुलसी के मानस और गीता का पाठ करते थे। अंग्रेजी साहित्य के विद्वान होने के कारण उनका अधिकार अंग्रेजी के कवियों और लेखकों से रहा। 'टाइम्स आफ इण्डिया' के रिर्पोटर होने और स्थायी लेखक होने के कारण उनका सम्बन्ध अंग्रेजी साहित्य से घनिष्ठ रूप से बना रहा। [34]

राष्ट्रीयता का संस्कार जो उन्हे मौसी सुभ्रदा कुमारी चौहान से मिला था, उसमें उनकी कविताओं, नाटकों और कहानियों में राष्ट्रीय चेतना बराबर आन्दोलित होती रही। उन्होने प्रगतिशील राष्ट्रीय जीवन के मूल्यों के प्रति अपनी अगाध निष्ठा व्यक्त की है।

वीरेश्वर आस्थावादी, गाँधीवादी, राष्ट्रीयता चेतना के कवि, साहित्यकार हैं। उन्होने पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन करके भारतीय जीवन दर्शन के अनुकूल साहित्य का सृजन किया। प्राचीन और नवीन के बीच का संयोजन उनकी समन्वयकारी दृष्टि का परिणाम है। पाश्चात्य साहित्य के अध्येता होकर भी वीरेश्वर का खादी पहनने का संस्कार , हिन्दी बोलने के संस्कार उनकी राष्ट्रीयता और भारतीयता के प्रबल समर्थक हैं। [35]

निर्वाण

24 मार्च 1980 को नवमी तिथि के दिन करीब 1 बजे अचानक हृदय गति से वीरेश्वर सिंह का निधन हो गया। हिन्दी के इस यशस्वी सूर्य का अवसान बाँदा जनपद के केन नदी के किनारे हुआ। मुखाग्नि उनके बड़े पुत्र सुरेन्द्र सिंह एडवोकेट ने की। नगर के विभिन्न संस्थाओं ने शोकोजलियाँ अर्पित की। [36]

सन्दर्भ

1 'विशाल भारत' का प्रथम साहित्य विशेषांक सम्पादक श्री पदम सिंह शर्मा में प्रकाशित मुंशी प्रेमचन्द्र का लेख हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार

2 वीरेश्वर सिंह के नाम मुंशी प्रेमचन्द्र के पत्र (अप्रकाशित) कवि परिवार से

3 वीरेश्वर सिंह के परिवार से लिया गया एक साक्षात्कार

4 तदुपरिवत

5 तदुपरिवत

6 तदुपरिवत

7 वीरेश्वर का रचना संसार ,डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' (अप्रकाशित), पृ0 5

8 तदुपरिवत पृ0 8

9 'माँ' (काव्य), वीरेश्वर सिंह (अप्रकाशित) पृ0

10 तदुपरिवत, पृ0 8

11 तदुपरिवत्, पृ0 8

12 तदुपरिवत्, पृ0 10

13 तदुपरिवत्, पृ0 10

14 तदुपरिवत् , पृ0 10

15 तदुपरिवत, पृ0 11

16 तदुपरिवत, पृ0 11

17 तदुपरिवत, पृ0 12

18 तदुपरिवत पृ0 12

19 तदुपरिवत पृ0 15

20 तदुपरिवत पृ0 15

21 तदुपरिवत पृ0 15

22 वीरेश्वर सिंह के परिवार से लिया गया एक साक्षात्कार,

23 तदुपरिवत

24 तदुपरिवत

25 तदुपरिवत

26 तदुपरिवत

27 वीरेश्वर का रचना संसार ,डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' , पृ0 20

28 तदुपरिवत् पृ0 20

29 वीरेश्वर सिंह के परिवार से लिया गया एक साक्षात्कार,

30 वीरेश्वर का रचना संसार ,डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' , पृ0 20

31 तदुपरिवत पृ0 25

32 स्मृतियों की छांव में , डा0 राजा राम पटैरिया

33 वीरेश्वर का रचना संसार ,डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' , पृ0 25

34 तदुपरिवत पृ0 25

35 तदुपरिवत पृ0 25

36 वीरेश्वर सिंह के परिवार से लिया गया एक साक्षात्कार,

अध्याय- २

वीरेश्वर सिंह ' गोरा बादल' के कृतित्व के आयाम

अ- काव्य कृतियां

भीखू की कुंडलियाँ

गोरा बादल की कुंडलियाँ

जयगांधी

माँ

बाल कवितायें

सवेरा, यमराज, गदहा, खाट पर लेटे हुये, तकिया, गांधी जयंती , पुत्र के प्रश्न, बच्चों से, धूप, फूल में, जुगनू, कम्बल, दियासलाई, कम्बल

स्फुट रचनायें-

चौराहे की लालटेन, तैराक, बहता है पसीना, स्वप्नागन्तुक, मातृस्वप्न, स्मृति चित्र, सांध्यबेला, स्वर्ग, अमर यौवन, अंधकार, याद, मुँह मोड़ चल, आये मेरे प्रियतम आये, अज्ञात, दो बातें, जनतंत्र विहान, उदबोधन, रेलवे का कुली, गोरा बादल की कहनी, प्रेमाकुंर ,परिवर्तन,पूस, गाँधी

ब- कथा साहित्य

उगंली का घाव (प्रकाशित)

अपराध (प्रकाशित)

मातृत्व की टेक (प्रकाशित)

अप्रकाशित कहानियाँ

यात्रा भंग, शिक्षा मन्दिर, पतिव्रता , प्रेम का अंत

स- नाट्य साहित्य

बिजली नाटिका (प्रकाशित)

अन्य रचनायें।

एकता क्लब (बाल एकांकी)

द-जीवनी -साहित्य

अध्याय- २

हिन्दी प्रगतिशील कथाकारों और कवियों में ठा0 वीरेश्वर सिंह का नाम अग्रिम पंक्ति के लेखकों में प्रतिष्ठित होने का अधिकारी है। उनके नाम से हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखक तो परिचित हैं किन्तु कथाकार , कवि, नाटककार के रूप में उन्होने जिन साहित्यिक विधाओं में रचनायें की हैं उनके अनुदान से अभी तक हिन्दी साहित्य का अपरिचित रहना सर्वथा दुर्भाग्य पूर्ण है।

वीरेश्वर सिंह की कहानी संग्रह ' उँगली का घाव' तथा 'बिजली' नाटिका मात्र प्रकाशित हुये हैं। शेष रचनायें अप्रकाशित हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ अप्रकाशित है, उनकी कविताओं का प्रवाहान अभी तक नही हो पाया ।[1]

उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

काव्यकृतियाँ

वीरेश्वर सिंह की काव्य कृतियाँ किसी वाद विशेष की सीमा में नही बँध पाती। उनकी कृतियों को राष्ट्रीय, प्रगतिशील, चेतना की कवितायें कहा जा सकता है । वे छायावादी प्रयोगवादी कवियों से भिन्न हैं प्रगतिवादी कवियों की परम्परा में वे एक नयी क्रान्ति करते है। गाँधीवाद, प्रगतिवाद, मार्क्सवाद सभी के समुज्जल रूपों को लेकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में उनकी कवितायें अत्यन्त मूल्यवान हैं। [2]

भीखू की कुंडलियाँ-

' भीखू की कुंडलियाँ ' नामक काव्यकृति में कवि वीरेश्वर ने लोकप्रिय छंद कुंडलियों के माध्यम से 'भीखू' के चरित्र सृष्टि की है। भीखू पूस की मडैया में रहता है। चिलम की आग के सहारे जीवन संघर्ष को जीतता है। रूढ़ियों से उसे विरोध है किन्तु आस्तिक संस्कारों का, शोषित वर्ग का प्रतीक मात्र है।[3]

'भीखू की कुंडलिया' रचना काल 15 अगस्त 53 है, कवि ने रचना में स्वयं तिथि का उल्लेख किया है। भीखू के संगम स्नान सम्बन्धी कुंडलियों में कवि ने

इसका रचना काल 31–3–66 अंकित किया है। इसे कतिपय संशोधन के साथ 23–2–68 में लिखा है। [4]

इस कुंडलियों की रचना कवि ने बाँदा निवास में की है। रचना काल की दृष्टि से ये 53 से 68 के बीच्च की है। अस्तु इन तिथियों से अनुमान लगाया जा सकता है कि कवि ने अलग–अलग समय में इन कुंडलियों की रचना की है। पुनः इन्हे एक कृति के रूप में संकलित किया है। [5]

कुंडलियों का विषय सामाजिक जीवन आर्थिक विषसमता, भाषा के प्रति जनवादी दृष्टिकोंण एवं ऋतु तथा प्रकृति के माध्यम से जर्जर अवस्था के दयनीय किन्तु कर्मठ चित्र है। कुंडलियो के रचनाकार वीरेश्वर कहानीकार के साथ एक बड़े कवि के रूप में सामने आते हैं।

' भीखू की कुंडलियाँ ' वीरेश्वर की अमर काव्यकृति है। कुंडलियाँ छंद के माध्यम से गिरधर कविराज नीति कथनी के लिये प्रशंसित हो चुके हैं। तुलसी ने कुंडलिया रामायण की रचना इसी लोककंठहार छंद में किया है। चंदकवि ने बिहारी सतसई पर कुंडलियों छंदो की रचना की है। बाबू वीरेश्वर सिंह ने आधुनिक कविता में भीखू को जनसेवक के रूप में प्रस्तुत कर जिन कुंडलियों की रचना की है वे यर्थाथ मूलक जीवन की जीवन गाथा है। कवि ने प्रकृति को सर्वथा एक नये दृष्टिकोंण से देखा है। [6]

"भीखू" एक ग्रामीण पात्र है, उसके पास चिलम और मेहनत के अलावा कुछ नही है। प्रेमचन्द्र के होरी पात्र के भाँति वीरेश्वर का 'भीखू' समय के थपेड़ों की चोट सहता हुआ, ग्राम्य संस्कारों को बचाते हुये वास्तविक जीवन को जीता है। न वह पलायन करता है और न ही स्वाभिमान को गिरवी रखता है । 'भीखू' सरल, स्पष्ट एवं आंचलिक सौन्दर्य को लेकर गरीबी की रेखा के नीचे जीने वाले शोषित वर्ग का प्रतिनिधि चरित्र है। [7]

कवि ने 27 कुंडलियों के माध्यम से कुल 162 पक्तियों में 'भीखू' चरित्र के माध्यम से शोषित वर्ग की पीड़ाओं को जिन गहरी संवेदना के साथ व्यक्त किया है वह हिन्दी प्रगतिशील कविता की अत्यन्त विशिष्ट उपलब्धि है।

कुंडलियों के विवरण इस प्रकार है–

ग्रीष्म विषयक	3
वर्षा विषयक	3
शिशिर विषयक	3
संगम स्नान विषयक	3
सूर्योदय विषयक	3
भाषा विषयक	4
प्रेम विषयक	2
रूपदर्शन विषयक	3

'भीखू की कुंडलियों ' में उपर्युक्त विषयों को लेकर कवि ने जिसे क्रान्ति चिंतन का प्रतिपादन कराया है वह हिन्दी साहित्य के लिये अपूर्ण निधि है। डा0 शशि प्रभा दीक्षित के शब्दों में "वीरेश्वर की दृष्टि प्रेमचन्द्र से अधिक विकसित, अधिक संवेदनशील और अधिक गहरे आंचलिक सौन्दर्य बोध को उजागर करती है। वीरेश्वर का भीखू प्रेमचन्द्र के गोदान से भी आगे निकल कर जिस दान को सम्पन्न कराता है वह 'गोदान' का अगला 'प्राणदान' है। हिन्दी प्रगतिशील कविता में प्रतीकात्मक काव्यों की दृष्टि से भीखू को सर्वोच्च महत्व दिया जाना चाहिये।" [8]

२- गोरा बादल की कुंडलियाँ -

गोरा बादल की कुंडलियाँ ' वीरेश्वर की एक दूसरी अप्रकाशित लघु काव्य कृति है। [9]

कुल 7 कुंडलियाँ है काव्य का आकार मात्र 42 पंक्तियों मे है। कवि ने भीखू की कुडंलियो के माध्यम से जहाँ सामाजिक क्रान्ति का बिगुल बजाया है

वही गोरा बादल की कुंडलियों के माध्यम से राजनीति पर करारे व्यंग किये हैं । बढे हुये टैक्स, मँहगाई, स्वराज मे कर्महीनता और नेताओं के झूठे आश्वासनों पर व्यंग करते हुये राजनीतिक विद्रूपता पर कड़ा प्रहार किया है। कवि वीरेश्वर के शब्दों में, –

" बढे टैक्स असुवा मत ढारौ
महगी भये न रोओ
सारी रात स्वराज सुहानी
तान चदरिया सोओ।
तान चदरिया सोओ, यारो
जीवन अगम अपारा।
मूरख मन को धीर न धारै
नेता है कर्तारा।।
गोरा बादल खड़े पुकारै,
हम न कहें सुजान।
आँखिन को तौ करो गवाही
हृदय करौ परमान ।। [10]

नेताओं की पंचवर्षीय योजनाओं और झूंठे आश्वासनों पर वोट मांगने की तथा सेवकाई पर व्यंग करते हुये वीरेश्वर का व्यंगकार सजग हो उठता है–

" एक बार पुनि वोट दीजिये
राम रहीम दोहाई
चूक पुरानी छमिये जनगन
सके न करि सेवकाई
सके न करि सेवकाई, यारौ
राज काज अति भारे

पूत, दमाद, भतीजा, भाई

सबको पेट संभारे।

पुन वोट जो दिगि दीजिये

सेवा करै बनाय

साथी, विधि सों देवता

पांच साल फिर खाँय ।[11]

३- गोरा बादल बरवै

'गोरा बादल' बरवै 'में मात्र 20 बरवै छंद है कवि ने इन बरवै छंदो मे गोरा बादल के माध्यम से स्वतंत्रता का जयघोष एंव क्रान्ति का उदघोष किया है–

" जय रजनी, जय दिनकर अरूण उमंग ।

लाल ध्वजा नभ फहरत तरूण तरंग।[12]

गोरा बादल, को सर्वत्र क्रान्ति का प्रतीक लाल ध्वज, दिखाई पड़ता है–

" गोरा बादल देखेउ सब जगझार।

जहाँ न लाल पताका ,तहँ अंधियार।।[13]

४- गोरा बादल की कहनी

यह रचना सामायिक राजनीति को लेकर व्यंग शैली में ' सिया बल राम चन्द्र की जै ' के साथ चलती है–

" कर कमलन मे तानिकै

अंग्रेजी बन्दूक

नर से नारायन कहै

लात खाये मत हूँक ।

लात खाये मत हूँक

सुमिर नित हरि की माया ,

जब जब होय स्वराज

अवतरै खद्दर काया।।

लीलाधर लीला करैं

जन पावै उद्धार

चिता जरै बंगाल में,

दिल्ली में उजियार ।।[14]

सिया बल राम चन्द्र की जै।।

'गोरा बादल' की कहनी 10.11.46 की रचना है। आजादी के पूर्व की यह रचना ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

५- जयगाँधी

स्वधीन भारत में गाँधी का स्तवन करते हुये कांग्रेस के योगदान तथा गाँधी,जवाहर के त्याग और बलिदान से मिली हुयी आजादी का स्वागत किया गया है। कवि ने ' जयगाँधी' में गाँधी को अवतार के रूप में प्रतिष्ठित किया है–

" जय कहो, भारत की जहाँ

अवतार गाँधी ने लिया

थी डूबती नौका हमारी

पार गाँधी ने किया।"[15]

कवि ने गाँधी के साथ किसानों और मजदूरों का भी स्तवन किया है जो देश के स्वाभिमान हैं–

" जय जय किसान मजूर की

अभिमान हैं जो देश के

जय जय श्रमिक जन शूर की

प्रिय प्राण हैं कांग्रेस के ।"[16]

कवि ने हरिजनो को अपना अंग बताते हुये, उनसे अभिन्न्ता स्थापित की है—

" फिर जय कहो सब हरिजनों की
जो हमारे अंग है
सदियो रहे जो धर्म धीरज से
हमारे संग हैं।" [17]

कवि ने स्वाधीनता की असली शक्ति जनता पर केन्द्रित की है। जनता—जनार्दन ही क्रान्ति और शांति का संदेश देती रही है—

" हाँ, जय कहो जनता जनार्दन की
अमर जो हैं सदा
जो क्रान्ति करके शांति के
सन्मोद पाती है सदा ।" [18]

' जय गाँधी' में कवि ने बापू की प्रिय गोमाता तथा खेतो पर काम करने वाले वृषभ (बैलो) की वन्दना की है —

" जय हो गऊ की,
थे जिसे बापू सदा सम्मानते
घृत—दूध— माँखन युत
विवुध माता सहस है जानते
जय हो वृषभ वर की कि
जिनसे खेत में हल चल रहे
जय हो हलों की नोक जिनके
है सुवर्ण उगल रहे।" [19]

कविवर वीरेश्वर सिंह ने 'गाँधी' के प्रति अपनी अपरिमत आस्था व्यक्त की है—

" जिसके बूढ़े हाथो ने हठ
माता की जंजीरे तोड़ी
जिसकी सीधी लकुटी ने
टेढ़ी गावों की गति विधि मोड़ी ।
वह नग्न देह
जिसने महलों को छोड़
बनाया झोपड़ियो को स्वस्ति गेह
जिसने अगस्त्य बन शोषण के
सागर को सोखा रहित नेह।
जिसके चरणों पर हिंसक की
हिंसा नत हो सलज्ज रोयी
जिसने अपने तन के लोहू से
भारत की देहली धोयी
उस बापू को शत–शत प्रणाम।
जो जनहित दिजनो से जूझा
मर कर भी थापा राम नाम।" [20]

६- बाल कवितायें

वीरेश्वर सिंह ने बालकों और किशोरों के लिये जो कवितायें लिखी हैं, उनमें स्वतंन्त्रता और जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा है। ऐसी रचनाओं में 'सवेरा' ,गजराज,गदहा ,'खाट पर लेटे लेटे','तकिया', 'गाँधी जयन्ती' , पु.त्र के प्रश्न 'बच्चों से',धूप, दियासलाई, जुगनू ,कम्बल, फूल से आदि रचनायें प्रमुख है इनमें से कुछ रचनाये बालक (पटना) बाल भारती (दिल्ली) आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हैं किन्तु उनके अधिकांश बालगीत अभीं तक अप्रकाशित है। इन कविताओं

में बालकों के नये संस्कार देने का प्रयत्न किया है। बालकों में राष्ट्र–प्रेम जाग्रत करने का मूल उद्देश्य ही इन कविताओ की मूल शक्ति है।[21]

"सवेरा हुआ है,सवेरा हुआ है

"अहा फिर से सूरज का फेरा हुआ है,

गया देश को छोड़कर के अँधेरा

नया सा छा गया सब जगह है उजेरा"।[22]

बालकों में नया ओज–तेज भरने का कवि का प्रयत्न प्रंशसनीय है। भारतीय संस्कारों को उत्पन्न करना इन कविताओं का लक्ष्य है –

" उठो, उठ रहा सूर्य दर्शन करो तुम

नया तेज तन और मन में भरो तुम "।[23]

युवा कवियों को प्रेरणा देने में जो कार्य दिनकर , सोहन लाल द्विवेदी आदि कवि कर रहे थे, बालकों में वैसे ही राष्ट्रीय जागरण का कार्य वीरेश्वर की बाल कविताओं ने किया।

वीरेश्वर सिंह ने बालकों और किशोरों के लिये जो कवितायें लिखी हैं उनमें स्वंतत्रता और जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा जगायी है। ऐसी रचनाओं में 'सवेरा', 'गजराज', 'गदहा', 'खाट पर लेटे हुये' 'तकिया', 'गांधी जयंती ,पुत्र के प्रश्न', बच्चो से' ,'धूप', 'दियासलाई', 'कम्बल', 'जुगनू', 'फूल से' आदि रचनायें प्रमुख हैं। इनमे से कुछ रचनायें 'बालक' (पटना) आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हैं किन्तु उनके बालगीत अधिकांश रूप से अभी तक अप्रकाशित हैं। बाल साहित्यकार के रूप में उनका मूल्यांकन अभी तक नही हो सका था।[24]

उनके बालगीतों का अध्ययन करने से पता चलता है कि उनके बालगीत सहज स्वाभाविक मनौवैज्ञानिक होकर जीवन के प्रति सजगता, समयबोध, राष्ट्रबोध उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

'सवेरा' हुआ कविता जो पटना से निकलने वाले 'बालक' में प्रकाशित हुयी थी जिसका रचनाकाल 68 है उसमें कवि ने एक ओर देश से अँधेरे के भाग जाने का वर्णन किया है जिसमें पराधीनता के दिन बीत जाने का वर्णन है। कवि स्वतंत्रता को नये सूरज से विम्बित करता है –

' सबेरा हुआ है, सबेरा हुआ है
अहां , फिर से सूरज का फेरा हुआ है।
गया देश को छोड़ करके अधेरा ।
नया छा गया सब तरह है उजेरा।। [25]

इतना ही नहीं कवि आलस्य में पड़े हुये बच्चों को जगने और सुनहरे समय को न खोने के लिये सतर्क करता है। उठकर, सूर्य के दर्शन करने का भी संदेश है। यह संदेश भारतीय बालको में भारतीय संस्कृति के भावों को जगाता है। सूर्योदय पर भगवान सूर्य का दर्शन मंगलकारी तेज और शक्ति को प्रदान करने वाला माना जाता है। [26]

कवि के शब्दों में–

" अरे, क्या अभी तक पड़े सो रहे हो।
सुनहरा समय क्यों भला खो रहे हो।।
उठो, उठ रहा सूर्य, दर्शन करो तुम।
नया तेज तन और मन में भरो तुम।।" [27]

'प्रभात' सृष्टिकर्ता का एक बड़ा उपहार है। विधाता मानो एक नया दिन गढ देता है, और उर्जावान होने के लिये नयी प्राणदायक हवा चलने लगती है। पूर्व दिशा में नयी लालिमा ढलने लगती है। नये दिन को सृष्टिकर्ता की एक नयी सृष्टि एक नयी अरूणिमा की रचना कह कर कवि ने एक श्रेष्ठ कल्पना की है–

" उठो, छोड़ आलस, जगत उठ पड़ा है।

विधाता नया एक दिन गढ़ रहा है।।
नयी प्राणदायक हवा चल रही है।
नयी लालिमा पूर्व में ढल रही है।।'' [28]

पूर्व में नयी लालिमा ढलती रही है कहकर कवि ने दोहरा संकेत किया है। पूर्व दिशा की ओर सूर्योदय का होना तथा 'पूर्व' में भारत जैसे राष्ट्र में एक नया अरूणोदय का होना। स्वाधीन चेतना का विकास। बिना किसी अलंकार के चमत्कार कवि ने अभिव्यक्ति में जिस कौशल का प्रर्दशन किया है वह अत्यन्त सहज और नैसर्गिक है।[29]

कवि सवेरे के साथ ही बालको से तन को कंचन बनाने का संदेश देता है और जागरण के नये पाठ का भी प्रातः काल उठ कर पढ़ने का भी संस्कार देना कवि का अभीष्ठ है साथ ही वह बालको को राष्ट्रीय जागरण से भी परिचित कराना चाहता है।

'' उठो नींद को छोड़ आगे बढ़ो तुम
उठो, उठ के कंचन से तन को गढो़ तुम
उठो जागरण के नये पाठ पढ़ लो
उठ कर नये कर्म जीवन को कढ़ लो।''[30]

वीरेश्वर जंगी ताल व भैरवी राग के कवि है–

कवि के अनुसार यह समय बालकों का है जो प्रातः काल उठते हैं उनकी जय श्री प्राप्त होती है। वह भारत के वीरों को जगाना चाहता है क्योंकि दुनिया जग गयी है। कवि का यह कथन महत्वपूर्ण है कि अपनी बाजी काल से लगी हुयी है या तो काल बाजी मार ले जाये अथवा काल से जीतकर हम बाजी जीत लें। कवि ने बड़े ही सहज ढंग से बालकों को कालमयी होने का उल्लेख किया है–

'' उठो, बालकों, यह तुम्हारा समय है,

उठो, इस समय जो उठे उसकी जय है।।

उठो, वीर भारत के दुनिया जगी है।

उठो, काल से अपनी बाजी लगी है।।'' [31]

कवि मूल्यों को गढना चाहता है। बालकों और किशोरों को कर्मपथ और धर्मरथ पर चढकर यात्रा करने का संदेश देता है–

'' न खोओ समय कर्म पथ पर बढ़ो तुम ।

न सोओ , अभय धर्म पथ पर चढ़ो तुम ।।

उठो, सब जगह छा गया उजेरा।

हुआ है नया फिर से सूरज का फेरा ।।'' [32]

''सवेरा नामक यह प्रेरणादायी कविता की रचना कवि ने बांदा में की। रचना की तिथि 13. 12.1968 है। स्वतंत्रा के पश्चात कवि ने स्वधीन देश के बालकों को सूर्योदय पर जगने, सूर्य का दर्शन करने, सूर्य से तन को स्फूर्तिवान बनाने तथा कर्मपथ पर अग्रसर होने का संदेश दिया है।''[33]

गजराज' नामक कविता में कवि ने महाराज गजराज का स्वभाविक एवं यर्थाथ मूलक वर्णन किया है। उनके बड़प्पन का एक चित्र देखिये–

'' जानवरों के महाराज गजराज खड़े हैं

नाक बड़ी है, पेट बड़ा है, आप बड़े हैं। '' [34]

'गजराज' की खुराक भारी है, लीद भी भारी करते हैं। कान से काम नही हैं केवल बंधे झूमा करते हैं–

'' है भारी खुराक , लीद भारी करते हैं।

नही कान से काम, बंधे झूमा करते हैं।'' [35]

हाँथी के दांत दिखाने के और, खाने के और होते हैं। विशालकाय, भूधराकार काले काले हाँथी जो सूँड़ हिलाते रहते हैं और कान से पंखा करते

रहते हैं–

" खड़े भूधराकार आप है काले–काले

दिखलाने के लिये दांत दो बड़े निकाले

हिला रहे है सूँड कान से पंखा करते

बिना चले भी आप जंगल का मन है हरते " [36]

हाँथियों की सवारी राजा महाराजाओं के द्वारा की जाती थी। उनकी कीमत भी काफी होती थी और उन्हे सिद्ध माना जाता है–

" राजाओं की पुस्तैनी है आप सवारी।

बड़े मोल के हैं गजराज सिंह संसारी ।। [37]

हाँथी जैसे विशाल जीव के लिये 'अंकुश ही कार्य करता है, नियन्त्रण में रखने के लिये –

"है चौदहे किन्तु सादर पूजे जाते हैं ।

अंकुश से ही मगर आप वश में आते हैं" ।[38]

' गदहा' जैसे विषय पर वीरेश्वर साधिकार कलम उठाते हैं और उसे विश्व स्वाधीनता का प्रतीक बना देते हैं वे श्रम के निष्काम कर्म के प्रतीक हैं–

" आप निष्काम रेंक भरते हैं। स्वर से संसार शोक हरते हैं

लाद ढोते हैं, घास खाते हैं। करके श्रमदान यश कमाते हैं।" [39]

गदहे के दांत काटने वाले होते हैं किन्तु इनके दातों को हिंसा का कोई पाप नही लगता–

"दाँत है काटते पर आप नही । करते हिंसा का कोई पाप नही।

धोबी के लिये गधे बड़े काम के हैं शेष दुनिया के लिये फालतू है–

" एक धोबी के लिये पालतू ये हैं।

शेष दुनिया के लिये फालतू ये हैं।। [40]

उनको श्रमिकों की कोटि में रखकर कवि ने उनके द्वारा श्रमदान करके

यशस्वी होने का उल्लेख किया है–

" लाद ढोते हैं, घास खाते हैं। करके श्रमदान यश कमाते हैं। [41]

गधों की प्रवृत्ति मौसम से भिन्न है। जेठ बैशाख में ये मोटे हो जाते हैं और ठेठ बरसात में सुखा जाते हैं–

" जेठ– बैशाख में मोटाते हैं
ठेठ बरसात में सुखाते हैं।" [42]

गधे प्रायः खूटे पर नही बांधे जाते। उन्हे स्वच्छंद छोड़ दिया जाता है। कवि ने गधों को विश्व स्वाधीनता का प्रतीक माना है–

" बंध के खूँटे पर ये नही रहते ।
विश्व स्वाधीन रेंक कर चरते ।। [43]

' खाट पर लेटे लेटे' कविता के माध्यम से कवि ने कुछ मनोहारी भाव कल्पना से व्यक्त किया है। उदाहरण के लिये उजले श्याम बादलों में कवि ने अपने खोये हुये रूमाल की कल्पना की है–

" देखो, ये उजले, श्याम बादल कैसे लगते हैं
ज्यों मेरे खोये रूमाल सब उड़े–उड़े फिरते हैं।" [44]

सांयकालीन आसमान में छिटकी हुयी लाली को देखकर कवि की कल्पना जगती है और उसे लगत है जैसे टेबिल पर लाल स्याही ढरकायी हो–

" हुयी शाम अब देखो तो यह लाली कैसी छाई ।
जैसे टेबिल पर मैने थी लाल इंक ढरकायी।। " [45]

रात मे आसमान का खुलापन ऐसा प्रतीत होता है जैसे गहनों का मखमली केस खुला पड़ा हो–

" रात हुयी है आसमान अब लगता कितना प्यारा ।
गहनो का ज्यों केस मखमली खुला पड़ा हो सारा ।। [46]

चमकते हुये आसमान के तारों पर कवि को लगता है जैसे कोहनूर हीरे पर लाल बाल हों–

" खिले चमकते कितने अच्छे लगते हैं ये तारे

जमा हुये जो कोहनूर के लाल–बाल`सब प्यारे"। [47]

आकाश का चन्द्रमा गले में हसुली की तरह गुदगुदी पैदा करता है

" आज सुघड़ सोने की हंसुली सा सुन्दर लगता है।

इसीलिये क्या चाँद गले में यों गुदगुद करता है "। [48]

कवि को रात्रि में नींद नही आ रही है और वह जादुई कल्पनाओं में सोता जा रहा है–

" आज न जाने क्यों भाई हमको न नींद आती है।

कभी कभी यह रात ख्वाबों में आ जाती है "।[49]

तकिया जैसे विषय पर वीरेश्वर लिखते हैं और उसमें प्रेम, रोमांच , सुख,दुख की भावनायें समेट लेते हैं। तकिया गुलगुली, उजली, धुली, पूसी की तरह लगती है। दिन भर की आकुलता और रात्रियों की व्याकुलता की यह सुखद सहेली बन जाती है–

" उजली धुली, गुलगुली छोटी पूसी सी लगती है।

सपने में चुलबुली कान में म्याँऊ कर उठती है।". [50]

तकिया मे कितनी बार कवि ने आँचा मिचौनी खेली । आकुल दिन और ब्याकुल रातों की सुखद सहेली बन जाती है–

" आकुल दिन, व्याकुल रातों की यह सुखद सहेली।

मन ने इसके संग कितनी ही आँख मिचौली खेली "। [51]

घर के लोग ही जब दुख की कथा नही सुनते उन एंकात क्षणों में तकिया ही मन की बातों को सुनती है–

"जब घर के ही लोग न दुख की कथा हमारी सुनते
तब प्यारी तकिया से ही मन की बातें कहते"। [52]

'गांधी जयन्ती ' पर बालकों को शिक्षा देने के लिये कवि ने गांधी जयन्ती में प्रेम के वे गीत गाने का संदेश दिया है। जाति भेद को मिटाने, हरिजनों को गले लगाने एवं स्वदेशी वृत लेकर चलने का संदेश दिया है। कवि वीरेश्वर के शब्दों में –

" चलो आज गांधी जयन्ती मनावें
चलो आज मिल प्रेम के गीत गावें
जिला जो गया है हमे प्राण देकर
चलो उसको श्रद्धा सुमन हम चढ़ावें
मुसलमान हो पारसी या ईसाई
चलो सबसे कहदे कि हो अपने भाई
चलो हरिजनों को गले से लगा लें।" [53]

'पुत्र के प्रश्न' कविता में कवि ने माँ और पुत्र के संवाद से युगीन स्वरूप पर व्यंग किया है । उनकी अनेक जिज्ञासायें हैं। माँ उनका समुचित उत्तर देती हुयी, जिज्ञासाओं का समाधान करती है

" माँ क्या है स्वराज जब अपने पर अपने ही राज करें ?
ना बेटा स्वराज है जब जन की सेवा सिरताज करें।
माँ क्या है श्रमदान कि जिसमे शूट पहन अफसर जाते ?
मजदूरों का मन बेटा मालिक यों ही बहलाते।
माँ क्यों घास लेट खाने में तू करती कृपनाई ?
बेटा आग लगी है इसमें ऐसी है अब महगाई।
माँ क्या है उद्घाटन नेता आये दिन करते हैं ?

जलसा है बेटा, जिसको कर अखबारों में छपते हैं।

माँ नेता चुनाव में वोटर को राजा कहते है ?

एक मसखरी है बेटा वे करते हैं, हम सहते हैं।

माँ बैलों को क्यों नेता लोगो ने चिन्ह बनाया है ?

बेटा चरने को स्वदेह यह सबसे उत्तम काया है। [54]

स्वराज, श्रमदान, घासलेट, उद्घाटन, चुनाव, चुनाव चिन्ह जैसे प्रश्नों को उठाकर माँ के द्वारा समुचित उत्तर दिलाकर कवि ने जिस व्यँग्य का प्रयोग किया है वह मार्मिक एवं चुटीला है। अंत में कवि ने बेटे के द्वारा गांधी पर प्रश्न किया है और माँ ने उन्हे नवयुग का लेखा बताया है–

" माँ बापू थे कौन कभी क्या तुमने था उनको देखा ?

बेटा, वे निर्धन के धन थे, नवयुग है उनका लेखा। [55]

माँ

गोर्की की माँ की भांति हिन्दी कविता में वीरेश्वर ने 'माँ' काव्य कृति में माँ के प्रति अपरमित भक्ति भावना, आस्था और प्रगाढ स्नेह का परिचय दिया है। माँ की ही काव्य प्रेरणा का स्रोत स्वीकार किया है। स्मृति चित्रण शैली के माध्यम से कवि ने शैशव की बाल क्रीडायें बगिया से आम चुराकर खाने की घटना, तितलियों के पीछे दौड़ने, पंतग उड़ाने, गोली और गुलेल के खेल खेलने का उल्लेख किया है। माँ के स्नेह सुरमित आंचल में बाल स्मृतियों का जगना, माँ की गोद में बैठकर आकाश के तारो की गणना, माँ की गोद में बैठकर बरसात की रात्रियों मे दीवार के गिरने और बच्चे के गोद में चिपकने के चित्र अत्यन्त सजीव हो उठे हैं। [56]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'बार बार आती मुझको मधुर याद बचपन तेरी' जैसी कृति से प्रेरित वीरेश्वर की कृति 'माँ' वात्सल्य आपूरित चित्रों को सजीव मनौवैज्ञानिक भाव मालायें हैं। वीरेश्वर की माँ दाल बीनती है। गृहकार्य में व्यस्त

रहती है और इसी कामकाजी व्यस्तता के बीच वात्सल्य के जिन बिम्बों की सृष्टि कवि ने की वे बेजोड़ है। उदाहरणार्थ–

" दाल बीनती हो तुम झुककर
फिर जब उकरू बैठ, साथ थाली घुटनों पर
मै बाहर से शोर मचाता दौड़ा आऊँ
अम्मा कहते हुये झूल कन्धे पर जाऊँ "। 57

७– स्फुट कविताएँ–

वीरेश्वर के काव्य का उन्मेष 1946 ई0 के आसपास हुआ– कवि ने अपनी कविताओं के नीचे रचनाकाल भी अंकित किया है। ' पानी बरसा झम्मा झम' कविता 4 अक्टूबर 46 को लिखी गयी थी। स्वतन्त्रता दिवस के 10 माह पूर्व एक ओर कवि के मन में भारतीय स्वतन्त्रता का विश्वास है, दूसरी ओर अंग्रेजी सत्ता के प्रति तीव्र विरोध का स्वर भी।

" रूस नीति का पेलै डंड
उठे हिन्द जनगन वरकंड
इन्कलाब मारै पुकार
रक्सी फिरंगी की सुधनार ।। " [58]

अंग्रेजी दासता के युग भारत के लोगो द्वारा फारसी पढकर बेकारी के शिकार रहने वाले लोगो का भी उल्लेख कवि वीरेश्वर ने किया–

" पढै फारसी बेचै तेल
हिन्दुस्तानी है बेमेल।" [59]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भारत की दुर्दशा का वर्णन किया है–

" पढै फारसी बेचै तेल
या देखो कुदरत के खेल। " [60]

कवि वीरेश्वर का यह कथन है कि लंदन के तीन बाजीगर दिल्ली में

बैठकर बीन बजाते हैं और इंकलाब के नांग नाथना चाहते हैं–

" लंदन के बाजीगर तीन

दिल्ली बैठ बजावै बीन

नाथै इंकलाब का नाग

मोहैं रच कागज के बाण ।" [61]

वीरेश्वर की कवितायें संघर्ष के लिये प्रेरित करती हैं। ताल ठोकनें के लिये निर्भीक होकर लहरों में कूद पड़ने के लिये–

16 अगस्त 48 आजादी के एक वर्ष बाद कवि ने 'तैराक' नामक कविता में इस प्रकार की ललकार की है–

" बम शंकर, हर गंगे, हर–हर

कूद पड़ा तैराक अकेला,

कूद पड़ा माँ– का –अलबेला

कूद पड़ा लहरों– का –खेला,

ताल ठोंक, निर्भय, जय–जय कर

बम शंकर, हर गंगे, हर–हर।।

कौन साथ उस पार चलेगा

तूफानो से कौन लड़ेगा

कौन चोट लहरों से लेगा

रंग उमंग भरे नर नार बाहर

बम शंकर, हर गंगे, हर–हर ।।" [62]

'चौराहे की लालटेन' नामक कविता 11 अप्रैल 46 को लिखी गयी थी। 'लालटेन' जो चुंगी पर टंगी हुयी है, कवि के जीवन की संयोगिनी है–

" है चौराहे पर खड़ी बिछोहिन सी

चुंगी की लालटेन

मेरी जीवन की एक संयोगिन

है चुंगी की लालटेन ।।'' [63]

यह चुंगी की लालटेन नगर पालिका के अध्यक्ष की कोठी में इसका प्राणतेल जलता है। चारो ओर चोरों की नगरी में यह अबला है।

'' नगर पिता की कोठी में जलता इसका प्राण तेल

चोरों की नगरी में अबला रोती चुंगी की लालटेन।। [64]

यह लालटेन जो एक वोट का भी अधिकार नही रखती । पाँच सालों में यह हँस नही पाती–

'' कानून इसे भी एक वोट

दे–देता अधिकार कहीं,

तो पाँच साल में एक रात की

हंस लेती यह लालटेन ।।'' [65]

यह लालटेन हसीना बाई की प्रेमगली में मुसकाती है और नगर पिता के छज्जे की राह दिखाती है किन्तु यहाँ चौराहे पर गूंगी जनता जो अपने अधिकारों की पुकार नही कर पाती, उसी जनता का प्रतिनिधित्व करती है इस लालटेन को सरकारी तेल नही मिलता –

'' हाँ, प्रेम गली में एक हसीना

बाई के मुसकाती है

जो नगर पिता जी के छज्जे

की राह सप्रेम दिखाती है

पर चौराहे पर गूंगी जनता

की बनी पुकार खड़ी

कैसे सरकारी तेल भला

पा सकती है वह लालटेन। '' [66]

यह लालटेन तेल के बिना बुझने की है। कवि जनता को जगाकर इस लालटेन में प्राण का तेल देने की प्रेरणा देता है–

" होवे अंधो का राज जहाँ
क्या वहाँ भूल उजियारी का
हो जहाँ चोर सरदार वहां
हो क्यों न राज अधियांरी का
जनता की लालटेन की लौ
बोलो फिर कैसे जल पावे
कैसे जीवन की ज्योति सजग
इस चौराहे पर मुसकावे। " [67]

9 जुलाई 1946 को लिखी गयी 'चींटी' नामक कविता में कवि ने 'चींटी' के प्रतीक द्वारा निर्बल कही जाने वाली जातियों के संगठन, अनुशासन और मेहनतकस चरित्र को उजागर किया है। चीटियां जो कतार की कतार में चलती हैं जो सहसदल सवार कर चल पड़ती हैं गन्तब्य की ओर–

" कतार की कतार, धुआंधार, चीटियां अपार
चल पड़ी चपल, उमड़, सबल, सहसदल सवार
एक,एक,एक
व, असंख्य, और अशेष
एक लक्ष्य जा रही अदम्य राह चीर
एक रंग
एक ढंग
एक संघ
राजा है कोई, न कोई है रंक

चीटी की दुनिया में चींटी निशंक।'' [68]

चींटी अपने साथ दल सजाकर चलती है जो विश्व के अहंकार और काल को रौंदती हुई चलती है। चीटियों के माध्यम से कवि ने निर्बल जनता, मजदूर, श्रमजीवियों की अदम्य शक्ति संगठन का चित्र प्रस्तुत किया है–

" चींटी मिल आज चली
चंडी दल साथ चली
रौंद चला विश्व अंध , रौंध चला काल
और बढ़ी , दौड़ बढ़ी , चीटियां कराल। ''[69]

चींटियों के दल को रोकने की शक्ति किसी में नहीं है।एक–एक चींटीं में एक–एक गज का बल है। क्रान्ति चेतना को श्रम जीवी संगठनों की शक्ति को रोकना पूजींपतियों के सामर्थ्य का नही है। कवि वीरेश्वर के शब्दो में–

''रोकेगा कौन भला इनका दल
एक–एक चींटीं में एक–एक गज का बल।''[70]

चींटियों न तो भाग्यवादी है और न ही विधाता के भरोसे हैं। वे धरणों को छेदकर भूधर को भेदकर अपने लक्ष्य का वरण करती हैं–

" चीटियों को कौन त्रास
एक भूख और प्यास
चीटी को भूख लगी विधना की कौन आस
धरणों को छेद चली
भूधर को भेद चली
सारा संसार ।।
पेड़ पल्लव प्रसार
चाट जंगल कछार
बढ़ी चीटियां अपार ।। " [71]

चींटी जंग का प्रतीक हैं, जंग ही उनका राम अभिराम है, चीटियों के डर से दिग्गज भी चिध्घाड़ने लगते हैं, केहरी भी दहाड़ने लगते हैं। चीटियां सभी कुछ चाटती जाती हैं–

'' दिग्गज चिघांड़ रहे

केहरी दहाड़ रहे

चीटी ने चाट लिया हाड़ हाड़ हाड़ रहे ।। [72]

कवि ने जनता की अपार शक्ति पर श्रमजीवी चेतना के लक्ष्य भेदी दृष्टिकोंण पर जैसी निष्ठा व्यक्त की है वह एक उच्च कोटि की कविता की शक्ति से सम्पन्न है।

श्रमजीवी चेतना का मेहनतकश किसान, मजदूर, जवान और उसके बहते पसीने का मूल्य कवि जानता है। 'बहता है पसीना' नामक कविता की रचना 17 अक्टूबर 46 को कवि ने लिखी थी–

'' बहता है पसीना

मेहनत का है जीना

भूखी है मजूरी

भूखी है किसानी

भूखा है बुढ़ापा

भूखी है जवानी।'' [73]

मेहनत से बंजर को हरा भरा करने वाले, लोहे को मोड़ देने वाले, आदम का रक्त लेकर अपनी हडिडयों से पत्थर को तोड़ने का काम –

'' बंजर को कर हर ।

लोहे को मोड़ दे

आदम के हाड़ से

पत्थर को तोड़ दे। [74]

कवि का भरोसा अपने हाथों का है, वह विधि के विधान को नही आदमी के हाथो को करतार की संज्ञा देता है–

" विधि का विधान क्या
संसार कौन है
दो हाथ हमारे
करतार कौन है ? [75]

दुनिया के मजदूरों और मेहनतकश को एकता के सूत्र में बांधते हैं, वीरेश्वर – क्योंकि पेट एक है, दुख राग एक है, भूखों की भूख में आग भी एक है –

"सब पेट एक है
दुख राग एक है
भूखों की भूख में
सब आग एक है "। [76]

श्रम का अवमूल्य नही चाहता कवि। कबाड़ी के हाथों इस गगनकाया का मूल्य बहुत कम रह गया है। वह इसे सस्ते दामों में बेंचकर मेहनत करने वाले शोषण का पक्षधर नही है मजदूरों की हड्डियों को लकड़ी की तौल में नही तौलना चाहता।

" कंचन के कबाड़ी
कायर कर मोल है
हडडी मजदूर की
लकड़ी की तौल है। [77]

इस प्रकार वीरेश्वर का काव्य साहित्य बाल काव्य, क्रान्तिकारी काव्य, प्रगतिशील काव्य, गांधीवादी काव्य आदि वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

कथा साहित्य

वीरेश्वर मूलतः एक कथाकार है, एक ऐसे कथाकार जिनकी कथासृष्टि पर कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र भी भाव मुग्ध हैं। उनकी अमर कथा–सृष्टि का प्रकाशित प्रथम पुष्प 'उंगुली का घाव' है। इसका पहली बार प्रकाशन 1945 कलाकुंज 120 छोटी पियरी काशी से यह संकलन ज्योतिष प्रकाश प्रेस से प्रकाशित हुआ। इस संकलन में कुल 14 कहानियां है, कहानियों का क्रम इस प्रकार है–

उँगली का घाव, वह बात, बाँसुरी, माया, मोटर का मूल्य, नीनी, दृष्टि, अन्तराग्नि, परिवर्तन, रेशमी रूमाल, कबूतर, राखी, बोध, काजल।

कथाकार वीरेश्वर ने उँगली के घाव की भूमिका में कहा है–

" हिन्दी के उज्जवल और शक्तिशाली भविष्य में विश्वास रखकर उसके अनन्य और गर्वीले पुजारी की तरह फूलों का यह दोना हिन्दी को भेंट करते हुये मुझे संतोष हो रहा है। मै तो यह मानता हूँ कि हिन्दी में एक कविता , एक कहानी, एक लेख, एक छोटी सी अच्छी सी कोई चीज लिख देने में वही पुण्य फल, वही महत्व है जो गंगा स्नान या एक हजार गायों के पुण्य में है, वही सुख संतोष है जो गरीबों के आँसू पोंछ देने या खददर पहनने ओढ़ने में है। हिन्दी केवल एक भाषा ही नही, एक जाग्रत भारत की आवाज है। यह वह मंत्र है जिसके जप–जाप और प्रताप के नये अवतार होने। मै हिन्दी लिखता हूँ, हिन्दी पढ़ता हूँ, हिन्दी बोलता है। तो मै उतना ही सुधरता हूं, जाग्रत होता हूँ। विस्तृत बनता हूँ। इन कहानियों में हिन्दी संसार के सामने प्रस्तुत करने में मुझे इसलिये संतोष हो रहा है कि मैने इतनी हिन्दी लिखी है हाँ अमर भारत की अमर हिन्दी लिखी है और मेरे जीवन के इतने क्षण निश्चित रूप से धरती के हुये हैं।

"काल प्रवाह में कुछ वर्षो की दूरी तक तो ये कहानियां चलेगी ही और जहाँ तक, जब तक ये तरंगित रहेगी, तब तक हिन्दी साहित्य प्रेमियों के हृदय

बदलेगें ऐसी आशा है। मेरी छोटी सी कृति के लिये इतना काफी होगा। इससे अधिक ईश्वर की कृपा है .....।'' [78] वीरेश्वर सिंह

वस्तुतः इस संकलन की रचनाएँ हिन्दी कथा साहित्य की अमर सृष्टि है। 'उंगली का घाव' प्रतिनिधि कहानी है जिसके नाम पर संकलन का नामक़रण किया गया है। अपने नाम की भांति 'ऊँगली का घाव' मार्मिक मनोवैज्ञानिक सांकेतिक प्रतीकात्मक शिल्प वैशिष्ट को लेकर लिखी गयी कहानी है। अन्य कहानियाँ भी मनोवैज्ञानिक, समाज विज्ञान , प्रेम संवेदना मूल्यों को उद्घाटित करने वाली हिन्दी की मौलिक कहानियाँ है।

अप्रकाशित कहानियाँ

वीरेश्वर की अनेक कहानियाँ अभी तक अप्रकाशित हैं। इन कहानियों में 'यात्रा भंग' , 'शिक्षा मन्दिर', 'प्रेम का अन्त', 'प्रयाग' आदि कहानियाँ हैं।

इन कहानियों के माध्यम से कथाकार ने प्रेमचन्द्र की प्रगति चेतना आर्थिक विषमता से जूझती हुई मानवीय सदाशयैता से कुछ भिन्न मानवीय सांस्कृतिक जीवंत संवेगो का मनोवैज्ञानिक परिष्करण प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द्र जहां यर्थाथ के अर्न्तविरोधों की गहरी पहचान करते हैं वहीं वीरेश्वर जीवन और मनोविज्ञान के बीच उस चीज की रचना करते हैं जो मौन का संदेश देते हैं आचरण की गंध जगाते है और प्रेम और करूणा के उन मूल्यों को उदघाटित करते हैं जिनको स्पर्श करके कला मूर्धन्य हो उठती है। वे बालिदान के, आत्म गौरव के, पुरूषार्थ के सौन्दर्य के चित्रों की सर्जना में अत्यन्त कुशल हैं। प्रेमचन्द्र ने वीरेश्चर की संभावनायें को पहचान लिया था। वे जानते थे कि वीरेश्वर का वीरतापूर्ण यथार्थ का जीवन रस । बौद्विकता और रसज्ञता का ऐसा अनुबंध वीरेश्वर की कहानियों को और ऊँचे उठा देता है। वे कथा लेखन के क्षेत्र में जिन नये मानदंडो को स्थापित करते हैं, उन पर प्रेमचन्द्र भी गर्वित हो उठते हैं।

साहित्य और जीवन के भौतिक प्रश्नों को लेकर चलने के कारण वीरेश्वर की कहानियाँ आधुनिक कला शिल्प में एक नये सौन्दर्य को जगाने में समर्थ हैं। '' [79]

'पतिव्रता' (प्रकाशित) कंजरपुरा की चंपा कंजड़िन को क्रान्तिकारी आंचलिक कथा है। 'चंपा' के बाप ने षोडस वर्षीय असाधारण छवि वाली चंपा का सौदा एक बूढे व्यक्ति से कर दिया किन्तु चम्पा ने विद्रोह करके घर जाने से मना कर दिया और अपने मनचाहे हीरा कंजड़ के साथ दूर खेत में रहने लगी। पुलिस का दरोगा 'चंपा ' के यौवन का शोषण करना चाहता है और इसी क्रम में वह 'चंपा' के चहेते हीरा कंजड़ को चोरी के झूठे आरोप में बंद कर देता है, पर 'चंपा' अपने को दरोगा को समपर्ण नही करती है और हीरा को छुड़ाने के लिये सीधे जज से सम्पर्क करती है, जज उसके रूप को देखकर मुग्ध होता है, उसे बाद में मिलने के लिये कहता है। चंपा वादा करती है और हीरा कंजड़ को निर्दोष होने के कारण आरोप से मुक्त कर दिया जाता है। 'चंपा' अपने वादे को पूरा करने के लिये हीरा के साथ जज के यहाँ जाती है । यह जानकर कि 'चंपा' अपने वचन की पक्की है, चरित्रवान है तथा अपने पति के साथ आई हुयी है। जज चम्पा के चरण छूता है और चंपा हीरा के साथ यह कहती घर वापस जाती है कि तुम्हारे कारण वह बदनाम हुयी। वस्तुतः पतिवृता के रूप में 'चंपा' कंजडिन का चरित्र महान है।

'मातृत्व की टेक' (प्रकाशित)कहानी में सान्याल अपनी पत्नी मालती को तीन बेटियों के बाद परिवार नियोजन महायज्ञ से प्रभावित लूप लगवाने के लिये विवश करता है जबकी मालती एक पुत्र होने की टेक करती है जबकि सान्याल भी पुत्र होने का स्पप्न लिये हुये है और चिंता से ग्रस्त है। चिंता से ग्रस्त पति की मानसिकता को देखकर मालती लूप को हटवा देती है और उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है उसकी मातृत्व की टेक पूरी होती है। नारी मातृत्व की सार्थकता पर कहानी आधारित है।

'शिक्षा मन्दिर' कहानी विद्यार्थियों के प्रवेश को लेकर लिखी गयी है शिक्षा मन्दिरों में प्रवेश के नाम पर डोनेशन फंड, सफल परीक्षार्थियों के स्थान पर परीक्षा मे न बैठने वालो का प्रवेश आदि की समस्याओं को उठाया गया है।

नाट्य साहित्य-

बिजली नाटिका

नाट्य साहित्य के अन्तर्गत वीरेश्वर ने हिन्दी नाट्य विधान को एक नयी अर्थवता एक नया शिल्प विधान प्रदान किया। नारी को केन्द्रित करके लिखी गयी 'बिजली नाटिका' भारतीय नाट्य कला का अप्रतिम उदाहरण भी कही जा सकती है। 'बिजली' नारी की सामाजिक कान्ति की नाटिका है। इसकी नायिका 'बिजली' अपने नामकरण के अनुकूल ही बिजली की भांति शत्रु पर टूटती है। अपने माँ के शील हरण करने वाले को अपना शत्रु मानती है।मदालसा बिजली की माँ है, जो पति के स्नेह से वंचित है। जिसके यौवन का शोषण कर ,कौमार्य भंगकर,उसका पति उसे छोड़ जाता है। वह प्रतिशोध लेना चाहती है। 'बिजली' अपने माँ के प्रतिशोध के लिये अपने को समर्पित करती है। और अजगर माँ के शोषक का अन्त करती है। स्त्री के प्रति पुरुष के शोषणवादी रैवेये की तीव्र भर्त्सना ही नहीं प्रतिशोध की भावना ही नहीं उसे प्राणदंड तक की न्यायिक व्यवस्था की गयी है। स़्त्री पुरुष के अवैध सम्बन्धो पर स्त्री जागरुकता एवं नारी जाग्रति का उपकम हैं।

बिजली नाटिका में तीन अंक है। इस नाटिका का प्रकाशन 1934 ई0 में हुआ। जिसका प्रकाशन साहित्य—मंडल, बाजार, सीताराम दिल्ली के मालिक ऋषभ चरण जैन के द्वारा किया गया। रूपवाणी प्रिन्टिंग हाउस चावड़ी बाजार दिल्ली ने इसके मुद्रण का कार्य किया। नाटिका की भूमिका में ऋषभ चरण ने इस कृति के बारे में लिखते हुये कहा है कि – ठाकुर वीरेश्वर हिन्दी के उन

महान साधकों में से हैं जिनके विकास पर हमारी दृष्टि अत्यन्त सतर्क भाव से लगी हुयी है। उन्होने एक कहानी लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य से स्पर्श किया है। उनकी कहानियाँ कला, वास्तविकता और मौलिकता की दृष्टि से इतनी भव्य, सुन्दर और आन्नदमयी है कि अपने अल्प साहित्य जीवन में ही उन्होने अपनी गिनती हिन्दी के श्रेष्ठ लेखकों में करा ली है। 'बिजली' उनकी एक अविकसित नाट्य कलिका है यह वस्तु जितनी कच्ची है उतनी ही बेजोड़ है। बिजली जैसी रमणी की कल्पना हिन्दी नाट्य साहित्य के लिये एक सर्वथा अपूर्व चीज है। इसके अतिरिक्त माँ का चरित्र, वाक्यों का संगठन तथा चरित्र चित्रण की तीव्रता– नाटक के समस्त गुणों का समावेश भी आप इस रचना में पा सकेगे। हमे विश्वास है कि पाठकगण इस पुस्तक को हृदय से अपनायेगें'' ।[81]

विनीत

ऋषभ चरण जैन

इस नाटिका में जिन पात्रों का उपयोग किया गया है उनमे प्रमुख इस प्रकार हैं–

बिजली	इस नाटक की नायिका
माँ	बिजली की माँ
सुजान सिंह	बिजली का कवि हृदय पति
कराली	यह बिजली की दासी तथा सखी
कैदी	बिजली की माँ का सर्वस नष्ट करने वाला
महाराणा	मेवाणाधिपति
महरानी	
राजकुमार	
सुषमा	बिजली की एक सखी

जीवट गुप्तचर

सामंत, दासियाँ, स्त्री सैनिक तथा सुषमा का पुत्र

कथा वस्तु के संक्षिप्त बिन्दु

प्रथम अंक, प्रथम दृश्य

1 बिजली और उसकी सखी सुषमा का संवाद

2 सुषमा का बिजली से श्रंगार न करने, मेहदी न लगाने के बारे में पूछंना।

3 बिजली की माँ के प्रति स्नेह राग

4 बिजली के नामकरण की सार्थकता और उसके क्रान्ति के बीजों का वर्णन

द्वितीय दृश्य

1 माँ की सन्दूक से बिजली को एक किताब मिलना जिसमें माँ की दिनचर्या, किताब में फूटी चूडियाँ, लाल रक्त से लिखावट

2 बिजली का प्रण करना, अजगर (माँ को सर्वस लूटने वाले) के प्रति प्रतिशोध से भरना

द्वितीय अंक

प्रथम दृश्य

1 सुजान सिंह (कवि ह्रदय) का बिजली से संवाद

2 चांद ना होता तो कैसे जीते ? प्रश्न के उत्तर मे बिज़ली का कथन जीने वाले आग में जीते हैं।

3 बिजली का कथन – अपने बच्चे , अपनी स्त्री के लिये बाग से एक फूल भी लाकर न देना और अपनी सुन्दरी (प्रेयसी) के लिये नक्षत्रों के हार गूंथना कहां की मनुष्यता है ?

4 मै पहाड़ की छाती फोड़कर निकली हूँ, फिर निकलूँगी का उदघोष

द्वितीय दृश्य

1 बिजली और कराली का संवाद

2 बिजली द्वारा स्त्रियों का विशाल संगठन तैयार करना

3 मेवाड़ के गौरव का स्मरण करना

4 सुजान सेनापति का बिजली के अधीन होना

अंक तृतीय

प्रथम दृश्य -

1 मेवाड़पति महराणा और महारानी का संवाद

2 महराणा का गुप्तचर जीवट से युद्ध का हाल पूँछना

3 जीवट का बिजली की प्रंशसा करना और महराणा के घायल होने पर सेना के हतोत्साहित होने की स्थिति में बिजली का भंयकर रूप से युद्धभूमि में उतरना

4 महराणा को चोट पहुँचाने वाले का का सिर बिजली के द्वारा काटकर शिविर के द्वार पर टँगवा देना।

5 महारानी द्वारा बिजली को युगयुग जीने का आशीर्वाद देना

6 महाराणा द्वारा 'बिजली' को राष्ट्र का मुख्य सेनापति बनाना

7 भारत का गौरव और मेवाड़ की स्वतंत्रता का श्रेय बिजली को देना

द्वितीय दृश्य

1 बिजली के शिविर में असाधारण उल्लास का वातावरण

2 बिजली के द्वारा सुजान सेनापति की काव्य रचना पर प्रश्नचिन्ह उठाना और

दायित्व छोड़कर कविता या लेखन की महत्ता पर प्रश्न चिन्ह लगाना

3 बिजली और मदालसा (माँ) का संवाद

4 शत्रु को घर का भेद बताने वाले, माँ का सर्वस्य लूटने वाले कैदी पर तीव्र आक्रमक रूख

5 कैदी द्वारा मदालसा को प्रिये सम्बोधन पर कड़ी आपत्ति

6 बिजली द्वारा कैदी की छाती में तलवार घुसेड़ देना

7 बिजली द्वारा माँ के प्रतिशोध का बदला लेना

8 कैदी की हत्या पर माँ (मदालसा) का दुखी होना

तृतीय दृश्य

1 भयंकर युद्ध के नरमुडों के बीच अपनी सहेली के वैधव्य को देखकर बिजली का दुखी होना और उसके दिल के घावों को भरने के लिये चिंतित होना

2 बिजली का महरानी से देश के बच्चे–बच्चे को वीर भावों से भरने का वचन लेना

3 बिजली का कराली से स्त्रियों के संगठन को न टूटने देने का संकल्प लेना।

4 बिजली का यह कथन कि हर एक अपना प्रथम पुत्र देश के यज्ञार्थ में दान करें ताकि देश अजेय बन जाये

5 बिजली की प्रेरणा से कराली का क्रान्ति के लिये प्रस्तुत होना

6 महराणा का राजकुमार से यह कहना कि यह देश बिजली का है। बिजली बलिदान है जो कभी नही मरता।

राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत यह नाटिका बिजली नायिका के गौरवमयी चरित्र का अमर स्मारक है। पुरूष द्वारा शोषण और अन्याय के विरोध में, माँ के सम्मान की रक्षा के लिये, राष्ट्र के गौरव को अक्षुण्य बनाने के लिये तथा नारी जागरण, नारी संगठन और नारी के स्वाभिमान की रक्षा में लिखा गया यह नाटक नैतिक, राष्ट्रीय और मानवीय संवेदनाओं का साकार स्वरूप है। [82]

बाल एंकाकी

वस्तु एकांकी के क्षेत्र में वीरेश्वर का 'एकता क्लब' 83 एक ऐसा एकांकी

नाटक है जो राष्ट्रीय एकता का संदेश देता है। विभिन्न भाषाओं के बीच एक भिखारी जिस भाषा का प्रयोग करता है वह भूख है। 84 भाषाओं की तकरार करने वाले पात्र रमेश, मोहन, कमल और क्लब के अध्यक्ष भोला सभी भिखारी की भूख मिटाने के लिये धर्म को ही स्वीकार करते हैं। अंग्रेजी, पंजाबी, बंगला आदि भाषाओं के तकरार को छोड़कर हिन्दी में भावनाओं को व्यक्त करने तथा भाषा से ऊपर उठकर मानव सेवा और एकता को लक्ष्य मानते हैं। गप्पा और गप्पी पात्रों के माध्यम से हास्य–विनोद भी उत्पन्न किया गया है। बाल–एकांकी अत्यन्त सरल, सहज, अभिनेय और बाल एकांकी की दृष्टि से सफल है।

जीवनी साहित्य

वीरेश्वर सिंह ने कविता, कहानी, नाटक सभी विषयों में जो कुछ भी लिखा है, वह परिमाण में बहुत कम है, किन्तु गुणात्मक में बहुत मूल्यवान है। वे गुलेरी की भांति कम लिखकर महान साहित्य का सृजन करना चाहते थे। उनकी कहानियाँ, कवितायें और नाट्यकृतियाँ सभी अमूल्य निधि हैं।

अपने जीवन के उत्तरार्ध में उनका परिचय हिन्दी के अनन्य आराधक, दुर्लभ हस्तलेखों की खोज करने वाले, प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों के पाठालोचक कवि डॉ ललित से हुआ, जो उनके पड़ोस में रहते थे। स्थानीय नेहरू डिग्री कालेज बांदा में हिन्दी के आचार्य रहे । उनकी दुर्लभ खोजो को हिन्दी, अंग्रेजी के समाचार पत्रों में पढकर वीरेश्वर सिंह के मन में डॉ0 ललित के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक पुस्तक लिखने की कामना थी। वीरेश्वर जी का मानना था कि बांदा एक सांस्कृतिक राजधानी है जहाँ साहित्य और संस्कृति के हजारों दुलर्भ अभिलेखों को खोजकर डॉ0 ललित ने अनुसंधान और संस्कृति के क्षेत्र को नई–नई जानकारियों से भर दिया। वीरेश्वर सिंह के शब्दों में " दुलर्भ पाण्डुलिपियां हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। चित्रकूट अंचल और उसके आसपास से डॉ0

ललित ने जिन दुलर्भ ग्रन्थों की हस्त लिखित प्रतियों को खोजकर जनता और विद्वानों दोनों का ज्ञान की नयी–नयी जानकारियों से साहित्य रचना की प्रेरणा दी है वह वस्तुतः हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों के लिये आधार का काम करेगा। '' [85]

Banda has gained in stature cultured sphere due to solid and valuable research work by Chanddas Research Institute under its able director Dr. Chandrika Prasad Dixit. Sri Dixit has collected over 3000(three thousend) precious manuscribls which are a veritable gold of literature. The treasure has to be seen to be believed verity . Banda appears become a capital city of U.P. as research and collection of rare manuscribes
Vireshwar Singh , M.A. LLB , General Secretary , Hindi Sahtyak Parisad , Banda " 86

वीरेश्वर सिंह जो उत्तरार्ध जीवन में आखों की लम्बी बीमारी से पीड़ित थे स्वस्थ होने पर उन्होने डा0 ललित के जीवन एवं उनकी साहित्य खोजें पर पुस्तक लेखन का कार्य प्रारम्भ किया था। तथ्यों, घटनाओं एवं खोजों की जानकारी प्राप्त की तथा जीवनी साहित्य के क्षेत्र में अपनी कलम उठाई। उनकी जीवनी साहित्य की यह कृति ' ललित यात्रा' अपूर्ण होकर भी साहित्य और अनुसंधान काव्य और सर्जना के लिये महत्वपूर्ण है।

" साहित्य के इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने में डॉ0 ललित की खोजों को अनदेखा करने का अर्थ है, इतिहास के अंधकार में और अधिक डूबे रहने की त्रासदी। राहुल सांस्कृत्यायन, जिन्हे महापंडित कहा गया उनके चलाये गये खोजों के अभियान को पूरा करने में जिन मनीषियों ने अपना जीवन खपा दिया,

डॉ0 ललित उनमें से एक हैं ।'' [87]

'ललित यात्रा' में ललित का जीवन, उनकी कृतियां, उनकी खोजों तथा उनके द्वारा सम्पादित दुलर्भ ग्रन्थो का परिचय लेखक के द्वारा गद्य, पद्य, साक्षात्कार, हिन्दी, अंग्रेजी मिश्रित शैली में दिया गया है। जो हिन्दी साहित्य के अध्येताओं के लिये उपयोगी है।

सन्दर्भ

1 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 25

2 तदुपरिवत, पृ0 25

3 तदुपरिवत, पृ0 27

4 'भीखू की कुडलियां, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ01

5 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 15

6 तदुपरिवत, पृ0 10

7 तदुपरिवत, पृ0 12

8 डॉ शशि प्रभा दीक्षित

9 गोरा बादल की कुंडलियाँ, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ02

10 तदुपरिवत, पृ0 2

11 तदुपरिवत, पृ0 2

12 तदुपरिवत, पृ0 3

13 तदुपरिवत, पृ0 3

14 गोरा बादल की कहनी , वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 2

15 जय गांधी, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

16 तदुपरिवत, पृ0 1

17 तदुपरिवत, पृ0 2

18 तदुपरिवत, पृ0 2

19 तदुपरिवत, पृ0 2

20 तदुपरिवत, पृ0 3

21 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 5

22 सवेरा, कविता, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

23 तदुपरिवत, पृ0 1

24 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 8

25 सवेरा, कविता, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

26 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 7,

27 सवेरा, कविता, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

28 तदुपरिवत, पृ0 2

29 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 4

30 सवेरा, कविता, वीरेश्वर सिंह, हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

31 तदुपरिवत, पृ0 1

32 तदुपरिवत, पृ0 1

33 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 10

34 गजराज, कविता वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

35 तदुपरिवत, पृ0 1

36 तदुपरिवत, पृ0 1

37 तदुपरिवत, पृ0 1

38 तदुपरिवत, पृ0 1

39 गदहा, कविता वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

40 तदुपरिवत पृ0 1

41 तदुपरिवत, पृ0 1

42 तदुपरिवत, पृ0 1

43 तदुपरिवत, पृ0 1

44 खाट खाट लेटे लेटे, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

45 तदुपरिवत, पृ0 1

46 तदुपरिवत, पृ0 1

47 तदुपरिवत, पृ0 2

48 तदुपरिवत, पृ0 1

49 तदुपरिवत, पृ0 1

50 तकिया, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

51 तदुपरिवत, पृ0 1

52 तदुपरिवत, पृ0 1

53 गांधी जयन्ती, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

54 पुत्र के प्रश्न, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

55 तदुपरिवत पृ0 1

56 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ0 15

57 माँ, काव्य, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 10

58 पानी बरसा झम्मा झम, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

59 तदुपरिवत, पृ0 1

60 भारत दुर्दशा, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

61 पानी बरसा झमा झम

62 तैराक, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

63 चौराहे की लालटेन, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

64 तदुपरिवत, पृ0 1

65 तदुपरिवत, पृ0 1

66 तदुपरिवत, पृ0 2

67 तदुपरिवत, पृ0 2

68 चींटी, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

69 तदुपरिवत, पृ0 1

70 तदुपरिवत, पृ0 2

71 तदुपरिवत, पृ0 2

72 तदुपरिवत, पृ0 2

73 बहता है पसीना, कविता, वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0 1

74 तदुपरिवत, पृ0 1

75 तदुपरिवत, पृ0 1

76 तदुपरिवत, पृ0 2

77 तदुपरिवत, पृ0 2

78 उंगली का घाव, कहानी संकलन, वीरेश्वर सिंह कलाकुज, 120 छोटी पियरी, काशी (भूमिका से)

79 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0 12

80 बिजली, नाटिका वीरेश्वर सिंह , साहित्य मण्डल बाजार सीताराम पृ0 1

81 बिजली, नाटिका वीरेश्वर सिंह , भूमिका ऋषभ चरण जैन पृ0 1

82 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0

83 एकता क्लब, बाल एंकाकी वीरेश्वर सिंह हस्तलिखित पाण्डुलिपि, पृ0

84 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ' ललित' पृ0

85 ललित यात्रा, वीरेश्वर सिंह, अप्रकाशित पृ0 1

86 Resaerch Work , वीरेश्वर सिंह, अप्रकाशित पृ0 1

87 ललित यात्रा, वीरेश्वर सिंह, अप्रकाशित पृ0 2

अध्याय- 3
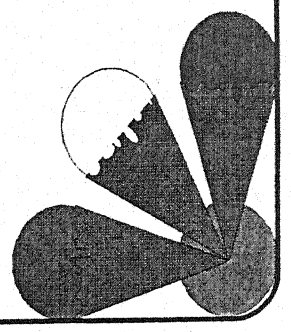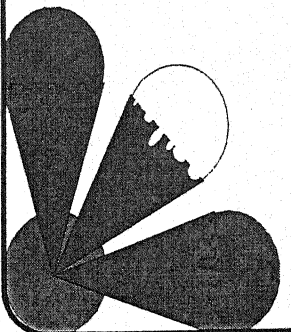
वीरेश्वर सिंह 'गोरा बादल' की काव्य-साधना

भाव सौन्दर्य

कल्पना सौन्दर्य

राष्ट्रीय चेतना

विविध मानव मनोभावों का अंकन

अध्याय- ३

भाव सौन्दर्य की दृष्टि से वीरेश्वर सिंह एक महत्वपूर्ण कवि हैं। उनकी काव्यकृतियों में भारतीय कृषक वर्ग की पीड़ा की सघन अनुभूतियाँ हैं। उनका सौन्दर्य लोक कृषकों के खेतों, खलिहानों और मजदूरों के श्रमिक जीवन से उत्पन्न होता है। उन्होने हिन्दी काव्य में जिन चित्रों एवं बिम्बों की रचना की है, वे मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत हैं। प्रकृति प्रेम के भावों को कवि ने 'भीखू की कुंडलियाँ ' के माध्यम से व्यक्त किया है।

वीरेश्वर सिंह का कवि ह्रदय व्यापक सौन्दर्यानुभूति व्यापक प्रेमानुभुति और व्यापक विश्व श्रष्टि के अनिन्ध श्रम साध्य जीवन से सरोकार रखता है। वह श्रम के मूल्यों पर आधारित मानवीय भावों एंव क्रिया व्यापारों का सजीव चितेरा है। किसान तथा मजदूरों की सघन पीड़ाओं से काव्य की पंक्ति–पंक्ति परिचित है। उनकी कविताओं में देश प्रेम का स्वर है, बलिदान होने की भावना है, गांधी पर निष्ठा है, लाल क्रान्ति पर विश्वास है। समीक्षको ने उन्हे हिन्दी का अनन्य पुजारी कहा है। " श्रम और कर्तव्य चेतना से जाग्रत भावों का सजीव चित्रण वीरेश्वर सिंह के काव्य का प्रमुख प्रतिपाद्य है। कवि ने भीखू और गोरा बादल नाम से जो कवितायें लिखी हैं वे सच्चे मानवता के पुजारी कवि के भावों का सघन चित्रांकन है।

भाव सम्पदा की दृष्टि से वीरेश्वर सिंह महाप्राण निराला के उत्तराधिकारी कहे जा सकते हैं। हिन्दी के प्रगतिशील कवियो में सबसे अधिक प्रामाणिक और संवेदनशील कवि वीरेश्वर ही हैं इसमें कोई संदेह नही । " [1]

वीरेश्वर सिंह ने अपने कवि जीवन को भीखू पात्र के माध्यम से विभिन्न ऋतुओं के बिम्बों में अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है। " महाकवि निराला ने ऋतुओं के माध्यम से जीवन की अनुभूतियों को संवेगात्मक क्षणों तक ले जाकर उनमें सुख, उल्लास, अवसान सभी संवेगात्मक स्थितियों में पवित्र और निष्छल

मन से की गयी प्रार्थनायें हैं। ''[2]

वीरेश्वर सिंह ने ऋतुओं के माध्यम से यर्थाथपरक जीवन के विम्ब उपस्थित किये हैं। प्रकृति को सर्वथा एक नये प्रगतिशील दृष्टिकोंण से अंकित किया है। प्रेमचन्द्र के होरी की भांति 'वीरेश्वर का भीखू ' समय के थपेड़ो की चोट सहता हुआ निर्धन वर्ग की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। वह ग्राम्य संस्कारों का है, वह वास्तविक जगत का व्यक्ति है। वह न तो पलायन करता है और न ही स्वाभिमान को गिरवी रखता है। सरल, सपाट और आंचलिक सौन्दर्य और मारक आंचलिक सौन्दर्य बोध को लेकर गरीबी की रेखा के नीचे शोषित वर्ग का प्रतिनिधि चरित्र है। ''[3]

बूढ़े भीखू कवि के जीवन में वर्षा आती है, उसके जीवन की संगिनी 'चिलम' है। 'चिलम' के संयोग और योग से ही उसने माया को जला दिया। वह चिलम के सहारे ईत भीति से निर्द्वन्द है वह रस विहीन हडिडयों का बंदा है। भूखा रहकर उसने काम को भष्म कर दिया है उसकी दृष्टि में पावस ऋतु की रानी का श्रंगार व्यर्थ है। डॉ0 शशि प्रभा दीक्षित के अनुसार " भीखू में आत्म बल है, चिलम का सम्बल है, उसमें चेतना की चिंगारी है, उसे ईश्वर पर भरोसा है। भीखू एक ऐसा टाइप पात्र है जो प्रेमचन्द्र के गोदान के होरी को भी पीछे छोड़ देता है।''[4]

वह संस्कारों से युक्त है। उसके लिये ऋतुओं का श्रंगार व्यर्थ है। कामनियों की काम चेष्ठायें उसे व्यथित नही करती। वह पुलिस पर फब्तियाँ कसता है। जुल्म जोर के सामने बिकने को तैयार नही है–

कवि वीरेश्वर ने ऋतु 'वर्षा ' के माध्यम से जो भावाभिव्यक्तियां की हैं उनमे से कुछ पँक्तियों का भाव दृष्टव्य है–

"जोग और संजोग चिलम
की माया सकल जराई

माया सकल जराई यारो

ईति–भीति निर्द्वन्दा

सजनि सहस रति रूप तिहारो

बिरस हाड़ को बन्दा

अब लौं लागी चिलम सों

क्षुधर जरयो सब काम

वृथा गगन की बखेरी

भरै रूप तू बाम। ''[5]

पावस ऋतु ने मायावी रंग भरे हैं। व्योम की अट्टालिका पर छबीली मोह–मुग्ध करती है। वह नायिका के भाँति पवन के संग झमकती है। नेह की वृष्टि करती है। पपीहा के सुर प्यार का संदेश देते है किन्तु प्रकृति प्रिया के इन अभिसार क्षणों मे भी भीखू का कथन कितना मार्मिक भावों से भरा हुआ है कि भूखा पेट 'पीउ पीउ' की रट नही भर रहा और हडिडयो में जल से हरियालापन नही आ रहा इसलिये भीखू जीवन संघर्ष पर विश्वास करता है, उसे रूप और श्रंगार मायावी प्रतीत होते हैं–

'' चढ़ी व्योम की अटा छबीली

करे मोहनी माया

चमकै गगन पवन संग झमकै

बरसै नेह निकाया

बरसै नेह निकाया यारो

पपीहा के सुर बोलै

पहिर कछौंटा पंजर ढाडा

सजनि कौन रस डोलै

पेट न पीउ रटन भरै

हाड़ न जल हरिआय

वृथा गगन की बखरी

क्यों माया बरसाय '' [6]

ऋतु चक्र के परिवर्तन के साथ मन स्थितियों में कवि का जीवन दर्शन अभिव्यक्त होता है। ग्रीष्म की तपन व्यर्थ सिद्ध होती है। ग्रीष्म की आग से ज्यादा पेट की आग जलन पैदा करती है। रूखा रोट और पानी के सहारे उसका पंजर एक चिन्गारी चिलम मे एक चिन्गारी तन मे है। उसी चिन्गारी के सहारे वह अग जग में अलख जगाता है–

'' रे ग्रीष्म बिरथा दहकै जनि लहकै अग्नि अंबारे

पेटागिन भीखू की तुमते जरै दून अंगारे

जरै दून अंगारे, यारो, रूख रोट और पानी

मारे मारै न पंजर भव को अगम चिलम विज्ञानी

एक चिनगी है चिलम है एक चिनगी तन माहि

भीखू फूंखे मगन मन अग जग अलख जगाहि'' [7]

ग्रीष्म के अंधड़ ने जग के निष्ठुर सिपाहियो ने जुल्म जोर से तबाही मचा रखा है पर भीखू को विश्वास है जिसे राम जिआये है, उसे कोई मार नही सकता। भीखू का घास–पूस का घर है हाड़–हाड़ की देह है। भीखू मगन मन होकर चिलम उड़ाता है।

'' हर हराय डटकै अंधड़ जग तेरो अढ़र सिपाही

जुलम जोरन राखै कवि दस दिसि वसुधा भई तबाही

बसुधा भई तबाही , यारो, विकल जीव जग जाये

जालिम, क्यों दाहै सिगरो जग भरै न राम जिआय

घास–पूस को गेह है
हाड़ हाड़ की देह
भीखू फूकैं मगन मन
उडै चिलम घन मेह ।'' [8]

ग्रीष्म मे सरिताये दुबली हो गयी हैं।, तालाब सूख गये। घास और पाती जल गयी। विषम दुपरिहा जल रही है और जगत के जीव जंतुओं को जला रही है। ग्रीष्म के अधेरे से भरे हुये शोषितों को जो राम के सवारें हैं उन्हे कोई नही नष्ट कर पाता–

'' दुबरानी सरिता सूखे सर जरीं घास और पाती
बरै विषम दुपहरिया तेरी जगत जीव संघाती
जगत जीव संघाती, यारो, चाम धाम मई कारी
जालिम क्यों अंधेर करै जग नसै न राम सँवारी
चरण कमल , अरू नार है अरून बरन अंगार
भीखू फूँकै मगन मन हॅसै चिलम रतनार ।'' [9]

प्रेमचन्द्र के यहां सौ में नब्बे आदमियों को भरपेट भोजन नही मिल पाता किन्तु वीरेश्वर का भीखू भूखे पेट रहकर चिलम के सहारे जिन्दगी गुजारने वाला ऐसा पात्र है जो सचमुच शोषित, पीडित और गरीबों का प्रतिनिधित्व करता है।

ऋतुराज में नव–नव श्रंगार करके वन और उपवन हँस–हंस कर झुकरों झूमते हैं ।भीखू फूस की मडैया में चिलम के एक रस की चूमते है। भीखू जीवित जगत का संधाती है। वह सहज उदासीन है। भीखू का ऋतुराज जू से कहना है कि कुसमों को श्रंगार व्यर्थ है–

'' करि सिंगार नव सप्त प्रकृति
हँसि वन उपवन झुकि झूमै
भीखू बैठे फूस मडैया

चिलम एक रस चूमै

पेटागिन पंजर जरै

जरै चिलम अंगार

सुनिये श्री ऋतुराज जू

मृषा कुसुम श्रंगार। '' [10]

भ्रमरों का गुंजन, विटपों का कलकूजन, त्रिविध बयार का विचरण, आंलिगन की रस मग्नता, कलियों का रस प्रवाह, जंगल फुलवारी कुसुमित होना, ऐसे वातावरण में भीखू फूस की मडैया में, जगत की पवाँरे देखता है। वह हुंकार भरता हुआ चिलम पीता है और जयकार बोलता है। उसके लिये कुसुमों का श्रंगार व्यर्थ है–

'' गुंजत भ्रमर विहग कल कूजत

बिहरति त्रिविध बयारी

आंलिगन मगन कलिन रस चाखत

कुसुमित जग फुलवारी

कुसुमित जग फुलवारी, यारो

श्री ऋतुराज पधारे

भीखू बैठे फूस मडैया

देखै जगत पँवारे। '' [11]

शिशिर की कुंडलियों में कवि का कथन है कि शिशिर तुम्हारा राज्य कठिन है । दिनकर का तेज सिराने लगा है। रात बर्फ की तरह गलती है। दिन जल्दी ढलता है। पंजर ठिठुरने लगे हैं। भीखू फटी फतुहिया पहने हुये मन में चिलम का जोग धारण किये हुये है। पेट की अग्नि धुँधुवा रही है। किन्तु भीखू की निष्ठा की आग (चिलम) शिशिर आंतक के जोर से भी नही बुझ पाती –

" कठिन राज है शिशिर तिहारो

दिनकर तेज सिरानो

गरै बरफ सी रात, ढरै दिन

पंजर ठिठुर ठिरानो

पंजर ठिठुर ठिरानो, यारो

सकल जीव हिम मारे

फटी फतुहिया पहिरे भीखू

चिलम जोग मन धारे

काल भसम पंजर रमै

पेटागिन धुँध आय

चिलम जगी सुन रे शिशिर

तेरे हिम न बुझाये। "[12]

शिशिर ने तुषार पात करके कृषि को दल डाला है और पेट में कुठारी मार दिया है। असन–वसन के बिना जंगल के जीव मर रहे हैं। दांत तकरार कर रहे हैं। अलाव ताप कर तन की रक्षा की जा रही है। भीखू शिशिर में नही काँख रहा है। चिलम की एक फूँक से जगत जल जाता है। भीखू की क्रान्तिकारी चेतना की आग चिलम के रूप में, वह शिशिर के हिम से भी नही बुझ पाती–

" जरि तुषार कृपी दलि डारे

मारे पेट कुठारी ।

असन–बसन बिन मरै जीव

जुग करै दसन तकरारी, यारो

तपि अलाव तन राखै।

चिलम जोग रमि रहै मगन

मन भीखू शिशिर न काँखै

एक फूँक चिन्ता जरै

दूजी जग जरि जाय

चिलम जगी सुन रे शिशिर

तेरे हिम न बुझाय। ''[13]

जगत करतार को जोहता है, कवि भीखू के रूप में अगिन को जोहता है। वह कर्मवादी है, भाग्य वादी नही। शिशिर ने बहुत सताया है, जुल्म ढाया है। महल के रंग रसिया शिशिर को पहचानते हैं, भीखू को शिशिर का रंग नही भाता शिशिर का हिम भीखू की चिलम की आग को नही बुझा पाती–

'' अब न सतइये, जइये प्यारे

जुलुम बहुत तुम कीन्हें

ग्रीष्म तपत ताँहि जिन्ह जोहे

सोउ अब तुम कहं चीन्हे

सोउ अब तुम कहं चीन्हे, यारो

महलन के रंग रसिया

भीखू तुम्हारे रंग न मानै

चिलम जोग बनबसिया

जग जोहे करतार को

भीखू अगिन जोहॉय

चिलम जोगी सुन रे शिशिर

तेरे हिम न बुझाय। ''[14]

ऋतुओं की प्रचंडता, विषमता निर्धन जीवन की व्यंजना में कवि वीरेश्वर को सफलता प्राप्त हुयी है। ऋतु वर्णन में ग्राम्य जीवन की विवेचना में वीरेश्वर

सबसे निराले हैं।

रूप सौन्दर्य

भीखू के माध्यम से कवि वीरेश्वर सिंह ने रूप सौन्दर्य विषयक एक नया परिदृश्य उपस्थित किया है। भीखू ने आरसी (दर्पण) नही देखा है केवल स्थिर जल की तलैया में जब तब अलेख अलिखित बिम्बों को देखा है। रूप सौन्दर्य सा श्रम पर आधारित है, जो ग्राम्य श्री से जन्मा है, लिखा नही गया। भीखू ने अपने बैलों का रूप देखा है, अपना नही। अपने कर्मयोग के सहयोगी बैलों का रूप देखना एक प्रगतिशील समर्थ चेतना का परिचायक है। कृषकों की संस्कृति को जीवांत करने वाला है। भीखू (कवि) की यह भी मान्यता है कि दीनानाथ के बिना तुम्हारे रूप पर कौन रीझता है–

" भीखू कहाँ आरसी पैये
कबहुँ न निज मुख देखे
थिर जल ग्राम तलैया जब तब
झलकै बिम्ब अलेखे
झलकै बिम्ब अलेखे, यारो
परै न मुख पहिचाने
सदा लखै भीखू बैलन मुख
अपन मुँह नहि जाने
काती पूँछिय रूप जिन
लीजिय मन समुझाय
भीखू दीना नाथ बिन
तोपै कौन रिझाय।" [15]

" चिलम भरै हुंकार सों

पिये बोल जयकार

सुनिये श्री ऋतुराज जे

मृषा कुसुम श्रंगारे ।" [16]

भीखू का संगम स्नान भी सामान्य से पृथक है। त्रिवेणी की बीच धार में सारा जगत कुम्भ नहाने गया है। नावें धकापेल चल रही हैं। भक्तों की श्रेणियां स्नान कर रही हैं। भक्त दो डुबकी लगाकर भागते हैं। भीखू इस प्रकार के गंगा स्नान की उपयोगिता नही समझते–

" भीखू अब की कुंभ नहाये

बीच धार तिरबेनी

धकापेल नावन की स्रेनी

भगतन की धुर श्रेनी

भगतन की धुर श्रेनी, यारो

दुउ बुड़की ले भागै

पनिहा दूध चढ़ाय खरी

आसिष गंगा से माँगै

छहर छहर लहरै लहर

सरित मधुर मुसकाय

भीखू संगम देखिये

कोउ न गंगा नहाय।। " [17]

भीखू का कथन कि गंगा जल से तन तो धुल जाता है किन्तु मन को धोने का कोई साधन नही है।

" तन तो धोये गंगा जल

मन राखे अलगाय

भीखू संगम देखिये

कोउ न गंगा नहाव ।'' [18]

भीखू संगम स्नान करने गये, जय जय गंगा माई कहते हुये। भीखू के पास न भैंस है न गाय। वह कौन सा दूध चढ़ाये। उसने मन का ही दूध चढ़ाया। भीखू ने कहा माँ गंगे, हम धूल में नहाते हैं, श्रम के पसीन से तन धोते हैं। खेतों को सींच कर हर्षित होते हैं। भीखू उसी को गंगा नहाने और उसी को तीरथ जाने के योग्य मानते हैं, जो श्रमिक है, किसान है–

'' भीखू तिरबेनी मा उतरे
जय जय गंगा माई।
मन को दूध चढ़ावै माता
हमरे भैंस न गाई ।
हमरे भैंस न गाई, यारो
पावन चरित बखानै
धूर नहाय खेत को, माता
भीखू जगत बुढ़ाने ।
तन धोते श्रम स्वदेसों
खेत सींच हरषांय
भीखू सोई तीरथ करै
सोई गंग नहाय। '' [19]

भीखू ने सूर्योदय को देखा, सूर्य को पूर्व में उदित होते देखा। क्षितिज को तोड़कर रवि को हँसते हुये देखकर भीखू अपने तन मन को न्यौछावर करता है जिसने लोक को उन्नत बनाया, भीखू के अनुसार वही धन्य है। सूर्य का जन्म ही सार्थक है, भीखू के शब्दों में –

'' भीखू खड़े उदय की बेला

पूरब दिशा निहारै

क्षितिज फोर रवि हँस्यो गगन

जय भीखू तन मन वारै

भीखू तन मन वारै, यारो

नव जीवन संचारा

धनि जेहि कोख जनम तै लीन्हे

किये लोक उजियारा

कूंजे बिहग , सुमन खिले

हरष्यो जगत निकाय

धनि सूरज तेरो जनम

अग जग निशा नसाय। " [20]

अरूण काल रवि विकसित होता है। अमृत की वृष्टि होती है। पवन चेतना का संचार करता है। छलांगे भरता हुआ सूरज समुद्र को लांघता है जैसे बजरंगबली हो। ओस की बूंद मोती बन जाती है। रजकण हीरक की भाँति शोभित होते हें। निशा को नष्ट करने वाले सूर्य का जन्म धन्य है–

" नभ अति मनहर शोभा छाई

बरसै अमृत, पवन सुचि डौले

तन चेतनता आई।

तन चेतनता आई, यारो

उमगि चली मन गंगा

भरि छलाँग पवारै सागर

ऐसेइ छन बजरंगा।

ओस बूंद मोती भये

रज कण हीर सुहाय

धनि सूरज तेरे जनम

अगे अग निशा नसाय।। [21]

सूर्योदय के साथ ही हिन्द के बालों (सपूतों) को कवि जागने के लिये कहता है। लाल बजरंग ने रात्रि को नष्ट कर गगन के बीच हँसता हुआ हेला क्रीडा करता है। सागर को सोखकर, जगत की कृषि को नवल प्रकाश प्रदान करता है। भीखू जगत के भय को भूलकर हर्षित होकर खेत में धंसते हैं–

" उठिये, लाल हिन्द के उठिये

भई उठन की बेला

निसा नसाय लाल बजरंग ।

गगन बीच हँसि हेला

गगन बीच हँसि हेला, यारो

चला चीर आकासा

सागरा सोषि, भरै जग खेती

धर धर नवल प्रकाशा।

भीखू भूलै जगत भय

धँसै खेत हरषाय

धनि सूरज तेरे जनम

अग जग निशा नसाय।। " [22]

वीरेश्वर के भीखू का आदर्श सूर्य है। उनके सूर्योदयी स्वरों में नवजागरण का संदेश है। हिन्द के बालों को जगाने की बलवती प्रेरणा है। अरूणाई से तरूणायी का सम्बन्ध है। डॉ अनामिका द्विवेदी के शब्दों में –

" वीरेश्वर सिंह की दृष्टि अधिक स्पष्ट है। वह निर्भीक योद्धा की भांति खेतो में धसने का, धूल मे स्नान कर पवित्र होने से गर्वित है। वह गंगा स्नान, तीर्थाटन

जैसी रूढ़ियों का भंजन करता है। हिन्दी प्रेम निर्भीक कविता में कवि वीरेश्वर ने श्रम संवेदना, नवीन जीवन आस्था, जन्म की सार्थकता, निश्छल जीव के भावों की अभिव्यक्ति करने में सफलता के जिन सोपानों का स्पर्श किया है, वह हिन्दी के गौरव की वस्तु है।'' [23]

सौन्दर्यबोध मे भारतीय चिंतन परम्परा को ठा. वीरेश्वर सिंह ने स्थान दिया है। पात्रों के मन में जहां एक ओर पाश्चात्य शैली का सौन्दर्य बोध दिखायी पड़ता है। पूर्व और पश्चिम के मनीषियों ने जिन गुणों की अपेक्षा की है, उनमें पर्याप्त दृष्टि भेद है।

'' वीरेश्वर सिंह ने सौन्दर्य बोध के दोनो दृष्टिकोंणो को रेखांकित किया है। पाश्चात्य विचारकों ने जहां सौन्दर्यानुभूति को बहिरंग, शारीरिक सौष्ठव, आकर्षक छवियों और गतिशील मुद्रओं में वर्णित किया है, वहीं भारतीय विचारको ने सौन्दर्य बोध में शील, सेवा, सदगुण और नैतिक मूल्यों का भी समावेश किया है। वीरेश्वर सिंह के कथा चरित्र भी बहिरंग रूपाकर्षण से भारतीय सौन्दर्य बोध की ओर लौटते हैं। '' [24]

वीरेश्वर सिंह अत्यन्त सहृदय साहित्यकार हैं। वे सौन्दर्य में कल्याणकारी भावनाओं को खोजते हैं एक सच्चे कलाप्रेमी की भाँति वे जीवन में सौन्दर्य और कुरूपता के बीच, दुर्बलता और शक्ति के बीच सामंजस्य करते चलते हैं। कथाकार ने गुणात्मक श्रेष्ठता को महात्व दिया है–

'' मांसल रूप सौन्दर्य का आकर्षण पात्रों में पाया जाता है, किन्तु कर्म सौन्दर्य और भाव सौन्दर्य तथा प्राकृतिक रूप सौन्दर्य का बोध सर्वत्र कराया गया है। वीरेश्वर ने सौन्दर्य बोध में सत्य और शिव को संन्निहित किया है। रूप सौन्दर्य से भाव सौन्दर्य और कर्म सौन्दर्य की अभिव्यक्तियाँ की गयी हैं। '' [25]

भाव सौन्दर्य

वीरेश्वर ने जिस सौन्दर्य को मूर्तित किया है उसमें ग्राम्य संवेदनाओं को

और साहित्यिक कृतियों के बिम्बो से त्याग और बलिदान के भावों को सौन्दर्य का आधार बनाया है–

उदाहरणार्थ– " आम सा गोल गोल मुखड़ा, बड़ी– बड़ी चकित कजरारी आंखे और गिन्नी सा रंग। होठ तो लाल कुंदरू हो रहे थे। गोल गोल कलाइयों में सोने की चूड़िया कसी सुन्दर लग रही थी। और ठोड़ी के नीचे का गला तो बस चूमने ही लायक था यदि कविता की किताबें बोल सकती तो 'मुकुल' कहती कि वह झांसी वाली रानी की कटार थी, ' पल्लव' कहती कि वह कोई विंहावेली थी और 'साकेत' का उत्तर होता कि वह मध्य युग में होती तो उर्मिला होती। " [26]

कवि वीरेश्वर सिंह ने भीखू के माध्यम से कहलाया है कि दर्पण की लालसा छोड़िया, अनदेखा ही रूप भला है। सांवला रंग है, मुखमण्डल झांवर है, स्वेत केश हैं, पुरूषार्थ भी अब थक गया है। बैलों को भले हाँक लीजिये पर यह तन अब हाथो से नही हँकता। बैलो से ज्यादा बुढ़ा गया है तन। मन के बल पर यह पिंजड़ा जी रहा है खेत जोत कर खा रहा है। भीखू के अनुसार दीनानाथ के बिना तुम पर कौन रीझने वाला है–

" भीखू मुकुर लालसा तजिये
भलो रूप अनदेखा
साँवर रंग, झांवर मुखमण्डल
झलकि रहे सितकेसा।
झलकि रहे सितकेसा, यारो
पौरूष हूं अब थाक्यो
बैलन को तो हाँक लीजिये
हँकै न तन अब हाँक्यो
मन के बल पंजर जिये
खेत जोत के खाय

भीखू दीना नाथ बिन

तोपै कौन रिझाये।'' [27]

मनुष्य के तन मे जन्म पाकर भीखू ने माता की कोख को कभी लज्जित नही किया। रूखे रोट और पानी पर जीवित रहने वाले भीखू ने परधन पर कभी मन नही दिया। धरती ने जो दिया, उसी से संतुष्ट हुये। हाथ फैलाकर कभी भींख नही मांगी। हड्डियों को तोड़कर श्रम किया। फटा लूगरा पहनकर, कथरी बिछाकर रहे। दीनानाथ के बिना कौन रीझेगा, भीखू का यह कथन मार्मिक है। रूप और सौन्दर्य के क्षेत्र में एक नयी मान्यता उपस्थित करने वाला है—

'' जनमे मानुस के तन माता

कोख न कबंहु लजाय

रूख रोट पानी पे जीवत

पर धन मन नहि लाय

पर धन मन नहि लाय, यारो

घरा दीन्ह सो लीन्हे

हाँथ पसार भीख न मांगी

हाड़ तोड़ि श्रम कीन्हें

फटो लूगरो पहिरि के

कथरी रहे बिछाय

भीखू दीनानाथ बिन

तौपे कौन रिझाये। '' [28]

प्रेम

वीरेश्वर के काव्य में प्रेम की भावानुभूतियाँ भी एक सर्वहारा कृषक की , जनसाधारण के चरित्र की ऊचाइयों को व्यक्त करती है। भीखू 'कवि' के साथियों ने सौगन्ध खिलाकर भीखू से पूँछा कि कभी किसी से प्रेम किया है। भीखू

साथियों के प्रश्न की अनसुनी कर देते है। चिलम में मन दिये हुये है। धुआं अम्बर में उड़ता है। पुनः साथियो के पूँछने पर भीखू का उत्तर मार्मिक है–

" भीखू सौंहे हमारी कहिये
प्रेम कबहुँ तुम कीन्हे
साथी पूँछे, सुनै न भीखू
लिये चिलम मन दीन्हे
लिये चिलम मन दीन्हे, यारो
उडै धुआं अम्बारा
पुनि पूँछे साथी के बोले
पूँछेहुं बात लबारा
ज्वान होत हर माँ जुतो
जोतत गये बुढ़ाये
भीखू नर तन बैल है
कहाँ प्रेम बौराय । " [29]

कवि (भीखू) ने अपने साथियों से एक गंभीर बात कही कि भूखें पेट मे प्रेम नही उपजता है यह भी पेट की पीड़ा है। जनत्राता कृषक उपास रह रहा है। आधे पेट खाकर रहता है, उसकी लज्जा विधाता ही रखता है। भीखू का कहना है कि उसने माटी से ही रति भरनी है, वह खेत को बनाता है, भीखू के अनुसार नर का तन बैल है, वहाँ प्रेम मे बौराने का प्रश्न ही कहाँ ?

" पुनि सुनिये साथी हम तुमसौ
बात कहे गम्भीरा
भूखे पेट प्रेम ना उपजे
भरै पेट की पीरा

भरै पेट की पीरा , यारो

है उपास जन त्राता

आधो पेट खाय जग रहिये

राखे लाज विधाता

माटी सो रति मानिये

रखिये खेत बनाये

भीखू नर तन बैल है

कहाँ प्रेम बौराय । '' [30]

'प्रेम ' सभी जातियों से मुक्त है। वह विश्व की सम्पत्ति है। वीरेश्वर ने सुन्दरता, यौवन और प्रेम की परिधि को सबसे ऊंची बताया है–

'' सुन्दरता, यौवन और प्रेम की भी कोई जाति होती है। '' [31]

वीरेश्वर सिंह ने भावनामृत द्वारा एक पाषाण को मन्दिर का अंग बना देते हें और उसमें परिवर्तन का मूल्य भर देते है। पाषाण जो निर्जन में था वह जन जन का आधार बन सके–

'' जाग उठा निर्जन का पत्थर

बना जगत जीवन का शंकर

जन जन का आधार बना

वह निर्जन का पाषाण। '' [32]

एक अधखिला फूल बलिदान के द्वारा उत्सर्ग करके अपने प्राणों को अमर बना लेता है–

'' भाव भरा वह सुमन भक्ति का

बना पुण्य रज श्री चरणों का

वह मुरझाता सुमन बन गया

एक अमर बलिदान। '' [33]

कवि मिटटी के संसार को विजन और निस्सार को स्वेद उत्सर्ग द्वारा सार्थक और मधुरस से शस्यश्यामला धरती में परिवर्तित कर देता है और मिटटी सोना बन जाती है और जग स्वर्गागार –

" था यह मिट्टी का संसार,
भावहीन निस्सार विजन सा
एक शूल सा मानव मन का
बड़े प्रेम से इस मिट्टी को मैने शीष झुकाया
कर जीवन उत्सर्ग इसी मिट्टी मे स्वेद बहाया
यहाँ लगा मधुरस सा बहने
लहरी हरियाली कन–कन में
मिट्टी सोना बनी
बन गया यह जग र्स्वगागार। " [34]

कल्पना –

कल्पना किसी भी कलाकार सृजनात्मक शक्ति है। कल्पना को अंग्रेजी में 'इमीजिनेशन' कहा गया है । 'इमेज ' का अर्थ है चित्र अथवा छवि। कुमार विमल, सुरेश चन्द्र त्यागी, शिवकरण आदि ने इमीजिनेशन' शब्द को ' इमेज' से निस्पन्न माना है। कल्पना वह रचनात्मक शक्ति है जिसके आधार पर वाहय वस्तुओं के बिम्बो का निर्माण होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ' रस मीमांसा' में रसात्मक बोध निबन्ध मे रूप विधान को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। 1– प्रत्यक्ष रूप विधान, 2– स्मृत रूप विधान, 3– कल्पित रूप विधान। तीसरे प्रकार के रूप विधान को पूर्णतया कल्पना का पर्याय माना है। वीरेश्वर सिंह ने भी कुछ नया रचने के लिये नूतन श्रृष्टि के लिये कल्पना का उपयोग किया है। सौन्दर्य वेद्वता हरि द्वारी लाल शर्मा ने ' कला विज्ञान ' तथा सुन्दरम में कल्पना

पर विचार किया है उनके अनुसार संचित अनुभवों में परिवर्तन के द्वारा जिस नवीनता का उदय होता है उसका कारण कल्पना है।

" कल्पना का उपयोग कवि वीरेश्वर सिंह ने अप्रत्यक्ष वस्तुओं के बिम्बों के मानसिक पुनराहान बिम्बो् के पुनः प्रत्यक्ष करने तथा इन बिम्बों के समीकरण के लिये किया है। " [35]

डॉ0 कुमार विमल के अनुसार ' कल्पना एक प्रकार की मानसिक सृष्टि है, जो अपने सम्मूर्तन के लिये साधन या माध्यम के रूप में ईंट, पत्थर, रंग, तूली, स्वर या बिम्ब किसी को भी ग्रहण कर सकती है।" [36]

हंस कुमार तिवारी के शब्दो मे " कल्पना को कवि की आत्मीया कहना अधिक उपयुक्त है क्योंकि वस्तु से तदाकारिता स्थापित कर उसके आन्तरिक रूप मर्म वाणी को हृदयंगम करना पड़ता है। [37]

डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार " कल्पना का मुख्य कार्य है– रिक्त स्थानों का भरना अर्थात विषमताओं को एक सार करना। जगत में हम देखते हें कि वस्तुये पूर्ण नही है। उनते न्यूनताये एवं दोष हैं अर्थात उनमें बीच–बीच में स्थान रिक्त रह गये है। वहां हमारी कल्पना आप ही आप उनको भरने का प्रयत्न करने लगती हैं। [38]

कुमार विमल के अनुसार "कल्पना के सहारे ही कलाकार गुण–साम्य, धर्म –साम्य और प्रभाव साम्य इत्यादि समताओं के आधार पर प्रस्तुत में अप्रस्तुत के आरोप से रमणीय भाव लोक की सृष्टि करता है। पुनः वैषम्य के द्वारा वस्तु विशेष के गुण विवर्धन या उत्कृष्टता स्थापन में प्रस्तुत–अप्रस्तुत के बीच गुणधर्म प्रमुख और व्यापार का प्रतीक प्रस्तुत करने के लिये कल्पना ही कलाकार को दृष्टि विस्तार देती है। " [39]

शिवबालक राय के अनुसार " जिससे सहृदया कलावंत के मानस में बिम्ब विधान सम्पन्न होता है जिससे सर्जना का तत्व क्रियाशील होता है और जिससे

आन्नद का सम्पादन होता है।" [40]

" उड़ गये बिहग

सखर उन्मन

है दूर दीप जलता

कोई है पास नही

हो रही दिशायें मूक

गगन में स्वांस नही ।" [41]

कवि ने कल्पना को आधार बनाकर स्मृति के जिन बिम्बों की सृष्टि की है कि है जिसमें विहंगों के उड़ जाने, मधुर कल्पना भरे जीवन के क्षणों के बीत जाने का उल्लेख है। दीप के दूर जलने के माध्यम से कवि ने आशाओं के दूरवर्ती होने का संकेत किया है–

" हैं कहाँ बाज की झपट

लपट ज्वाला की

वह घन घमंड की गरज

लरज हाला की

अब तिरछी चितवन किसे

देख सकते हो मन

क्या रहा शेष उन चिन्तित

आँखों मे उपवन। " [42]

कवि ने प्रणय परक जीवन की अनुभूतियों को, संयोग काल के क्षणों को बाज की झपट और ज्वाला की लपट कहकर कल्पना के माध्यम से अतीत के मधुर स्वप्निल जीवन का चित्रण किया है।

कवि ने कल्पना के माध्यमं से जिन मानसिक भावों का चित्रण किया है

कहीं कहीं मानसिक पुनराहान है, और कहीं इन बिम्बो का पुनः प्रत्यक्ष रूप सामने आता है । बिम्बो के समीकरण में भी वीरेश्वर ने कल्पना का उपयोग किया है।

वीरेश्वर के काव्य से कतिपय उद्धरण दिये जा रहे हैं, जिनसे कवि की कल्पना का साकार रूप देखने को मिलता है–

अ– "जीवन की अधियारी में
फिर आज कौन मुसकाता
यह कौन इन्दुमुख चीर
अगम तब जाल अमृत बरसाता
फिर मन का स्वर लहराया
फिर शुष्क नयन हो गये सजल
फिर पीर पुरानी जाग उठी
चातक–सा टेर उठा अंतर।। [43]

ब– लोहित दिनकर जब अस्त हुआ
वन उपवन नीरव अस्त हुआ
छायी अधियारी कंपित मन
मै एकाकी भयभूत विजन
इस गहन काल में
छुड़ा हाथ तुम
शपथ प्रेम की मूल
चल दिये
फिर न लौटकर आये। " [44]

स– "देख लो सागर तरंगित व्योम के उन बादलो में
चन्द्र को लो देख कोई के खिले कोमल दलो में।

फिरेगियो के जाल टूट गए, धरती और गगन

स्वातंत्र विहार करने लगे स्वतन्त्रता के नव युग। ''[45]

राष्ट्रभावना

वीरेश्वर जी् के काव्य में राष्ट्र भावना के स्वर उदात्त रूप में वर्णित है। राष्ट्रीय प्रजातंत्र तथा गांधी के गुणों से गुम्फित कवितायें उत्प्रेरण करती हैं। देशप्रेम, देशोन्नति तथा राष्ट्रीय समुदाय की भावना को कवि ने विकसित किया है। राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक एकता की भावनाओं को प्रतिपादित किया गया है। वीरेश्वर सिंह ने ' जनतंत्र विहान' नामक कविता मे जनतांत्रिक चेतना का स्वागत किया है–

'' उठो साथी देखो यशगान

एशिया का अरूण यह विहान

हिन्द सागर में जागा ज्वार

बहा मारूत नव भाव अपार

उठा जीवन भर नवल उछाह

बढ़ा जाग्रत मानव सोत्साह

नवल जीवन का नव उत्थान

उदित भारत जनतंत्र महान । ''[46]

शोषण का अंत करके एक समतल भूगोल की रचना करने वाले गांधी युग की भूरिशः प्रशंसा कवि ने की है–

'' श्रमिक का श्रम, कृषको का स्वेद

छुधित की छुधा नग्न के खेद

बूढी मानवता सैन्य अपार

ढहे शोषण के कारागार

अतल से अभय उठा भूडोल

हुआ समतल असाम्य भूगोल

उठो जग जग जननी ललकार

पूर्व मे हुआ नया अवतार। '' [47]

स्वागत करते हुए कवि ने पूर्व में नए अवतार की घोषणा की–

'' हुआ अपना घर, अपना द्वार

गगन,जल,थल,स्वतंत्र बिहार

फिरंगी के बहुरंगी जाल

मलिन बह गए मिटा दुःकाल

प्रबल स्वातंत्र मरुत आकाश

छिन्न रिपु छल छन्दो के पास

उदय नवयुग अग जग विस्तार।

पूर्व में हुआ नया अवतार।।''[48]

श्रमिको के श्रम को मान और गौरव प्रदान करने वाले कवि वीरेश्वर ने जनमन की विजय का स्तवन किया। न्याय, श्रम का सम्मान ,कल्याण की भावनायें मुखित हो उठी–

'' अरे,मिट गए दैव के खेल

प्रबल जन मन के नियम अपेल

बढ़ी जान्हवी जगत श्रमदान

श्रमिक के श्रम में हैं भगवान

न्याय की तुला श्रमिक का मान

बढ़ी जनमन जग के कल्याण

धरा पर वही सुधा की धार ,

पूर्व में हुआ नया अवतार।।''[49]

राष्ट की स्वाधीनता से न कोई स्वामी रहा और न कोई दास। शोषण के संताप मिट गए। राष्ट में एकता ,श्रमनिष्ठा और विश्वास का वातावरण जन्मा। कवि वीरेश्वर के शब्दो में—

न स्वामी और न कोई दास
विगत शोषितपन के समास
फुल्ल जनमन शतदल साहास
अंकुरित कनकन में नव अथ
धवल जीवन का सबल प्रकाश
सुविकसित नित नव जन कल्याण।
एकता, श्रम निष्ठा, विश्वास।
सुमति की प्रगति, कुमति का नाश।
सुन,रे जग के धाता, जाग
देंख, नभ थल के नव अनुराग।।"[50]

स्वाधीनता के महानायक गाँधी के प्रति कवि के हृदय में अगाध निष्ठा है। वह गाँधी जयन्ती मनाने के लिये, प्रेम के गीत गाने के लिए प्रेरित करता है और हिन्दु,मुसलमान, ईसाई, पारसी सभी से एकता की इकाई के रुप में ,संगठित होने का संदेश देता है—

" चलो आज गांधी जयन्ती मनावें
चलो ,आज मिल प्रेम के गीत गावे
जिला जो गया है हमे प्राण देकर
चलो ,उसको श्रद्वाा सुमन हम चढावे ।।
"मुसलमान हो, पारसी या ईसाई
चलो सबसे कह दें कि हो अपने भाई

चलो, याद फिर पुज्य बापू की कर ले

लिखे मिलके हम एकता की इकाई।"[51]

कवि वीरेश्वर सिंह जातीयता के भेद को मिटाना चाहते है हरिजनो को गले से लगाने का संदेश देते हैं और प्रेम की पुण्य गंगा ने नहाने की प्रेरणा देते है–

" चलो हरिजनों को गले से लगा लें

चलो, आज जनमन के मन को मना ले

मिटा दे चलो, भेद जातीयता का

चलो, प्रेम की पुण्य गंगा नहाते।"[52]

अंग्रेजो द्वारा भारतीय वस्त्र उद्योगो को नष्ट करने और बुनकरों तथा कपड़े के व्यापारियो पर ढाये गये जुल्मी-सितम इतिहास में प्रसिद्व है। अंग्रेजी राज्य में भारत के शिल्प और उद्योग कपड़े। गाँधी ने चरखे का प्रचार प्रसार किया तथा खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा दिया । कवि वीरेश्वर सिंह ने स्वदेशी वृत लेकर चलन, गरीबों के नंगे बदन को ढकने के लिये खादी और चरखे से सूत कातने पर बल दिया–

" चलो फिर स्वदेशी का व्रत ले चलें हम

चलो शुद्व जीवन का सत ले चले हम

न भूलें गरीबों के नगें बदन को

उस काछनी घर का मत ले चले हम

चलो, आज चरखों की गुन गुन सगुन पर

चलो आज खादी प्रसादी की धुन पर

चलो, ले विजन की पताका चले हम

जिधर के चरण चल चुके है निरन्तर ।"[53]

कवि मातृ भूमि की रज को लेकर चलना चाहता है वह राष्ट्र ही नही, विश्व सेना का ध्वज फहराना चाहता है। आजादी के पर्व को कवि ने प्रेमपर्व की संज्ञा दी है। कवि ने गांधी के अवतरण को राष्ट्र का अवतरण कहा है –

" चलो, मातृ चरणों की रज ले चले हम
चले विश्व सेना का ध्वज ले चले हम
चलो मिल उड़ावे तिरंगा गगन में
नये युग की सीहन , लरज ले चले हम
चलो मिल चले प्रेम त्यौहार ये यह
चलो मिल चले राष्ट्र अवतार ये यह
नयी ज्योति नव युग की घर–घर लगा दे
चलो, लोक परलोक उद्धार है यह। " [54]

गांधी भारत के भाग्य विधाता थे, जिन्होने राष्ट्र को स्वतंत्रता प्रदान की। जिसने महलों को छोड़कर झोपड़ियों को स्वस्ति का गेह बनाया–

" जिसके बूढे हाथों ने हठ
माता की जंजीरे तोड़ी
जिसकी सीधी लकुटि ने
टेढ़ी भावी की गतिविधि मोड़ी
वह नग्न देह
जिसने महलों को छोड़
बनाया झोपड़ियों को, स्वस्ति गेह
जिसने अगस्त्य बन शोषण के
सागर को सोखा रहित नेह। " [55]

सदभाव एंव एकता के वातावरण को गांधी जी ने पोषित किया, वह

, ईसा, मुसलमान सभी को समान दृष्टि से राष्ट्रीय स्वतंत्रा के लिये संगठित कर रहे थे। उनकी दृष्टि में गीता इंजिल और कुरान सभी का सम्मान था–

" वह रहित धर्म वह
वह धर्म प्राण
वह हिन्दु, ईसा, मुसलमान
गीता, इंजिल, कुरान
किया जिसने सबका सम्मार। " [56]

गांधी, वीरेश्वर की दृष्टि में नये युग के नये भागीरथ थे जिन्होने तन तोड़कर स्वतांत्र– जान्हवी की धारा को प्रवाहित किया–

" वह नया भगीरथ नवयुग का
जिसने तन तोड़ फोड़ पत्थर
स्वातंत्र जान्हवी अगम बहादो
जगहित धरती पर हर–हर
जिसका गांधी शुभ नाम
उसे शत शत नत शीश प्रणाम " [57]

प्रकृति में मानवीय संवेदन और दीन दलित भावों की पीड़ा को मुखरित करने में भारतीय किसान वर्ग की चेतना का उनके जीवन को साकार रूप देने में वीरेश्वर सिंह की कवितायें बेजोड़ है। ऐसी मानवीय संवेदनायें प्रकृति के माध्यम से कवि ने यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है–

" ओह देखो व्योम को
हैं घिरे बादल, उमड़ते विषधरों के दल,
अँधेरा हो गया दिन में
पूस का है माह–
गलते उँगलियों के पोर, चलती है हवा झकझोर

लगती तीर सी तन में।

लो बरसने भी लगा जैसे प्रलय साकार, उफ कैसी विकट बौछार

बारम्बार बारम्बार ।'' [58]

घर द्वारा में निस्तार नही हो पा रहा, छत चू रही है ऐसी भयावह स्थिति में आम आदमी कहाँ बैठे, कहाँ निकले और कहाँ जाये। दलित वर्ग की पीड़ा का चित्रण कवि वीरेश्वर के शब्दों में –

'' चू रहा है छाजन, न घर द्वार में निस्तार

अब कहाँ बैठे, कहाँ निकले , कहाँ जायें

हवा का जोर घन का शोर पानी का तरारा।

बज रहे हैं दाँत, दोनो पैर डगम,

छा रहा है तम थल, गगन मय भूत सारा । '' [59]

'पूस' ऐसा प्रतीत होता है जैसे तन से प्राणों को चूस लेगा, ऐसे में वीरेश्वर का क्रान्तिकारी कवि जागता है और बोल उठता है कि विधि का क्या सहारा है। अब तो मनुष्य को अपनी ही मुठियाँ बांधनी पड़ेगी और 'अग्नि' को साधना पड़ेगी। हाथ का कोई काम नही है, राम भी तो वन में भीगते रहे राजपाट को छोड़कर। कवि भी छाजन में आग लगाकर, मोह को छोड़कर घर से बाहर निकलने के लिये क्रान्तकारी आहवान करता है। जीवन जीने के लिये कीजड़ में हिल कर हँस कर इसे पार करना होगा।

'' पूस है, यह पूस, लेगा प्राण तन से चूस

क्या विधि का सहारा

मुठ्ठियों को बांध, रे मानव , अग्नि अब सोध

बन अपना सहारा

हाय का क्या काम, रे भीगे वनों में राम

तजकर राज प्यारा

जीर्ण धर को त्याग, छाजन में लगादे आग

छल है मोह सारा

चल कदम घर वह भी है घर

जिसे कहते लोग बाहर

है अगर जीना तो उठ जग से निकल

हिल कींच हंसकर

बैठकर कर घर में न यह नैया लगेगी पार

बरसता है पूस, रे है कठिन यह संसार ।'' [60]

कवि वीरेश्वर निराला की भांति संघर्ष जयी होना चाहता है, वह भी नर और नारे को पार करना चाहता है–

'' गरजते बादल तड़पती तड़ित, बहती है हवा

हड्डियों को बेधती हैं ठंड, अधियारी धरा

पर यही वह क्षण है, जब का प्रण हैं

हिल के कीच, जग के बीच

नद और नार सब कर पार

हम मंजिल चलेगें

वचन पूरा करेंगे''। [61]

विविध भावो का चित्रण –

कवि वीरेश्वर आदमी की सत्ता को सर्वोपरि मानते हैं वह ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह उठाते हैं और आदमी को चेतावनी प्रदान करते हैं–

'' चेत रे विधर्भ के बिगोय नर चेत

देख, दुनिया के रंग भरे, नंग भरे खेल

अरे, छोड़ आसमान

वहाँ कहाँ भगवान

धार धरती का घ्यान

तेरी फूस की मडैया का छबैया

यही आदमी। '' [62]

वीरेश्वर जीवन से राग उत्पन्न करने वाले कवि है वे वैराग्य को छोड़ने तथा संभ्रम के तारों को तोड़ने का संदेश देता है–

''छोड़ , छोड रे विराग

जोड़ जीवन से राग

तोड़ संभ्रम के ताग

तेरी यमुना के नाग का नथैया, यही आदमी।'' [63]

'दैव–दैव आलसी पुकारा ' की भांति कवि वीरेश्वर सिंह भी दैव की पुकार को छोड़ने तथा पौरूष और पुरूषार्थ से कार्य करने तथा देश और वेष को संवारने का संदेश देते हैं उनका विश्वास है कि भारत के भाग्य का सूर्योदय मनुष्य के पुरूषार्थ से ही संभव है– [64]

'' छोड़ दैव की पुकार

वीर, पौरूष प्रसार

देश वेश को सँवार

भाग्य भारत विहान का करैया यही आदमी। '' [65]

लोक को ही परलोक तथा स्वर्ग लोक की संज्ञा देने वाले कवि वीरेश्वर ने प्रण, प्राण और जहान की रक्षा करने वाले आदमी को ही सर्वोच्च्व महानता दी है और माता की कोख की पूजा का नया संकल्प व्यक्त किया है–

'' पूज माता की कोख

साज दुनिया विशोक

लोक ही है स्वर्ग लोक

प्रण–प्राण औ जहान का रखैया यही आदमी। ''[66]

प्रणयअनुभूति एवं विरह

कवि वीरेश्वर सिंह के जीवन में प्रणय की अनुभूतियाँ और विरह की अनुभूतियाँ 'प्रेमांकुर' दो बाते कविता में व्यक्त हुयी हैं–

'' किसने आज बहा दी मेरे इस

उर मरू में रस की धारा

बरस पड़ा यौं आह

और इस चातक का जल स्वाति सहारा। ''[67]

कवि अपनी प्रिया से दो फूल, दो बूँद की ही कामना करता है। वह ढेर सा प्यार पाकर आश्चर्य चकित और भाव विहल है –

'' पुनः हँस पड़ी वर्षो के

इस मुरझाये उपवन में लाली

लहर उठी इस मरू थल में

फिर से सावन की ऋतु मतवाली

यह दोनो तो प्रिय बस

तेरे दो फूलों से ही भर जाता

यह जीवन सर तो प्रिय तेरे

दो बूँद से ही सरसाता। ''[68]

कवि को प्रेम प्राप्ति का अवसर ही नही है वह 'आग' को लिये निरंतर सघर्ष रत है।

मातृभावना

कवि का मातृ शक्ति के प्रति मनोभाव देखने योग्य हैं । कवि ने माँ से प्रार्थना करके उसकी गोद मे वात्सल्य सुख की जो कामना की है वह व्यक्तिगत

होकर भी माँ की असीम शक्ति के रूप मे स्थापित करता है, काव्य शक्ति के प्रेरक शक्ति के रूप में मातृ स्तवन और भी महत्पूवर्ण हो उठता है।

माँ के पवित्र प्रेम, सौन्दर्य और शक्ति क्षीण का चित्रण अत्यन्त उदात कोटि का है। कवि माँ के आंचल में मुक्तमन और निश्चिंत है।

कवि का यह भाव भी उल्लेखनीय है कि पत्नी के अधरामृत को पाकर कैसे माँ के पवित्र प्यार का विस्मरण कर उठता है।

कवि ने माँ के प्रति जो स्तवन किया है उनमें कवि की बलवती इच्छा माँ के चरणों के पास रहने तथा माँ के दुलार पाने की इच्छा है। ब्रहत्वपूर्ण पूजा का भाव कवि ने व्यक्त किया है। 'माँ' काव्य के माध्यम से – कवि की इच्छा मातृ हान की है, उसकी कृपा से व्यक्ति को विषय जाल से मुक्ति मिलती है। वह शक्ति है, भक्ति है, राष्ट्र गरिमा है –

" काव्य कल्पना या जो मेरे है विचार , उदगार
माँ, तू इनकी स्रोत
तथा तू ही इनका आधार
पावन हो जाती पवित्रता
छू चरणों की धूल
तेरे आंचल मे लग
काँटे बन जाते हैं फूल।" [69]

माँ के आंचल में बैठकर शिशु ने सृष्टि का रूपदर्शन किया है। प्रथम बार माँ की गोद मे बैठकर आकाश के नक्षत्रों को देखा। सृष्टि दर्शन का आधार माँ की गोद ही है

" काल कराल न तोड़ सका माँ
तेरी गहन गोद का सम्बल
चमक रहे इस समय व्योम

में जितना तारे

पहले पहल इसी गोदी में

चमके सारे। '' [70]

माँ के चरणों में जिसका भाल विनवित होता है, भयकाल में उसका मस्तक नही झुकता। काज जयी बना देता है माँ का सम्बल–

'' सच्ची भक्ति हृदय में धार

तेरे चरणों पर माँ

जो विनमित करता है भाल

उसका सिर नीचा संसार

तीन लोक में कभी न कर सकता है तीनो काम। '' [71]

कवि वीरेश्वर ने माँ के दिव्य ज्योति का दर्शन किया है, माँ के हृदय से प्यार छलकता रहता है। उसमें व्योम विभाजन होता है और धरती का निस्वार सुहासित होता है–

'' जगा करते है देवी ज्योति

छलकता रहता इनमें प्यार

प्रकाशित रहता इनमें व्योम

सुहासित बसुधा का विस्तार ।। ''[72]

मातृ शक्ति को कवि ने जननी, जगदम्बा, सम्बोधन करते हुये उसे प्राणों की अवलम्ब की सज्ञा दी है–

'' ओ जननी जगदम्ब

प्राणों की अवलम्ब

कौन करेगा तेरी समता

पत्थर है नवनीत देख तेरी मृदु मयता। '' [73]

नास्तिक भाव दर्शन

ईश्वर की सत्ता पर प्रश्न चिन्ह उठाते हुये कवि वीरेश्वर ने प्रगतिशील मार्क्सवादी साहित्यकारों की भाति आदमी को सर्वोपरि रखते हुये ईश्वर पर व्यंग्य बौछार करते हैं—

" लक्ष्मी को बना लिया धरनी
अंगरक्षक बनाया विषधर नाग
क्यों न सिरताज बनके राज करो
क्यों न सुरगण तुम्हारा गाये राग
कामधेनु बंधी तुम्हारे घर
और उपवन में कल्पवृक्ष खड़ा
है न बच्चो को दूध नसीब
घर गृहस्थी में है आकाल पड़ा।" [74]

ईश्वर को अज्ञात बड़े सरकार परपंची गजब के हसीन आदि व्यंग बचनो से कवि ने आहत किया है और उसके समानान्तर श्रमजीवी कृषक तथा आम आदमी की वकालत की है—

" सच तो यह है बड़े सरकार
यह दुनिया है तुम्हारा रोजगार
जी में आया तभी बनाते हो
मन में आया तुरन्त मिटाते हो
कुछ तो इसमें तुम्हे मुनाफा है
तुम न बतलाओ पर छिपा क्या है। " [75]

ईश्वर के प्रति इस अनास्था का कारण वीरेश्वर का संवेदनशील हृदय हैं जो अपने आस—पास की भूख गरीबी और लाचारी से तड़प उठता है।

भावुकता में वह ईश्वर को इस आर्थिक विषमता का जिम्मेदार मानकर उससे सवाल करता है। ईश्वर से शिकायत करना भी बहुत गहरे अर्थ में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करना है।–

" बिना परप्ंच तुम्हे चैन कहाँ
तुम्हारी करनी में नेक नैन कहाँ
प्यास बन करके सालते तुम हो
पेट में भूख डालते तुम हो। " [76]

ईश्वर ने आदमी को खिलौना बना रखा है इसके लिये कवि न तो इबादत करना चाहता है और न ही सिजदा –

" पैदा हमको जो किया, शुक्रिया सौ बार
है मगर यह भी तुम्हारा रोजगार ।
इसके लिये कैसा सिजदा व कैसी इबादत
अपने खिलौने बनाना है
तुम्हारी आदत। " [77]

और अंत में कवि ने तथाकथित ईश्वर को धरती के भूखे पेट रहने वालो के साथ रहने का आवाहन किया है–

" रह सकते हो आकर हमारे घर प्यारे
कर सकते हो फांके, ढो सकते हो गम सारे
जो तुम्हारे हमल रह जाये
फिर हमल से रोता बच्चा हो जाय
न पिलाने को दूध हो
न टेंट में धेला
तो करोगे हँस हँस के

चाँद तारों का मेला। '' [78]

कवि वीरेश्वर ने ईश्वर की अवधारणा को ही दुनिया भर के उत्पाद का कारण बताया है। उसे जंग और भुखमरी का कारण माना है–

'' तुम्हीं से दुनिया के उत्पात
तुम्ही हो जंग, भुखमरी तुम हो
दुनिया की सोखते तरी तुम हो
वरना कोई तुमसे फरियाद करे
बे मरे कौन तुम्हे याद करे
सुनिये, सरकार, अब दूध हुआ आखीर
है बहुत बढ गयी दुनिया की पीर
अब सुधर जाइये, आली जहां
वरना हो जायेगा सब कुछ स्वाहा। '' [79]

श्रमजीवियों के प्रति कवि ने विशेष सम्मान का भाव व्यक्त किया है। निराला की 'भिक्षक' की भांति वीरेश्वर का 'रेलवे का कुली ' कविता रेलों में काम करने वाले कुलियों के प्रति संवेदना व्यक्त करती है –

'' सिर पे रखा, सन्दूक पर सन्दूक का पूरा पहाड़
टांग कन्धे से पुलिन्दे और भारी होल्डाल
उँगलियों में से अटैची, बाँह में झोला लिये
है कुली वह रेलवे का जा रहा बोझा लिये
लाल कुर्ता है बदन पर, बाँह में नम्बर बंधा
पैर नंगे हैं, फटी ऐड़ी, पुरानी जांघिया
है अधेड़ी उम्र बीड़ी अधजली है कान में
पेट पापी के लिये ढोतें है बोझ जहान में । '' [80]

'रेलवे का कुली' अपने तन का भरोसा करता है। हड्डियों को तोडकर, घुटनो को फोडकर काम करता है न बोझ से दबता है न काम से डरता है। आराम से जिसका नाता नही है भारी भीड़ को भी पीछा करता हुआ, बोझ लादे हुये कुली आगे चलता जाता है।

कवि वीरेश्वर ने कुली के श्रमिक जीवन का चित्र खींचा है जो अत्यन्त सजीव है–

" अपने तन का है भरोसा
और की आशा नही
होगी दुनिया तमाशा
टेसन तमाशा है नही
हड्डियों को तोड, घुटने फोड़
कर करता है काम
रेलवे का यह कुली पाता है
तब थोड़े से दाम
बोझ से दबता नही
डरता नही है काम से
दम में जब तक दम
है कुछ मतलब नही आराम से
`देखिये वह एक भारी भीड़
को पीछे किये
है चला जाता बढ़ा आगे
कुली बोझा लिये।" [81]

वीरेश्वर की भाव संपदा पर विचार करते हुये डॉ0 ललित का अभिमत है " भाव संपदा की दृष्टि से वीरेश्वर का काव्य नयी संवदेनाओं, नयी भाव भूमियों

को आधार बनाता हुआ, नये जीवन मूल्यों को गढ़ता है और आदमी कें जीने योग्य धरती के अनुकूल साहित्य का सृजन करता है। भाव संवेदना की दृष्टि बहुत थोड़े कवि हैं जो वीरेश्वर की कोटि की सर्जना कर सके हैं। वस्तुतः हिन्दी के गौरव है। '' [82]

हिन्दी के क्रान्तिकारी भाव सम्पन्न विचार शील कवि से हिन्दी जगत और विश्व मानव संस्कृति को बहुत बहुत आशाये है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ0 15
2. निराला आत्म हन्ता आस्था , दूध नाथ सिंह पृ. 259
3. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ0 28
4. वीरेश्वर और प्रेमचन्द का तुलनात्मक अध्ययन (शोध लेख) , डॉ0 शशि प्रभा दीक्षित, पृ0 2
5. भीखू की कुडलिया, 'वर्षा ' शीर्षक वीरेश्वर सिंह पृ0 1
6. तदुपरिवत पृ. 2
7. तदुपरिवत ग्रीष्म विषयक पृ. 1
8. तदुपरिवत पृ. 2
9. तदुपरिवत पृ. 3
10. तदुपरिवत बसन्त शीर्षक पृ0 1
11. तदुपरिवत पृ. 2
12. तदुपरिवत शिशिर शीर्षक पृ. 1
13. तदुपरिवत पृ. 2
14. तदुपरिवत पृ. 3
15. भीखू की कुडलिया, रूप दर्शन पृ0 1
16. तदुपरिवत ऋतुराज शीर्षक पृ. 3
17. भीखू की कुडलिया, संगम स्नान पृ0 1
18. तदुपरिवत पृ. 2
19. तदुपरिवत पृ. 3
20. भीखू की कुडलिया, सूर्योदय शीर्षक पृ0 1
21. तदुपरिवत पृ. 2

22 तदुपरिवत पृ. 3

23 वीरेश्वर और प्रेमचन्द का तुलनात्मक अध्ययन (शोध लेख) , डॉ0 अनामिका द्विवेदी, पृ0 5

24 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ0 22

25 तदुपरिवत पृ. 25

26 रेशमी रूमाल, वीरेश्वर सिंह पृ0 9

27 भीखू की कुंडलिया, रूप दर्शन पृ0 2

28 तदुपरिवत पृ. 3

29 भीखू की कुंडलिया, प्रेम पृ0 1

30 तदुपरिवत पृ. 2

31 रेशमी रूमाल, वीरेश्वर सिंह पृ0 94

32 परिवर्तन, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

33 तदुपरिवत पृ. 2

34 तदुपरिवत पृ. 3

35 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ0 28

36 सौन्दर्य के तत्व, डा0 कुमार विमल पृ. 194 (राजकमल प्रकाशन द्वितीय संस्करण 1981)

37 कला, हसं कुमार तिवारी पृ. 29 (गया मानसरोवर प्रकाशन)

38 आस्था के चरण , डा0 नगेन्द्र पृ0 117, (नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रथम संस्करण 1968)

39 सौन्दर्य के तत्व, डा0 कुमार विमल पृ. 194 (राजकमल प्रकाशन द्वितीय संस्करण 1981)

40 काव्य में सौन्दर्य एवं उदात तत्व, शिवबालक राय पृ0 97,98

41 याद, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

42 अमर यौवन, वीरेश्वर सिंह पृ0 2

43 याद, वीरेश्वर सिंह पृ0 2

44 मुँह मोड़ चले, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

45 स्मृति चित्र, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

46 ऐशिया विहान, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

47 जनतंत्र विहार, वीरेश्वर सिंह पृ0 2

48 तदुपरिवत पृ0 3

49 तदुपरिवत पृ0 3

50 तदुपरिवत पृ0 3

51 गांधी जयन्ती, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

52 तदुपरिवत पृ0 2

53 तदुपरिवत पृ0 2

54 तदुपरिवतपृ0 2

55 गांधी, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

56 तदुपरिवत पृ0 2

57 तदुपरिवत पृ0 2

58 'पूस' से, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

59 'पूस' से वीरेश्वर सिंह पृ0 1

60 तदुपरिवत पृ0 2

61 तदुपरिवत पृ0 2

62 उदबोधन, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

63 तदुपरिवत पृ0 2

64 तदुपरिवत पृ0 3

65 तदुपरिवत पृ0 3

66 तदुपरिवतपृ0 3

67 प्रेमाकुंर, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

68 तदुपरिवत पृ0 2

69 माँ, वीरेश्वर सिंह पृ0 38

70 तदुपरिवत पृ0 40

71 तदुपरिवत पृ0 41

72 तदुपरिवत पृ0 38

73 तदुपरिवतपृ0 73

74 अज्ञात, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

75 तदुपरिवत पृ0 1

76 तदुपरिवत पृ0 2

77 तदुपरिवत पृ0 2

78 तदुपरिवत पृ0 3

79 तदुपरिवत पृ0 3

80 रेलवे का कुली, वीरेश्वर सिंह पृ0 1

81 तदुपरिवत पृ0 2

82 वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ0 30
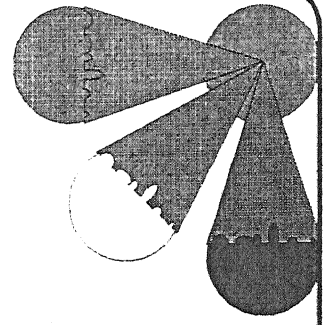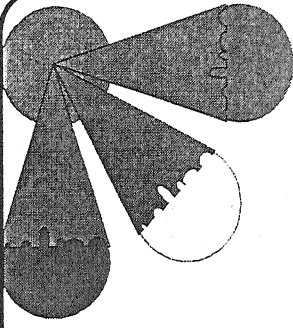
अध्याय-४

वीरेश्वर का कथा साहित्य

कथा साहित्य का परिचय

राष्ट्रीय चेतना की कहानियाँ

आंचलिक कहानियाँ

प्रगतिशील कहानियाँ

कथा साहित्य की उपलब्धियाँ

(कला, स्वाभाविकता, मौलिकता की दृष्टि से)
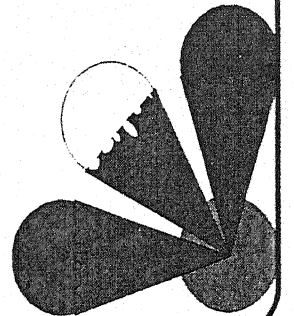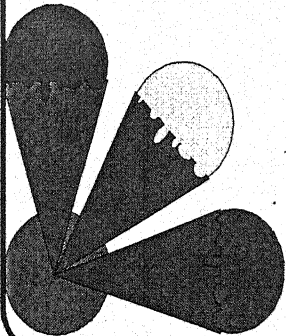
अध्याय-४
आधुनिक कहानी का विकास

"मनुष्य की जययात्रा और उसकी सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ ही साथ कहानी भी विकसित हुई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसका प्रमाण कहानी कहने और सुनने की उसकी आदिम वृत्ति है। 'वह उसकी सामाजिकता की प्रतीक रचनात्मक कहानी की शुरुआत ही इसीलिए हुयी' कि अपने जीवन संघर्ष के दौरान मनुष्य को जो अनुभव संवेदन हुआ, उसे वह दूसरों से कहना सुनना चाह रहा है, अपने अनुभव में दूसरों को भागीदार बनाना उसे जरूरी लगता रहा है। कहानी सिर्फ अभिव्यक्ति का एक माध्यम नहीं है। वह उससे आगे बढ़कर मानवीय संवेदन और संवाद भी है।"[1]

आधुनिक हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास के संदर्भ में डॉ लालचन्द्र गुप्त 'मंगल' का कथन इस प्रकार है –

"यह सर्वविदित है कि हिन्दी कहानी का जन्म हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष, शोषक–शोषित–संघर्ष, जाति वर्ण हिन्दू–मुस्लिम व्यवस्था, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, संयुक्त परिवार प्रथा, वेश्यागमन, आभूषण प्रेम, सामाजिक अनाचार की समस्या आदि राष्ट्रीय और सामाजिक आन्दोलनों के पेड़ में हुआ, और उसी समय के कहानी लेखकों ने उस काल के सम्पूर्ण स्थूलत्व के साथ कहानी–कथा का ढ़ॉचा प्रस्तुत किया है।" [2]

कथा साहित्य के आलोचक डा0 सुरेश सिन्हा ने हिन्दी कहानी; उद्भव और विकास में हिन्दी कहानी के आविर्भाव के जो कारण बताये हैं, वे इस प्रकार हैं –

1. **हिन्दी गद्य का विकास**

2. **हिन्दी उपन्यास साहित्य का आविर्भाव**

3. विश्व कथा साहित्य का आविर्भाव

4. खड़ी बोली गद्य में कथा–साहित्य का आविर्भाव

5. सुधारवादी दृष्टिकोण

डा0 महेश दिनकर के अनुसार कथा साहित्य का विकास क्रम इस प्रकार है –

''भारतीय साहित्य में वेदों, उपनिषदों, संस्कृति और बौद्ध जातकों में अनेक कहानियॉ देखने को मिलती हैं। हिन्दी के मध्ययुग में भी कई कहानियॉ लिखी गई जिन पर फारसी के वासनात्मक प्रेम का प्रमाण स्पष्ट है। कुछ आलोचकों ने इंशा अल्ला खॉ की 'रानी केतकी की कहानी' को हिन्दी की सर्वप्रथम कहानी माना है, अन्य आलेचकों ने किशोरी लाल गोस्वामी की कहानी 'इन्दुमती' को हिन्दी की पहली कहानी स्वीकार किया है।'' [3]

आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहानी के प्रारम्भ का उल्लेख इस प्रकार किया है –

''मार्मिकता की दृष्टि से मानव प्रधान कहानियों को चुने तो तीन कहानियाँ प्रमुख रूप से मिलती हैं – इन्दुमती (1900 ई.) ग्यारह वर्ष का समय (1903) तथा दुलाई वाली (1906)। यदि 'इन्दुमती' किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो, हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी है। इसके उपरांत 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाई वाली' का नंबर आता है।'' [4]

वस्तुतः आधुनिक हिन्दी कहानी का विकास प्रसाद और प्रेमचन्द्र के साथ होता है। डा. देवेश ठाकुर के अनुसार 'आज हम जिस कथा–साहित्य को हिन्दी कहानी के नाम से अभिहित करते हैं, उसका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। पिछले 75 वर्षों की अवधि में ही उसका वास्तविक उद्भव, विकास और

प्रतिष्ठापन हुआ है। लेकिन इस अल्पावधि में ही हिन्दी कहानी में जितने विभिन्न आयामों का स्पर्श किया है, जितनी विभिन्न भूमिकाओं पर वह व्यक्त हुई है और जीवन के जितने विविध रूपों को जितनी विविध शैलियों के साथ उसने उकेरा है, उससे इस विधा की अमित सम्भावनायें सम्मुख आई हैं।'' [5]

डॉ. महेश दिवाकर ने 90 वर्षों की रचनाओं को खण्डों में विभाजित करने के लिए दो विभाग बनाए हैं–

१. आजादी से पहले की हिन्दी कहानियाँ

२. आजादी के पश्चात की हिन्दी कहानियाँ

आजादी से पहले की हिन्दी कहानियों को सुविधा की दृष्टि से तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं [6]–

१. प्रेमचन्द्र से पहले की हिन्दी कहानी (१६०० से १६१५ ई.)

२. प्रेमचन्द्र के समय की हिन्दी कहानी (१६१६ से १६३६ ई.)

३. प्रेमचन्द्र के बाद की हिन्दी कहानी (१६३७ से १६४७)

आजादी से पहले की हिन्दी कहानियाँ

(क) प्रेमचन्द्र से पहले की हिन्दी कहानी का विकास 1900 ई. से 1915 तक माना जाता है। हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने हिन्दी कहानी का आरम्भ इंशा अल्लाह खॉं की 'रानी केतकी की कहानी' से माना है। हिन्दी कहानियों के विकास में लल्लू लाल जी की कृत 'प्रेमसागर' और सदल मिश्र कृत 'नासिकेतो पाख्यान' की रचना भी जुड़ी हुई है। राजा शिव प्रसाद सिंह सितारे हिन्द कृत 'राजा भोज का सपना', भारतेन्दु कृत 'एक अद्‌भुत के अपूर्व स्वप्न',राधाचरण

गोस्वामी कृत, 'यमलोक की यात्रा आदि कहानियाँ प्रारंभिक विकास क्रम से जुड़ी हुई हैं। कहानी साहित्य की पत्रिकाओं में 'सरस्वती और इन्दु' का नाम उल्लेखनीय है, जिसके माध्यम से निम्नलिखित कहानियॉ प्रकाश में आयी हैं –

1.	इन्दुमति	किशोरी लाल गोस्वामी	1900 ई०
2.	मन की चंचलता	माधव प्रसाद मिश्र	1901 ई०
3.	गुलबदन	किशोरी लाल गोस्वामी	1902 ई0
4.	पंडित और पंडितसी	गिरजादत्त बाजपेयी	1903 ई0
5.	ग्यारह वर्ष का समय	रामचन्द्र शुक्ल	1903 ई0
6.	दुलाई वाली	बंग महिला	1907 ई0
7.	विद्या–विहार	विद्या निवास मिश्र	1909 ई0
8.	राखी बन्ध भाई	वृन्दावन लाल वर्मा	1909 ई0
9.	ग्राम	जयशंकर प्रसाद	1911 ई0
10.	सुखमय जीवन	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	1911 ई0
11.	रसिया बालम	जयशंकर प्रसाद	1912 ई0
12.	परदेशी	विश्वम्भर नाथ जिज्जा	1912 ई0
13.	कानो में कंगना	राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह	1913 ई0
14.	उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा	1915 ई0

इस काल की कहानियों में तीन प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। पहली महिला प्रधान

आदर्शवादी कहानियाँ। जयशंकर प्रसाद और राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह इस प्रवृत्ति के उल्लेखनीय कहानीकार हैं। दूसरी प्रवृत्ति है मनोविनोद और परिहासमूलक कहानियों की। इसके उल्लेखनीय कथाकार जी.पी. श्रीवास्तव और विश्वनाथ जिज्ज्ञा हैं। तीसरी प्रवृत्ति उन कहानियों की, जिसने साधारण जीवन के यथार्थ को कथ्य बनाया है। गुलेरी, प्रेमचन्द्र और कौशिक इसी प्रकार के कथाकार हैं। इन कहानियों में आदर्श और अभिजात्य, तिलस्मी और रोमांच के विपरीत साधारण मनुष्य और सामान्य जीवन की वास्तविक स्थितियों को केन्द्रित किया गया।'' [8]

इस काल के कहानी लेखकों ने बहुत से लेखकों और पाठकों को कथा साहित्य की ओर आकर्षित किया।

(ख) प्रेमचन्द्र के समय की हिन्दी कहानी (१६१६ ई. से १६३६ ई.)

प्रेमचन्द्र को हिन्दी कहानी के विकास में मील का पत्थरा माना जाता है, उन्हें कथाकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। उपन्यास और कहानी दोनो क्षेत्रों में आपने उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। प्रेमचन्द्र ने उर्दू में कहानियाँ लिखना शुरू किया, किन्तु हिन्दी में उनकी प्रथम मौलिक कहानी 'पंचपरमेश्वर' (1916) में प्रकाशित हुई। प्रसाद ने 1911 ई. में इन्दु में 'ग्राम' नामक कहानी प्रकाशित करायी। प्रेमचन्द्र की उर्दू कहानियों के संग्रह 'सोजेवतन' को अंग्रेज सरकारने जलाकर नष्ट कर दिया था। प्रेमचन्द्र ने आदर्शोन्मुख यर्थाथवादी परम्परा का सूत्रपात किया, प्रसाद जी ने भाव मूलक परम्परा का। प्रेमचन्द्र की कहानियों में प्रथम बार कृषक वर्ग का जीवन यथार्थ चित्रित हुआ।

भाषा–शैली की दृष्टि से भी अनेक परिवर्तन हिन्दी कहानियों में दिखाई पड़े। डा. शिवकुमार शर्मा के शब्दों में '' विषय व्यापकता, चरित्र–चित्रण की

सूक्ष्मता, विचार व भाव गंभीरता, प्रवाहपूर्ण सुबोध शैली मुहावरामयी, जुबानदानी, तथा लोक संग्रह की रचना से ओतप्रोत कहानियॉ अद्वितीय बन पड़ीं।'' ९

चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी, विश्वम्भर नाथ कौशिक, पृथ्वीनाथ भट्ट आदि प्रेमचन्द्र की परम्परा के कहानीकार हैं। इसके अतिक्ति सुदर्शन की 'हार की जीत (1920), पं. ज्वाला प्रसाद शर्मा की 'विधवा (1914), प्रसाद की आकाशदीप, पुरस्कार, गुण्डा, देवस्थ, साहवती, ब्रतभंग आदि कहानियां, रामकृष्ण दास कृत 'रमणी' रहस्य आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचन्द्र युग के कथाकारों में आचार्य चतुरसेन , ऋषभचरण जैन, वीरेश्वर सिंह आदि कहानीकार विशेष उल्लेखनीय हैं।

(ग) प्रेमचन्द्र के बाद की कहानी (१९३७ ई. से १९४७ ई. तक)

1936 ई. में प्रेमचन्द्र की मृत्यु के पश्चात हिन्दी कहानी के क्षेत्र में विशाल परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। डा. सुरेश सिन्हा के शब्दों में ''ज्वालामुखी फट चुका था और उसके विस्फोट को तथाकथित 'समाज सुधारक रोक सकने में असमर्थ थे। समाज में मध्य वर्ग नवीन चेतना से संचालित हो रहा था और उसे अपना भी महत्व समझ में आने लगा था। वह यह समझने लगा था कि उसकी पीड़ायें उसका दुःख दर्द, उसकी भावनायें, प्रेम, विवाह, निराशा, कुंठाएं इसके अपने-अपने अर्थ हैं और समाज को उसके बैयक्तिक मनोभावों को समझना होगा।'' 10

प्रेमचन्द्र कहानीकारों में अज्ञेय, जैनेन्द्र कुमार और इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, चन्द्रगुप्त विद्याधर, भगवती प्रसाद वर्मा, अमृत लाल नागर, आचार्य चतुरसेन, विष्णु प्रभाकर आदि रचनाकार हैं। इन कथाकारों ने मनोविज्ञान, नयी अन्तर्दिष्ट, संवेदनशीलता, दार्शनिकता, आन्तिरिक समस्याएं, व्यक्तिवादी

चेतना को लेकर हिन्दी कहानी को विकसित किया।

हिन्दी कहानी की प्रगति में 'सरस्वती', 'चाँद', 'इन्दु', 'माया', 'कहानी', 'सरिता' आदि पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आजादी के पश्चात की हिन्दी कहानी

देश के राजनीतिक बदलाव, आजादी, आजादी के बाद चाटुकारिता, भाई भतीजावाद, रिश्वतखोरी, काला बाजार, विसंगति, भीड़ आदि को लेकर हिन्दी कहानी के तेवर बदले। सामाजिक, आर्थिक, एवं वैचारिक क्रान्ति का प्रभाव भी कथा साहित्य में पड़ा। "भारत विभाजन और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश की परिस्थितियां बदलीं। भारत के समय साम्प्रदायिक दंगों के प्रभाव तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की राजनीति, भ्रष्टाचार और असंतोष ने कहानीकारों को सोचने के लिए विवश किया।"

उक्त बदली परिस्थितियों में नयी कहानियों को जन्म मिला। शिल्प के पुराने चौखटे को तोड़ कर आधुनिकता का आत्मसात करने के लिए नये चिन्तन से युक्त कहानियों को नयी कहानी कहा गया। नयी कहानी मात्र जीवन खंडो या घनीभूत क्षणों का सम्प्रेषण न होकर, उसमें निहित अर्थों या मूल्यों की कहानी है। यह नवीनता केवल शिल्पगत नहीं, कहानी कार की नवीन दृष्टि पर आधारित है।"[11]

राजेन्द्र यादव की 'एक कमजोर लड़की की कहानी', कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', निर्मल वर्मा की 'परिन्दे', मोहन राकेश की 'मिस पाल', रेणू की 'मारे गये गुलफाम' आदि कहानियां हैं, जो स्वतंत्रता के ठीक बाद के वर्षों में लिखी गयी हैं। 'नयी कहानी किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष की सम्पत्ति नहीं है, वह तो

आप की जिन्दगी का सही प्रतिबिम्ब है। हम जितनी तरह से जिन्दगी जीते हैं, नयी कहानी उसका प्रतिरूप है। युग की तमाम संवेदना और संचेतना की अभिव्यक्ति है।'' [12]

''नये यथार्थ को खोजने वाली कहानी नयी कहानी है। बीते हुए नए ढ़ंग से खोज करने वाली कहानी नयी है।'' [13]

नयी कहानी को समकालीन कहानी सचेतन कहानी , समांतर कहानी, आंचलिक कहानी, अ–कहानी, शहरी कहानी, ग्रामीण कहानी आदि नामों से पुकारा जाने लगा। मोहन राकेश ने विभिन्न नामों को देखकर व्यंगात्मक शब्दावली में कहा ' नयी कहानी गॉव की कहानी है, नये शिल्प की कहानी है, सांकेतिकता की कहानी है, सामाजिक संघर्ष की कहानी है, अपरिचित जीवन की कहानी है,.......नयी कहानी सभी तरह की कहानी है और न जाने किस तरह की कहानी है।''

हिन्दी कहानी जो स्वतंत्रता के बाद अस्तित्व में आई उसे नयी की संज्ञा देने वाले डा0 नामवर सिंह, मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, रमेश वक्षी आदि हैं। जिन्होने नयी कहानी नाम का विरोध किया है, उसमें डा. शिवदास सिंह चौहान प्रमुख हैं।

वस्तुतः नये कहानीकार वस्तु और शिल्प दोनो दृष्टियों से कहानी के स्वरूप के परिमार्जन में व्यस्त हैं, इसका श्रेय तो उन्हें देना ही होगा। नये कहानीकार ने स्वतंत्रता के बाद के समाज की विभिन्न स्थितियों को देखा है, पहचाना है और उसे अनुभव के धरातल पर रखकर यथार्थ रूप दिया है। इस स्थिति को चिन्हित करने के लिए उसे नये भाव बोध, नयी शैली, नया शिल्प, नया कथ्य तथा नयी भाषा की सर्जना की है। वस्तुतः कहानीकारों का प्रयास निरंतर

इस ओर है। कहानी का भविष्य उज्जवल है और वह दिन दूर नहीं जब भारतीय हिन्दी कहानी विश्व साहित्य के लिए अनुकरणीय बनेगी।

वीरेश्वर का कथा साहित्य

'उँगली का घाव' वीरेश्वर सिंह का एक मात्र प्रकाशित कहानी संकलन है, इसका प्रकाशन 1945 ई. में कलाकुंज 120 छोटी पियरी, काशी मे हुआ।[14]

इसमें कुल 14 कहानियाँ हैं। कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'उँगली का घाव' है। ''कथानायक शैल और नायिका सरला के परिवार के आपसी सम्बंध हैं, जहां प्रणय सम्बन्धों का कोई अवसर नही है। सरला के पिता के अनुरोध पर शैल आठवीं कक्षा की अंग्रेजी पढ़ाते हैं। सरला को पहले दिन ही पढ़ाने के लिए पेंसिल बनाते समय शैल की उँगली कट जाती है और सरला एक पनकपड़े से घाव को बांध देती है। शैल उस पनकपड़े को बाद में स्मृति स्वरूप एक चॉदी की डिब्बी में रखकर संजोता हैं और एक कागज का टुकड़ा जिसमें 'सरला का प्रेमोपहार' लिख कर रख देता हैं। परीक्षा के अंतिम दिन सरला शैल के पास आती है और उस आकर्षक चॉदी की डिब्बी को शैल के मना करने पर भी देखती है और उसके ऊपर रखे हुए पनकपड़े को और कागज पर लिखे हुए 'सरला का प्रेमोपहार' देखकर स्नेहाभूति से अभिवृत हो उठती है। कालान्तर में सरला का विवाह हो जाता है । सरला अपने बच्चों को लेकर शैल के पास जाती है और शैल बच्चे का चुंबन करके सरला के लिए गए एक चुम्बन की स्मृति को ताजा करता है और अपनी उंगली की ओर देखता है। पड़ोस के पारिवारिक सम्बन्धों के कारण जहां प्रेम के सम्बन्धों का मर्यादाओं के कारण प्रकट नहीं किया जाता, 'उंगली के घाव' द्वारा इस मार्मिक संवेदना को व्यक्त किया गया है।[15]

'वह बात' एक दूसरी कहानी है, जिसमें शरवती एक पढ़ने वाली लड़की

है, जो घर आकर भाभी से अपने कपड़ों की सिलाई आदि के बारे में तो बात करती है, किन्तु भीतर–भीतर वह एक नव युवक को चाहती है। शरवती की बहन मुन्नी ने बताया कि वह उस युवक की कविताओं को पसन्द करती है। मुन्नी उस युवक को शरबती की ओर से एक गुलाब का फूल फेंक जाती है। युवक बिना हस्ताक्षर के शरबती को एक प्रेमपत्र मुन्नी के माध्यम से भेजता है। नव युवक शरबती द्वारा भेजे गये फूल को चूमता है और तकिये में लगा लेता है। इस प्रकार प्रेम की अभिव्यक्ति सीधे न होकर माध्यम से होती है, और लोक मर्यादाओं के बीच से उस बात का ध्यान रखा जाता है।'' [16]

संकलन की तीसरी कहानी, **'बाँसुरी'** है, जिसमें कैलाश एक साधारण परिवार का युवक है और मालती इनकम टैक्स ऑफिसर की लड़की है। कैलाश की बाँसुरी सुन कर मालती मुग्ध हो जाती है। किन्तु गोत्र की भिन्नता और निर्धन होने के कारण वह विवाह नहीं कर पाता। अन्त में कैलाश का विवाह परम्परागत तरीके से तय हो जाता है और कैलाश अपने मित्र से बाँसुरी न बजाने का कारण बताता है और बाँसुरी को तोड़ कर फेंक देता है। कैलाश का मित्र उस टूटी बाँसुरी को सहेज कर रखता है।" [17]

'माया' संकलन की चौथी कहानी है; जिसमें जितेन्द्र और मोहनी, जो आगरा से इलाहाबाद जा रहे हैं, जितेन्द्र को 80/– रु. मासिक पर नौकरी मिली है। मोहनी सिरके की मटकी और सिलवटा, बाल्टी, शीशी, बोतल, डिब्बे, जूते की पालिश, दीवार की कीलें, सभी सामान ले जाना चाहती है। जितेन्द्र किताबें और जरूरी सामान ले जाना चाहता है। एक पुरानी शीशी टिंचर आयोडीन को मोहनी ले जाना चाहती है, किन्तु जितेन्द्र उसे फेंक देता है। नये स्थान पर एक किराये का मकान मिला। सीलनभरा चार कमरों वाला किन्तु बरसात आने पर एक चारपायी ले जाते समय जितेन्द्र का पैर छिल गया और उसे डर है कि यह फोड़ा

न बन जाये। छट्टियां नहीं मिलेंगी नई सर्विस में। मोहनी टिंचर आयोडीन की शीशी, जिसे जितेन्द्र ने फेंक दिया था, उसे जितेन्द्र की नजरों से छिपाकर ले आयी थी। आज उसी बेकार समझने वाली चीज टिंचर ने जितेन्द्र की आशंका को मिटा दिया। मोहनी खुश हो गयी। घर गृहस्थी की छोटी–छोटी चीजें भी बड़ी महत्व की होती हैं। [18]

'मोटर का मूल्य' संकलन की पॉचवी कहानी, जिसमें दहेज उत्पीड़न की समस्या को उभारा गया है। [19] डिप्टी साहब और उनकी माँ बुढ़िया डाइन मोटर के लिए छः हजार रूपये मांगते हैं और पैसे न दे पाने के कारण श्यामा को चौथी में विदाई नहीं कराते। श्यामा इकलौती बेटी थी। धूमधाम से उसकी शादी हई। शादी में सबकुछ दिया गया। श्यामा के लाख अनुनय विनय पर भी उसका पति केदार पीठ फेर लेता है और रुपये की मांग करता है। श्यामा ससुराल न जाने का निश्चय करती है और घुल–घुल कर अपने प्राण छोड़ देती है। उसकी तकिया के नीचे से उसके पति केदार का चित्र मिलता है, जिसमें केदार किसी सिनेमा की औरत के साथ खड़े मुस्करा रहा है।

'नीनी' संकलन की छठवीं कहानी है, जिसमें मखमली लड़की का एक बिल्ली के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया गया है[20] और निनी के भाग जाने पर वह उसका पीछा करती हुई गिर जाती है और गहरी चोट के कारण उसका प्राणस्त हो जाता है। पशु पक्षियों के प्रति मानवीय संवेदना इस कहानी की विषय वस्तु है। नीनी (बिल्ली) भी मखमली के न रह जाने पर भी उसके कमरे में बैठकर मखमली की प्रतीक्षा करती रहती है।

'दृष्टि'[21] कहानी संकलन की सातवीं कहानी है, जिसमें कहानी कार ने 'धन्नो' नामक नव यौवना का वर्णन किया है, जो मदभरी युवती थी, सोलहवाँ साल

उठ रहा था, धन्नो की शादी हुयी, शादी के बाद लौटी तो वह ससुराल जाने को तैयार न हुयी, उसने उपनी छत से मिली छत पर एक युवक को देखा, युवक ने उस युवती को। दोपहर में सबके सो जाने पर धन्नो की छत पर युवक की छत की तरफ एक गुसलखाना था, जहां वह किसी न किसी बहाने आ जाती।.उसने बताया कि उसका पति गॅवार और कमजोर है। चार दिन में सब बाते हो गयीं और पॉचवे दिन वह नियत स्थान पर आयी और नग्नतन स्नान करने लगी। युवक ने उसका नग्नतन देखा तो उसे मॉस–ही मॉस दिखाई पड़ा और वह वहां से भग आया और ईश्वर को धन्यवाद दिया जिसने उसे दृष्टि दे दी।

'अंतराग्नि' [22] संकलन की आठवीं कहानी है, जिसमें रमेन्द्र अंगीठी में चिट्ठियां जला रहा था। हृदय की भावनाओं का बलिदान कर रहा था। सुशीला उसकी पत्नी थी और एक बालक था। विवाह के पूर्व की प्रणयगाथा थी। रमेन्द्र मालती को प्यार करता था, किन्तु दोनो के विवाह, पृथक–पृथक हो गए। चिट्ठियॉ जल जाने पर रमेन्द्र ने अपने मित्र सरोज से कहा कि अब शान्ति मिली और रमेन्द्र ने बताया कि मैं मुक्त होने के लिए तड़पता हूँ, मैं रोता हूँ, आंसुओं से धोता हूँ, किन्तु यह नहीं छूटता। रमेन्द्र ने कहा 'मैं कितना पापी हूँ। मैं अपनी देवी सी स्त्री से वास्तविक प्रेम करने के अयोग्य हो गया हूँ। उससे मिलने के लिए वैसे उमड़कर उत्सुक नहीं दौड़ता जैसा कि मालती के लिए। मैने अपनी आत्मा का कौमार्य, उसकी पवित्रता नष्ट कर दी और देखता हूँ कि जिन्हें विवाह करना है, उन्हें इसकी कितनी आवश्यकता है। आत्मा विनष्ट कौमार्य फिर कहां मिलता है। अंतराग्नि इसी आत्मा की पवित्रता की अग्नि है।

'परिवर्तन'[23] संकलन की नौवीं कहानी है। जिसमें रामू फेरी लगाने वाला जो मोम की चिड़िया बनाता है, उनमें लाल, पीला हरा रंग देता है और उन्हें

एक डोरे के सहारे अपनी लकड़ी से झुला देता और आवाज करता –

"लाला की चिरैया है, भइया की चिरैया है

जिसके होवेगे खिलैया, वही लेवेगा चिरैया

वाह वाह री चिरैया" ।

एक बालिका मचल पड़ी। सौदागर ने दो पैसे की चिरैया देने को कहा, वृद्धा ने देने से मना कर दिया। बालिका की आंखें डबडबा गयी। सौदागर से रहा नहीं गया। उसने कहा तम्बाकू न पीता, बिना साग के खा लेता लेकिन बालिका का दिल तो न टूटता। बच्चों का मन तोड़ना, राम–राम भगवान की मूर्ति तोड़ना है। सौदागर तर्क–वितर्क करता रहा किन्तु अंत में उसे उस बालिका के घर के पास पहुँचकर आवाज लगायी और पैसे–पैसे में देने को कहा। देखते ही देखते सब चिरैया बिक गयी। सौदागर ने देखा कि उसका मूल भी नहीं मिला, दो आने का घाटा रहा और मेहनत अलग। पर उसका ह्रदय आनन्द से ओत–प्रोत था। उसकी आत्मा खिल रही थी। मुस्कराते हुए पैसों की ओर देखकर वह कह उठा, रामू तुम्हारे ऐसे खुद बिकनेवालों से रोजगार न होगा। इसके लिए काठ का ह्रदय चाहिए। इसी बीच रामू का छोटा बालक गोद के लिए लिपट पड़ा। रामू ने उसे उठाकर चूम लिया। बालक को प्यार करके जितनी शान्ति उसे आज मिली, उतनी कभी न मिली थी।

'रेशमी रूमाल' [24] संकलन की दसवीं कहानी है। वीरेन्द्र चमेली के कुंज के पास टहल रहा था तभी किसी ने उससे ऑखें मिलाकर कहा 'मुझे क्या यों ही छोड़ जाओगे? सामने एक खूबसूरत नीला रेशमी रूमाल पड़ा था, जैसे कोई मुग्धा नीलमपरी पृथ्वी पर अपना रास्ता भूल गयी हो। रूमाल को पाकर वीरेन्द्र

भावों के संसार में खोने लगा। वीरेन्द्र पार्क गया, रूमाल लेकर, अवश्य यह रूमाल पार्क में आने वालें में से किसी की होगी। वीरेन्द्र ठीक उसी जगह बैठा जहॉ उसे रूमाल मिली थी। शाम को एक युवती एक बच्चे के साथ उसी स्थान पर आयी और वीरेन्द्र ने उन्हे रूमाल वापस दे दिया, परस्पर धन्यवाद के साथ् युवती ने एक नजर वीरेन्द्र पर डाली और वह नजर तथा रूमाल वीरेन्द्र के मानस पटल पर अंकित हो गए। धीरे–धीरे दो अपरचित परिचित बन गये। वीरेन्द्र और बेला (जिसका रूमाल खो गया था) दोनो एक दूसरे के निकट आ गये। बेला पार्क पहुँच जाती। वह अक्सर अकेली ही अपनी सखियों के घर जाती। नए विचारों की युवती थी। चमेली की कुंज के पास बेला बैठी थी और उसके बगल में वीरेन्द्र। दोनो साथ–साथ चुप बैठते, हाथ में हाथ डाल कर अपने ह्मदयगति भावों का आदान–प्रदान करते। वीरेन्द्र ने बेला से एक दिन वह रूमाल वापस मांग लिया था, किन्तु आज उसे फिर लेता आया। बेला से कहा इस रूमाल के दो टुकड़े होंगे। मेरा विवाह और जगह... वीरेन्द्र ब्राह्मण है और बेला अब्राह्मण, अतएव्दोनो का सम्बंन्ध नहीं हो पाया। रूमाल के दो टुकड़े हो गए। दोनो सिसकियों से भर गए, दोनो के आंसू गिर रहे थे। वीरेन्द्र ने पहली बार बेला का चुम्बन लिया था। वीरेन्द्र विवाहित हो गया, धनी हो गया पर उसका ह्मदय भिखारी हो गया और विधुर। अक्सर वीरेन्द्र रूमाल के टुकड़े को छाती से लगा लेता है और कुछ क्षणों के लिए रेशमी रूमाल के टुकड़े से जी उठता है।

'कबूतर'[25] संकलन की ग्यारहवीं कहानी है। जिसमें नायिका प्रेमा से नायक कबूतरों के बारे में बताता है। प्रेमा बीमार है और कबूतरों को बिल्ली द्वारा खा लेने के बाद प्रेमा ने अपने पति से अपनी मृत्यु का संकेत किया। प्रेमा के निध ान के बाद विधुर प्रेमी ने कबूतर को देखकर जो अन्य कबूतरों से अलग दाने चुगता है। गुटरगू करता है। विधुर जीवन को भी एकांकी कबूतर से संबल

मिलता है। नायक भी पुनर्विवाह के लोभ से बच जाता। एक पत्नी प्रेम और विधुर जीवन की पवित्रता पूर्वक व्यतीत करने का संदेश देने वाली यह कहानी 'कबूतरा' के प्रतीक से अत्यन्त कलापूर्ण हो गयी है।

'राखी'[26] संकलन की बारहवीं कहानी है। खोखले आदर्शों के लिए यथार्थ जीवन की उपेक्षा पर आधारित यह कहानी प्रेमलता द्वारा नायक को राखी बांधने से प्रारम्भ होती है। यह राखी जो सांपिन की तरह लग रही थी। परिवर्तन पुनर्जन्म की पीड़ा कितनी वेधक और क्रूर होती है। हेमलता जो कभी प्राणायनी थी, अब वह बहन के रूप में प्रस्तुत है। राखी का बंधन तोड़ना मेरे लिए सम्भव नहीं।

आगरे में पिता की नौकरी के कारण दोनो परिवारों का सम्पर्क हुआ। हेमलता को जीवन संगिनी के रूप में पाने के सपने और हेमलता में युवक के प्रति आकर्षण। धीरे–धीरे दोनो एक दूसरे को अच्छी तरह जान गये। राखी लेकर हेमलता आयी और उसके लिए राखी मात्र सम्पर्क का बहाना था किन्तु मेरे लिए 'राखी' का मूल्य था। राखी हेमलता से नहीं बंधवाना चाहता था पर आयी हुई हेमलता की राखी को कैसे लौटाता। हेमलता ने राखी बांधी, मत्थे पर लाल टीका लगाया। हेमलता बहन कहते कहते मेरा कंठ अवरुद्ध हो गया। मेरे मन में आया इसे तोड़ दूँ, हाथ ही काट कर फेंक दूँ। लेकिन वह सांपिन सी राखी मेरे हाथ में लिपटी ही रहीं। औपचारिकता के कारण हृदय और आत्मा को दबाने का यह उपक्रम मानवीय नहीं है।

'बोध'[27] संकलन की तेरहवीं कहानी है, 'मनोहर और लक्ष्मी' दोनो एक दूसरे में तल्लीन थे और विमुग्ध थे। दोनो को विवाह के बंधन में बँधना था। वे विवाह के दिन की प्रतीक्षा में हैं। लक्ष्मी के पिता की दृष्टि में मनोहर गरीब था

किन्तु वे बुढ़ापे के झंझट से बचने के लिए लक्ष्मी के हाथ यथाशीघ्र पीले करना चाहते थे। 'मनोहर' ने अन्य शादी के प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया, उसे लक्ष्मी के आगे सभी कंगाल लगते हैं, किन्तु मनोहर की शिक्षा पूरी होते–होते लक्ष्मी के पिता ने रंग बदला और मनोहर के पिता के साथ इस रुखाई से व्यवहार किया कि उनके आत्म सम्मान को बड़ी चोट पहुँची और मनोहर के पिता ने कहा लक्ष्मी के अलावा भी संसार में और भी कुमारियाँ हैं। मनोहर का बोध कुछ दिनों तक सोता ही रहा।

मनोहर लक्ष्मी के अतिरिक्त कहीं विवाह के लिए तैयार नहीं था किन्तु बूढ़े पिता की अन्तरात्मा के अनुरोध तथा जबान की आज्ञा टालने में वह असमर्थ था। मनोहर के पिता के लिए यह सम्बन्ध सभी दृष्टियों से उचित था। लड़की का परिवार उदार था। बी.ए. तक शिक्षित थी तथा उसके पिता आखिरी लड़की के लिए सभी कुछ करने को तैयार थे। लड़की को दिखाने को भी तैयार थे। अन्यमनस्कता के साथ मनोहर को लड़की देखना पड़ा। लक्ष्मी की तुलना में मनोरमा की सादी सुन्दरता उसे न भायी। वह सादी सुन्दरता के पीछे छिपे ह्रदय–रत्न को नहीं पहचान सका। 8 वर्ष बीत गये।

मनोहर को पिता ने शादी के लिए तैयार किया। मनोहर में न कोई इच्छा रह गयी न उमंग। पी.सी.एस. के पर्चे जान–बूझकर बिगाड़ दिये। वह लक्ष्मी को भूल नहीं पाया था। जब कभी वह लक्ष्मी के घर की महराजिन से लक्ष्मी की उदासीनता के बारे में सुनता तो वह विकल हो जाता। मनोहर को अंधकार दिखता, जीवन अर्थहीन। मनोहर ने अपने मित्र से कहा मैं तो जाता हूँ, लिख देना कि मैं शादी न करुंगा। राजीव ने मनोहर को समझाया कि "जब सारी बात तय हो चुकी, सब जगह खबर दी जा चुकी तब तुम चले हो इंकार करने। लड़की की बदनामी का भी ध्यान दो तथा लड़की की नाक, ठोढ़ी ही नहीं, उसके गुणों को

भी देखो। मनोरमा ने अपने पिता को लिखा था कि यदि वे उसकी शादी पॉच रुपया कमाने वाले से कर देंगे; तब भी वह उस मनुष्य के साथ सुखी रहेगी। मनोहर परियों और गृहलक्ष्मियों में अंतर होता है। '' विवाह के बाद मनोहर को तेज बुखार हो गया। मनोरमा का हाल भी बुरा था, उसने तीन दिन से खाना नहीं खाया एक रात अर्न्तद्वन्द से गुजर चुके मनोहर ने देखा कि दीपक लिए हुए कोई आ रहा था। वह मनोरमा ही थी। आज वह सुन्दर दिख रही थी, सुन्दर लग रही थी। सौन्दर्य बोध आज बदल गया मनोरमा अंशुमन थी, करुण थी, मनोहर के लिए चिंतित थी। मनोहर का ह्वदय बदल गया, वह मनोरमा को प्यार की दृष्टि से देखने लगा और अपने जीवन को सार्थक समझने लगा।

काजल' [28] संकलन की अंतिम कहानी है। जिसका नायक सरोज अपनी कहानी खुद कहता है दो माँ हैं, बड़ी माँ से चार लड़कियाँ व छोटी माँ से ... और एक माँ और थी, जिनसे पॉच कन्याएं हुईं। पत्नियों के मर जाने पर पुरुष चिन्ता नहीं करते। पिता इंजीनियर थे। दादा कांट्रैक्टर। मैं घर में इकलौता बेटा था। छड़ी से बात करता था। मुझे याद नहीं मेरी शादी कब कर दी गयी। सुनयना माँ के पास ज्यादातर लेटती है। सुनयना बीमार थी। नैनीताल चली गयी। मुझे स्वप्न में अनेक दृश्य दिखाई पड़ने लगे। एक पीली दुबली मूर्ति की स्मृति बराबर बनी रहती। मेरी शादी इस तरह क्यों कर दी गयी। सरोज विक्षिप्त सा सोचता रहता। मकान से जुड़ी एक खिड़की थी। इसी से होकर अपने सपने मिटाने जाता। रात को साढ़े बारह बजे तक लौट आता। खिड़की नई हवा देती लेकिन अंतरात्मा में पुराना विचार सुलगता। एक मास्टर साहब, एक युवती और बच्ची किराए पर आ गये और खिड़की वाले मार्ग पर रहने लगे। आंगन में एक बालिका मुझसे खेलने लगी। आदत के मुताबिक मैं तैयार हुआ। उसने एक उँगली से गाल पर मारकर बोली, आज खिड़की न खुलेगी .... उसकी भौंहे मटक उठीं। मैं कैद हो

गया घर में ही। यही मेरी मुक्ति थी, सरोज तुम शादी क्यों नहीं कर लेते, तुमने की है? देखते नहीं, एक बच्ची भी उसने कभी नहीं बताया कि बच्ची उसकी सखी की है। उसने मुझे खिड़की के रास्ते बाहर जाने से रोक दिया। मेरा चुम्बन लिया और कहा तुम फिर से विवाह कर लो, एक सदगृहस्थ की तरह जियो। मैं अपनी माताओं से शादी की बात पर नाहीं कर देता पर यह कौन है जिसकी मनुहार भरी वाणी ने प्यार की चितवन ने, एक चुम्बन ने मुझे बॉध लिया। मैं विवाह के लिए तैयार हो गया। दिल्ली गया, मेमसाहब को देखने और पसंद करने, लौटकर घर आया तो वह प्रेरक महिला नहीं मिली। सिर्फ उसका एक पत्र मिला।

प्यारे सरोज,

मैं जा रही हूँ– मुझे जाना ही पड़ रहा है। मैं जैसा जीवन व्यतीत कर रही हूँ। उसमें एक जगह रहना ठीक नहीं होता। पर आशा है तुम मेरी तरफ से गलत धारणा नहीं बनाओगे। मेरी जिन्दगी का क्या ठिकाना? शायद किसी दिन गोली ही खाकर मरना पड़े। ... ईश्वर करे तुम खुश रहो और अच्छी तरह रहो। यह न भूलना कि प्रत्येक व्यक्ति एक राष्ट्र है और अपने को खो देने से बढ़कर और पाप नहीं।

'तुम्हारी फिर न मिल सकने वाली

रहस्यमयी'

पॉच वर्ष बीत गये। रंगीन फ्रॉक पहने 3 बरस वाली सोना मेरी ओर दौड़ी आ रही है। ऑखों में बड़ी अम्मा ने इतना काजल लगा दिया है। मैने डॉटा खबरदार जो यहां आयी। आकर जब देखों सारे कपड़े काले कर देती है। सोना बड़ी हो गयी। बड़ी अम्मा ने मेरे कान उमेठे, चुप रह, जब देखो, डॉटा करता है, बच्चों को।

'काजल' न दें तो क्या अन्धी बने...।

काजल को लेकर मैं सोचने लगता हूँ कि ऐसी कालिख भी कोई है जो ज्योति की जननी होती है।

वह पाप कौन सा है जिसके आगे पुण्य नतमस्तक हो जाता है?

मैं कुछ जवाब नहीं देता। मैं केवल उस रहस्यमयी का ध्यान करता हूँ। वह वास्तविक रमणी थी, देवी थी। संसार के लिए वरदान।

तूफान और अंधड़ भरे जीवन के बीच वह मुझे सोने की कुटी में, प्रतिष्ठित कर गयी, जहाँ रहकर मैं फलता–फूलता हूँ

मनोरमा हँसकर मुझे छोड़ देती है और सोना किलकती और कूदती है। मेरी कृतज्ञ आखें देखती है कि वह यहीं है, वह यहीं है, कहीं गई नहीं।

वीरेश्वर सिंह ने लघुकथा के क्षेत्र में 'पतिव्रता'[29] कहानी लिखी, जिसका प्रसारण आकाशवाणी इलाहाबाद ने 02.05.1966 को किया। "इस कहानी की नायिका 'चम्पा" कंजड़िन है, जो कंजरपुरा की रहने वाली है। 16 वर्ष की अवस्था में उसके पिता ने उसका दाम तय कर लिया। चम्पा बाप से बोली, देख बाप पैदा तो तू ने जरूर किया है, पर ब्याह मेरा भगवान करेगा। मैं उस बूढ़े के घर नहीं जा सकती। मॉ ने आंखें तरेर कर कहा 'ऐसी बढ़ गयी है बाप का कहना न मानेगी।' चम्पा ने उलट कर कहा तूने माना था जब बाप के साथ यहाँ भाग आई थी। चम्पा अपने मनचाहे हीरा कंजड़ के साथ दूर खेत में बने एक घर में रहने लगी। एक रात भरे सावन में पुलिस के दो सिपाही आये और हीरा कंजड़ को धर में सेंध लगाने के आरोप में पकड़ ले गये। दीवान ने चम्पा से कहा, दरोगा जी से मिल लो वह तुम्हारी बड़ी तारीफ करते हैं। चम्पा ने दरोगा जी से मिलने

से इंकार कर दिया। मुकदने की पैरवी के लिए चम्पा सीधे मजिस्ट्रेट के घर पहुँच गयी और चोरी के झूठे इल्जाम में 'हीरा' को फंसाने का पर्दाफाश किया तथा बताया कि दरोगा इस दबाव से उसे अपने पास बुलाना चाहता है। " मैं कंजर की बेटी हुजूर जबर्जस्ती बड़े लाट की नहीं मानती। प्रेम से चाहे उसका तन ले लो। मजिस्ट्रेट के पैर का तलवा चम्पा ने अपनी छाती से लगा लिया। मजिस्ट्रेट ने कहा, बोल कल आएगी। अपनी कसम आऊँगी, मेरे हीरा को छोड़ दो। " हीरा कंजड़ को मजिस्ट्रेट ने छोड़ दिया। दूसरे दिन सॉझ को चम्पा हीरा को लेकर मजिस्ट्रेट के घर पहुँची। चम्पा जीने से चढ़कर अकेले छत पर पहुँची और कहा, हुजूर मैं आ गयी। कंजर की बेटी अपना वादा नहीं तोड़ती। चम्पा ने बताया हुजूर छूट गया, मेरा हीरा वह भी आया है। मजिस्ट्रेट साहब खानदानी रहीश थे। यश–अपयश को डरते थे। वह चौंक कर बोले, 'वह क्यों आया है?' चम्पा ने कहा हुजूर बिना उसकी मंशा के हम कुछ करते नहीं। उसने हीरा को बुलाया। हीरा कंजर रंगीन पगियां बांध ऊपर आया। 'हुजूर माई बाप हैं, हुजूर ने इंसाफ किया। मेरी औरत की बात रक्खी तो उसका भी वचन खाली न जाएगा। वह सरकार की सेवा में हाजिर है। यह कहकर नीचे उतर गया। मजिस्ट्रेट ने हीरा, हीरा कहकर पुकारा पर हीरा ने न सुना।

मजिस्ट्रेट ने कहा, चम्पा तुम सच्ची पतिव्रता हो। अब तुम मुझे अपने पैर छूने दो– चम्पा नीचे आयी और हीरा से बोली – चल, खड़ा क्या है – तेरे कारण मैं तो बदनाम हो गयी।

'मातृत्व की टेक'[30] वीरेश्वर की एक ऐसी कहानी है, जिसका प्रकाशन 'नई कहानियाँ', इलाहाबाद, अगस्त 1969 में हुआ। इस कहानी के नायक 'सान्याल' साहब हैं, जिनका कोई पुत्र नहीं था, लड़कियां ही थीं। उनका ध्यान

परिवार नियोजन की ओर गया। तीन सौ माहवारी तनख्वाह, लड़कियों की पढ़ाई लिखाई, शादी ब्याह का खर्च था। चुनांचे उन्होने अपनी धर्मपत्नी 'मालती' से उक्त प्रस्ताव किया। मालती मनोवैज्ञानिक रूप से इसके लिए तैयार नहीं थी। मालती ने निश्चय किया कि वह लड़के की माँ बनकर रहेगी। उधर सान्याल साहब सन्तान न पैदा करने की कसम खा चुके थे। सान्याल के जोर देने पर मालती ने लूप इस शर्त पर लगवा लिया कि तकलीफ होने पर वे उसे हटा देंगी। सान्याल ने मालती को रजामंद तो कर लिया, पर उनके भी मन में छिपी टीस थी कि भगवान ने सब कुछ दिया पर एक लड़का न दिया। रात में उन्होने आंगन में लड़के के खेलने का सपना भी देखा।

मालती ने लूप लगवा लिया। परिवार नियोजन के राष्ट्रीय यज्ञ में शामिल हुई। पर हुआ उल्टा। अब मालती प्रसन्न थी, सान्याल दुखी रहने लगे। सान्याल बीमार रहने लगे। मालती ने डाक्टरनी से बताया कि उन्हें तकलीफ है, लूप निकाल दीजिये। मालती की जिद पर डाक्टरनी ने लूप निकाल दिया। सान्याल को इसकी जानकारी नहीं दी। एक दिन सान्याल ने मालती से पूछा अब यह क्या है। मालती ने कहा तीन बच्चों के बाप हो चुके, अभी यह भी मालूम नहीं कि यह क्या है।मालती ने कहा लूप फेल हो गया। मालती ने सान्याल से कहा 'अपना सपना याद करो, वही पूरा होने वाला है। कालांतर मे सान्याल के घर थाली बजी बच्चा हुआ। मातृत्व की टेक पर वे नतमस्तक हो गये।

'शिक्षा मन्दिर' [31] एक ऐसी कहानी है, जिसमे वीरेश्वर सिंह ने शिक्षा मंदिर की पवित्रता पर प्रश्न उठाया। जहाँ प्रवेश सिफारिश के आधार पर किये जाते हैं। योग्यता और श्रेणी के आधार पर नहीं।

योगेन्द्र बाबू विद्यालय में प्राचार्य से परिचित हैं, नगर के मजिस्ट्रेट से भी

उनका परिचय है। वे अपने बेटे रमेश के तीसरे दर्जे की भर्ती के लिए जाते हैं। जहाँ वे मैनेजिंग कमेटी के प्रेसिडेंट से ही नहीं बल्कि विद्यालय के प्राचार्य से ही उनके नियमों के अनुकूल रहकर प्रवेश कराना चाहते हैं, किन्तु परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी उन्हें सफलता नहीं मिलती और उनके लड़के के स्थान पर दूसरे को प्रवेश दे दिया जाता है। पुनः मजिस्ट्रेट की एक पुर्जी पर उनके बेटे को प्रवेश मिल जाता है।

" प्रेम का अन्त"[32] वीरेश्वर की अप्रकाशित कहानी है। इसकी नायिका रम्भा का मुख उदास था आखें सजल थीं। भवरें हुई विवाह हो गया। रम्भा को प्रपंच लग रहा था। उधर राकेश का प्रेमी ह्रदय चीख रहा था। क्या यह गॉठ, प्रेम की गॉठ से अधिक मजबूत है? तोड़ दूंगा मैं इस गांठ को –।

राकेश ने प्रण किया कि वह एक बार रम्भा से मिलेगा, जरूर मिलेगा, चाहे प्राणों की बाजी लगाना पड़े और रम्भा से कहेगा – रम्भा तुम किस की हो ? मेरी या उस भांवर वाले की।

रम्भा ससुराल से अपनी बीमार मॉ को देखने आयी। राकेश ने देखा रम्भा अपने पिछवाड़े से बाहर निकलकर खड़ी पूनम का चॉद निहार रही थी। राकेश ने रम्भा से पूछा 'रम्भा', तुम मेरी हो या उस भॉवरे वाले की? रम्भा ने कहा भॉवरे वाले की। रम्भा, क्या प्रेम का कोई मूल्य नहीं? रम्मा ने स्पष्ट स्वरों में कहा "सिन्दूर के आगे प्रेम धूल है। भूल जाओ, राकेश उस रम्भा को जो तुम्हारे साथ बहक गयी थी। राकेश विक्षिप्त, निस्सहाय खड़ा देख रहा था कि उसके प्रेम का शव जल रहा है। रम्भा ने कहा 'राकेश, मन को शांत करो, जिससे मंगनी हो चुकी है, अब जा कर उसको अपनाओ। उसने हाथ जोड़कर रम्भा को प्रणाम किया।

'अपराध'[33] नई कहानियाँ! इलाहाबाद से दिसम्बर 1968 में प्रकाशित हुयी। कहानीकार वीरेश्वर सिंह ने इसमें 'अपराध' का एक नया दृष्टिकोण प्रतिपादित किया है। राधाबाई के दानो लड़के प्रथम श्रेणी में उत्तर्ण हुए, वह नया पेटीकोट सिलती हुई, गुनगुनाती है, प्रसन्नता से आपूर्ण है। उसका पड़ोसी 'श्याम' है, जो उसके घर में बिल्कुल हिलमिल गया है। अपने घर का कोई काम नहीं करता पर राधाबाई के किसी काम को कभी नहीं करता। राधाबाई घर में अकेली थी, लकड़ी उठाते समय काला सॉप निकल पड़ा; फुफकारने लगा। अचानक श्याम ने आकर अपनी जान की परवाह न करके, चौड़े चैले से मार–मार कर विषधर को गुथन डाला। राधाबाई श्याम को बहुत चाहने लगी। राधा के लावण्य को देखकर, मामी के मोहक सौंदर्य पर श्याम मुग्ध सा हो गया। राधा ने नये पेटीकोट को देखा, फिर राधा के झलकते शरीर को देखा। अचानक एक विचित्र स्फुरण से वह बेसुध सा हो गया और फिर जाने क्या हुआ। श्याम को कुछ होश नहीं था। पर राधा कह रही थी, "श्याम यह क्या, छोड़ो , हटो और श्याम के दोनो हाथ छुड़ा दिए और कहा तुम ऐसे हो गए हो। मैं अभी तुम्हारी मॉ से सब कहती हूँ।

श्याम घर पहुँचा, राधा ने घर में शिकायत की। श्याम के पिता ने श्याम की पिटायी की। श्याम मूक, भय कम्पित। श्याम भाग नहीं सका। मॉ ने श्याम को छुड़ाया और कहा तुम भी ऐसे थे। मेरी सन्दूक में अभी रक्खी है चिट्ठियॉ और फोटो जो लखनऊ से आया करती थीं। श्याम मॉ की छाती से चिपट कर रोता रहा। मॉ ने दीपावली को न चूल्हा जलाया। श्याम की निर्मम पिटाई से राधाबाई विकल थी। पश्चाताप से उनका मन जला जा रहा था। न जाने किस आवेश में श्याम की शिकायत कर दी। उन्होने अपने को धिक्कारा। बूढ़े शरीर के लिए बेचारे एक लड़के की जान संकट में डलवा दी। उसकी शिकायत न करती तो

कौन सा वज्र उनके सिर पर गिर पड़ता था। क्या हुआ लड़के ने इस शरीर को छू लिया, उसी ने तो इसे सॉप से बचाया था, वरना अब तक राख हो गया होता। मैने एक निश्क्षल बालक को कलंकित किया, उसे पिटवाया। मैनें बड़ा अपराध किया। राधा श्याम् के घर गयी उसकी मॉ से बताया। मॉ ने श्याम के पास जाने से मना किया, पर राधा नहीं मानी। वह रोते हुए श्याम से कहा आज रात मैं जिन्दा न बचूँगी। मुझसे बड़ा अपराध हो गया। श्याम ने राधा को देखकर मुंह फेर लिया। राधा ने अपने आंचल से श्याम के आंसू पोछे, फिर श्याम को चूमा, कई बार चूमा। आधे कंठ से बोली "लल्लू", मुझसे अपराध हुआ। मेरा अपराध माफ कर दो। श्याम ने कहा मामी मुझे अकेले रहने दो। मुझे मत छुओ। राधा ने श्याम को जबरन छाती से लगा लिया, उसके साथ लेट गयी। श्याम ने राधा के पास से अपने को मुक्त करने का यत्न किया। राधा ने उसे पकड़कर आलिंगन में जकड़ लिया। जब तक तू मुझे माफ नहीं कर देगा तब तक मैं जा नहीं सकती, मैं जान दे दूँगी। रोते रोते राधा मूर्छित हो गयी। श्याम के तन–मन दोनो रोमांचित हो उठे। उसका दुखी मन मामी के अद्भुत प्रेम में पिघल गया। श्याम पुकार उठा, मामी ओ मामी, रोओ मत। तुम तो मेरी मॉ बराबर हो। श्याम ने कहा मेरी मामी, मैं तुम्हें क्या माफ करूंगा, तुम्ही मुझे माफ करो। चलो, देर हो रही है, तुम्हें घर भेज आऊँ।

यात्रा भंग'[34] वीरेश्वर की एक अन्य कहानी है। देवेन्द्र की पत्नी से मुंडेर से मिली हुई छत से प्रीतम कौर से बातें किया करती थी। चमेली घर में एकांकी थी, प्रीतम कौर के साथ उसका समय कट जाता। चमेली ने देवेन्द्र से बताया कि उसके पिता का पत्र आया है और वह अपने बाबूजी के साथ मंसूरी जायेगी। देवेन्द्र से चमेली ने कहा प्रीतम कौर को बुला लो वह होती तो शायद तुम जाने का नाम न लेती। चमेली ने उत्तर दिया, वह होती तो तुम मुझे जाने से न

रोकती। देवेन्द्र ने कहा चारो ओर उजाड़ ही उजाड़ है। प्रीतम कौर की सूनी मुंडेरा पर गया, बोले यह भी उजाड़। प्रीतम कौर के न होने से चमेली खुश थी। उसे जाने की स्वीकृति भी मिल गयी। पर उसी दिन प्रीतम कौर पंजाब से आ गयी और कहा भाई साहब मैं आपसे हिन्दी पढ़ना चाहती हूँ। प्रीतम कौर के आ जाने के कारण चमेली ने अपनी यात्रा स्थगित कर दी। प्रीतम कौर ने कहा भाभी , तुम्हारी ट्रेन छूट जायेगी। चमेली ने कहा अब तुम आ गयी हो, मुझे कहीं नहीं जाना।

राष्ट्रीय चेतना की कहानियां

वीरेश्वर की कहानियां देशकाल और वातावरण को अभिव्यंजित करती हैं। उनमें राष्ट्रीय चेतना और बलिदान के भावो को जागृत करने की शक्ति है।वे गॉधी दर्शन से प्रभावित हैं। "राष्ट्रीय जीवन दर्शन को लेकर लिखी गयी कहानियॉ समाज सुधार, दहेज विरोध, अनमेल विवाह आदि का विरोध करते हैं। इन कहानियों में ग्रामोद्योग, अहिंसात्मक समाज, खादी उद्योग, परिवार नियोजन आदि को लेकर कहानीकार ने देश [35] का जो चित्र उपस्थित किया है, वह नितांत मार्मिक है। " [35]

कहानीकार सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करता है तथा उसका उद्देश्य राष्ट्रीय जागरण और देश सुधार प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ –

अनमेल विवाह का विरोध :

"चम्पा कंजड़िन को लोग नागिन भी कहते थे। किसी जलन के कारण नहीं, बल्कि उसकी असाधारण छवि के कारण। वैसी औरत सारे कंजरपुरा की तीन हजार की आबादी में दूसरी न थी। सोलह साल की थी तो बाप ने उसका

दाम तय कर लिया। चम्पा ने सुना तो सामने जा कर बाप से बोली – 'देख बाप, पैदा तूने जरूर किया है, पर व्याह मेरा भगवान करेगा। मैं उस बूढ़े के घर नहीं जा सकती।''[36]

परिवार नियोजन :

''सच पूछो तो परिवार नियोजन एक राष्ट्रीय महायज्ञ है जिसमें हर्ष का विषय है कि हम लोग भी शामिल होंगे।''[37]

'जब तीसरी बार सान्याल साहब के फिर लड़की हुयी तो उनका ध्यान परिवार नियोजन की ओर गया। उन्होने सोचा कि फिर से खतरा मोल लेना ठीक नहीं है। बच्चों वाला कारोबार बन्द होना चाहिए।''[38]

आचरण एवं अनुशासन पर बल :

'' आवश्यक है कि अपने आचरण से, हम अनुशासन का, अध्यापकों के आदर का, बीज बोवें।''[38]

खादी का प्रचार प्रसार :

''योगेन्द्र बाबू ने अपना खद्दर का लिबास पहना और रमेश को लेकर सबेरे ही स्कूल पॅहुचे।'' [40]

बालकों की चिंता :

''अध्यापक गण गंभीर मुद्रा बनाए हुए लड़कों से कतराते हुए निकल जाते हैं। उनकी मुखाकृति से स्नेह नहीं, अफसरी रोब टपक रहा है। बच्चों से कोई सीधे मुँह बात करने वाला नहीं है। स्कूल में जगह कम है, भर्ती होने वाली भीड़ अधिक है। भीड़ हर साल बढ़ती ही जाती है, चुनांचे बच्चे मारे–मारे फिरते हैं, कोई पुरसा हाल नहीं। '' [41]

गाँधी दर्शन पर आस्था :

"आप हमेशा गॉधी टोपी ही लगाते हैं।" मैने घूमकर हॅसते हुए पूछा–" क्यों क्या अच्छी नहीं लगती?" मालती ने कहा 'नहीं तो' मैने चपलता से कहा "तुम टोपी क्यों नहीं देती मालती?" मालती ने लजाते हुए कहा "हटो, क्यो मैं लड़ता हूँ" मैने कहा "अच्छा आज दो, देखो कैसी लगती है? मालती ने कहा 'नहीं–नहीं'। "पर मैं उसे पकड़ कर शीशे के सामने ले आया और उसके सिर पर गॉधी टोपी पहना दी।"[42]

"वीरेन्द्र की एक विशेषता थी उसकी दिवारों की मस्ती– वह परियों के देश में भी उसी मौज से रह सकता था, जिस शान्ति और सहनशीलता से साबरमती के आश्रम में।"[43]

गुलामी की भर्त्सना :

'सुन्दरता, यौवन और प्रेम की कोई जाति नहीं होती। पर कौन समझाये समाज को, और समाज के गुलाम गुरुजनों को, जो कहते थे वीरेन्द्र ब्राह्मण है और बेला अब्राह्मण। अतएव दोनों का सम्बन्ध उचित नहीं।"[44]

वीरेश्वर की कहानियों में समाज और राष्ट्र के हित की सर्वोपरि महत्व दिया गया है। राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त अवसरवाद, भाई भतीजावाद, भ्रष्टाचार की पोल खोली गयी है। वीरेश्वर ने राजनीतिक स्वार्थवाद, भाषावाद का विरोध किया है। शिक्षा जैसे पवित्र कार्यों में भी अब सिफारिस और भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया है।

"एक बार उनके जी में आया कि क्यों न लड़के को भर्ती के लिए सीधे कलेक्टर सहब ही से कहा जाय, सुनते हैं कि स्थानीय गवर्नमेंट हाई स्कूल की

मैनेजिंग कमेटी के वे प्रेसिडेंट हैं, एक पुर्जा लिख देंगे तो भर्ती हो जाएगी, बहुत सारी दौड़ धूप की झंझट बचेगी। किन्तु राष्ट्रीय भावना उमड़ पड़ी – सिफारिश बाजी ठीक नहीं है।''[45]

शिक्षा मंदिरों की दशा :

जगह तो वहॉ भी भर गयी है लेकिन बिल्डिंग फन्ड आप दे देंगे तो भर्ती कर लेंगे।[46]

वर्ण व्यवस्था पर चोट :

वीरेश्वर की राष्ट्रीय चेतना वर्गहीन समाज पर बल देती है। वर्ण–व्यवस्था को मानव विकास में बाधक मानती है। ब्राह्मण और अब्राह्मण के कारण प्रेम विवाह नहीं हो पाता, निर्धन और पूँजी पतियों के बीच सम्बंध नहीं जुड़ पाते। वीरेश्वर की कहानियों में विवाह आदि के प्रसंगों में इस सामूहिक और राष्ट्रीय विसंगति का रेखांकन किया गया है।

''विवाह तो असम्भव था – एक तो गोत्र का झगड़ा था, फिर वह अमीर की लड़की और मैं एक साधारण मनुष्य।''[47]

आंचलिक कहानियां :

वीरेश्वर सिंह की कहानियों में आंचलिकता का संस्पर्श पाया जाता है। उनकी प्रेम विषयक कहानियों में आंचलिकता की अभिव्यक्ति उल्लिखित दिखाई देती है। ग्रामीण जीवन की झलक, वहाँ की सामाजिक मान्यताएं तथा रूढ़ियाँ कहानियों में स्थान पाती हैं, किन्तु लेखक ने आंचलिकता को प्रगति से जोड़ने का प्रयत्न किया है।[४८]

वीरेश्वर सिंह की कहानियों में आंचलिकता के रंग के कुछ चित्र दृष्टव्य हैं।

"अपने किसी कबूतर को प्रेम से गर्द और पंख फुला किसी कबूतरी के आस–पास घूम नाच कर मान मनौवल करते देखता, तो मैं प्रफुल्ल हो उठता। बाजरे के संग अपना दिल मैं उनमें बिखेर देता और जब वे गुटुर गूँ करके उसे उसे चुगते तब मेरा हृदय गा उठता था। "जाड़े की सुबह की नई धूप में जब वे ऊपर उड़–उड़ घूमते और कलाबाजियॉ खाते, तब मेरे मन में भी पंख से लग जाते। मैं प्रेमा को पुकार कर कहता "अजी, सुनो, कबूतर कैसे अच्छे लग रहे हैं।" प्रेमा चाय के लिए अंगीठी धौंकती हुई छोड़, हाथ में छोटा सा पंखा लिए हुए बाहर ऑगन में देखने लगती और कहती, हॉ सचमुच बड़े अच्छे लग रहे हैं।"[49]

प्रगतिशील कहानियाँ :

वीरेश्वर की कहानियों में जीवन के प्रगतिशील तत्वों का समावेश है। उसमें प्राचीन और नये जीवन मूल्यों का विरोध है। नई पीढ़ी के स्वतंत्र विचार वाले युवक–युवतियाँ पूरा अधिकार चाहते हैं। कहानी के नायक–नायिका भी अधिकार और स्वतंत्रता चाहते हैं किन्तु समाज से विरोध का साहस उस समय के भारतीय समाज में असंभव नही तो कठिन अवश्य था। ऐसा साहस तो चम्पा कंजड़िन जैसी युवती ही कर सकती है। [50]

"मैं उस बूढ़े के घर नहीं जा सकती। मॉ-ऑखे तरेर कर बोली " ऐसी बढ़ गयी है, बाप का कहना न मानेगी? चम्पा ने उलटकर कहा– तूने माना था जब बाप के साथ यहां भाग आई थी।" [51]

"जब दुनिया की मजबूत नीवें हिल जाती हैं तो अपना आंसुओं से भरा ह्रदय ही मनुष्य का साहस होता है।" [52]

प्रेम और यौन सम्बंधी :

आधुनिकता पाश्चात्य संस्कृति एवं अतिवादी चिंतकों की देन है। दाम्पत्य जीवन की प्राचीन मान्यताएं समाप्त हो गई हैं। अब पति–पत्नी, प्रेमी–प्रेमिका का पृथक–पृथक व्यक्तित्व है। पार्श्चात्य प्रभाव के कारण अब यह आवश्यक नहीं रह गया कि जिससे प्रेम किया जाए, उसी से विवाह भी हो और जिससे विवाह हो उससे प्रेम भी हो। प्रेम और सेक्स की स्वच्छंदता प्राप्त हुई है। वीरेश्वर की कहानी में इसका एक चित्र देखिए –

"तारों से जगमग आकाश संसार को असीमित विस्तार उन्मुक्त प्रेम का जीवन। सचमुच स्वर्ग ऐसा ही होगा। उसने एक सांस भरकर इस मादक अर्धरामिणी मदिरा की एक घूँट पिया फिर मदभरे स्वर में पास खड़े हुए रसिक से बोला, यारों, अब किधर ?

'हिन्दू घरों में लड़के–लड़कियों को एक दूसरे को देखने का अवसर मॉ–बाप और किस तरीके से देते।"[53]

प्रेम की उन्मुक्तता :

प्रिये यही है अपना प्रेम– घोसला और हम दोनों हैं प्रेम–प्रखेरू ... कुछ ही देर में मधुर निशा ने अपने श्यामल आंचल से दोनों उंनीदें प्रेमियों को ढ़क दिया। खुली खिड़की से ठंडी हवा आकर धीरे–धीरे पंख झलने लगी। यह उन्मुक्त प्रेम की पहली रात थी।"[54] राधा बाई उठकर उसके मुँह की तरफ गयी। अपने ऑचल के कोर से उसके ऑसू पोछे, और फिर झुककर उएसे चूम लिया। श्याम ने कहा "क्या करती हो मामी" पर राधाबाई के विकल हृदय की उन्मुक्त भावनाएं तरंगित हो उठीं। उन्होने श्याम को फिर चूमा, फिर चूमा और फिर चूमा।'[55]

"प्रीतम कौर की छत का मुंडेर दिख रही थी। भला है जो नही है, चमेली ने सोचा। वरना दिन में दस बार तक झांका करती।"[56]

प्राचीन संस्कारों का विरोध :

वीरेश्वर सिंह की कहानियों में प्रगतिशील चेतना परिलक्षित होती है। पुराने संस्कार, आदर्श और विचार पात्रों को पीड़ित करता है –

"कभी हंसी से आग लगती है, कभी आंसू से। आज मेरे उसी संस्कार ने, उसी विचार, उसी आदर्श ने, जिसको मैं दीपक सा आगे करके चलता था, मेरे घर में आग लगा दी।"[57]

आदर्श नहीं यथार्थ :

आदर्शों के कारण हेमलता ने राखी तो बॉध दी किन्तु दिखावे और आदर्श के कारण दो प्रेमियों के प्रणय मन को आघात पहुँचा। वे इस प्रकार के खोखले आदर्श को नहीं चाहते, जिसमें प्रणय का गला घोंट दिया जाय।–

"व मैने धीरे से अपना हाथ आगे कर दिया और हेमलता ने धीरे से कलाई में एक राखी लपेट दी, फिर ... बड़ी कोमलता से माथे में एक लाल टीका लगा दिया। वह छिपी–छिपी हॅस सी रही थी। उसे क्या मालूम था, कि वह एक खून कर रही है एक मिट्टी सा भाई बनने में एक जीवित प्राणी क़ा गला घोंट रही है।"[58]

जीवन संघर्षों का चित्रण :

"दुख रोने की नहीं, बल्कि जीवन की अग्नि में तपाकर निश्चित स्वरूप में ढ़ाल देने की वस्तु है, हम पक्षी हैं तो क्या हुआ, आत्मा की अनुभूति लहरियों को हम भी अनुभव करते हैं।" [59]

कथा साहित्य की उपलब्धियाँ

"वीरेश्वर हिन्दी कथाकारों में विशिष्ट महत्व के कथाकार हैं। हिन्दी के अनन्य पुजारी गर्वीले भक्त हैं, जिनके हाथों में फूलो के दोने हैं। समर्पण की भावभूमि है। प्रेमचन्द्र के शिल्पों में वे हिन्दी के श्रेष्ठ कहानीकार हैं।"[60]

वीरेश्वर सिंह के कथा साहित्य की प्रमुख उपलब्धियॉ इस प्रकार हैं –

वीरेश्वर सिंह की कहानियों मे वस्तु सामग्री का विन्यास अत्यंत कलात्मक है। उन्होने पारिवारिक प्रसंगों, मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन के प्रेम प्रसंगों, विवाह, चरित्र, दहेज, भ्रष्टाचार आदि ऐसे विषयों का चयन किया है तथा उन्हे इतनी कुशलता से चिन्हित किया है कि पाठकों को उनके भीतर से एक प्रेरणा मिलने लगती है। जिस कथावस्तु को वीरश्वर सिंह चुनते हैं, वह पाठकों के लिए रुचिकर प्रतीत होती है। साधारण मनुष्यों का जीवन, उनके कार्य व्यापार, मनोविज्ञान एवं गतिविधियों का यथार्थ अंकन वीरेश्वर की प्रमुख विशेषता है।

"वीरेश्वर सिंह मानव जीवन के जिस पक्ष को कथा वस्तु में लेते हैं, उसमें किसी मानवीय सम्वेदना को स्पष्ट करने का सफल प्रयत्न करते हैं। कथा वस्तु स्पष्ट, संतुलित एवं विषय प्रतिपादन के सर्वथा अनुरूप होती है।"[61]

वीरेश्वर कथा वस्तु में व्यक्तियों की मनोदशाओं का मनोवैज्ञानिक चिंतन करने में सिद्धहस्त हैं। कथानक में कार्य, कारण और परिणाम के सम्बंध के निर्वाह में भी लेखक को असाधारण सफलता प्राप्त हुई।

वीरेश्वर सिंह ने कथानक और मनो विश्लेषण दोनो का विचित्र संकलन कहानियों में कराया है। विरेश्वर कथानक को जीर्ण नहीं होने देते और न ही कथावस्तु को असंतुलित होने देते हैं। उन्होने जिन कथाओं को चुना है, वे समाज

सापेक्ष यथार्थ से सम्बद्ध हैं। एक सच्चे साहित्यकार की भाँति वे युगसत्ता को कहानियों में पिरोते हैं। मानव सत्यों को उद्घाटन करते चलते हैं और समान सापेक्ष यथार्थ को महत्व देते हैं।[62]

वीरेश्वर ने कहानियों में जिस कथ्य का चयन किया है उसमें उनकी दृष्टि प्रगतिशील एवं जीवन के यथार्थ परक दृष्टिकोण को लेकर चलने वाली है। उनमें प्रेमचन्द्र का यथार्थ बोध और प्रसाद जैसी भाव प्रवणता दोनो एक साथ पायी जाती है। उदाहरणार्थ –

"मजिस्ट्रेट साहब ने अपनी दोनो गदेलियों से चम्पा के दोनों कनपटों को दबाकर उसका मुंह ऊपर किया, कैसी मोहनी थी, इस कंजड़िन के मुख पर। उनके एक पैर का तलुआ अपनी छाती से टिकाये हुए चम्पा मीठे–मीठे उनकी पिण्डली दबा रही थी। बोली कंजड़ की बेटी हूँ। जबरदस्ती लाठ की नहीं मानती, प्रेम से उसका तन मन ले लो"[63]

एक अन्य उदाहरण इसी शैली का दृष्टव्य है

"जिस समाज में स्त्रियों के जीवन से ताश के पत्तें का ऐसा खेल किया जाता है, क्या वह सामान्य मनुष्यों का कहा जा सकता है। हिन्दू स्त्री होना वास्तव में कुपहा होने से भी खराब है। उसने ऐसा सॉस खींच कर आंख उठायी तो देखा कि सफेद दीवालें कंकाल सी खड़ी कह रही हैं – देख क्या रहे हो हमारे पीठ पीछे न जाने कितने घरों में ऐसे खून रोज होते रहे हैं। ऐसी जीती चितायें दिन रात दहकती रहती हैं, जिनमें तुम लोग आतिशबाजी का मजा लेते हुए गंगा में स्नान और महफिल का पान करते फिरते हो"।[64]

कथानक की दूसरी विशेषता नाटकीयता है। एक कुशल नाटक शिल्पी की भांति विरेश्वर चित्र को पूर्ण करने के लिए बिम्ब में रंग भरते हैं। कहानी कार ने

कथानक की सम्पूर्णता के लिए विभिन्न सूत्रों को एकत्रित करता है। नए–नए चरित्रों की अवतारणा करता है। कलात्मकता के आधार पर कथानक को सजीव बनाया गया है।"[65]

वीरेश्वर ने कथानक में संघर्ष अथवा द्वंद को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। संघर्ष और द्वंद के माध्यम से कथाकार कृथांश को गति देता है। एक सौदागर जो एक बच्ची को खिलौना नहीं दे पाता उसका अंतर्द्वंद देखें –

"रोजगार के मतलब यह थोड़े ही हैं कि मैं इस तरह बेदिल का हो जाऊँ। क्या होता यदि मैं एक ही पैसे में उसे दे देता तो, कोई घाटे का पहाड़ तो टूट न पड़ेगा। न सही एक वक्त तम्बाकू न पीता, बिना साग के खा लेता। बच्चों का मन तोड़ना राम–राम भगवान की मूर्ति तोड़ना है।"[66]

वीरेश्वर ने कथा वस्तु को संक्षिप्त कारण के द्वारा जिज्ञासा और कौतूहल उत्पन्न करके प्रतीक एवं संकेत योजनाओं का उपयोग करके एक सफल कहानी कार की सजगता का परिचय दिया है।

वीरेश्वर सिंह की कहानी में आरम्भ, मध्य और अंत बड़े मार्मिक ढ़ंग से होते हैं। प्रारम्भ पूर्ण पीठिका के रूप में और अंत प्रतिपाद्य के रूप में प्रस्तुत है। मध्य बिन्दु चरम सीमा के रूप में कहानियों के सौन्दर्य को अधिक संतुलित करता है। वीरेश्वर ने कहानियों का आरम्भ किसी मनोवैज्ञानिक-स्थिति, किसी मार्मिक युक्ति, किसी प्रतीकात्मक रहस्य से होता है, मध्य चरम तथा अन्त प्रतिपाद्य के रूप से।

कहानी का प्रारम्भ :

अ. "मेरे पास एक बांसुरी है, जिसको बजाने वाला अब कोई नहीं है , वह टूटी है। बसंत हीना कोयल सी वह गूंगी एक कोने में पड़ी रहती है। उसपर

धूल जम जाती है तो उसे धीरे से उठा कर मैं बड़े प्यार से उसकी धूल पोंछ देता हूँ। मैं जानता हूँ कि वह गूंगी है, तो क्या हुआ उसके प्राण अब भी सिसक रहे हैं।''[67]

कहानी का मध्य :

''विवाह असम्भव था। एक तो गोत्र का झगड़ा था फिर वह अमीर की लड़की थी और मैं एक साधारण मनुष्य। कुछ ही दिनों बाद मालती के पिता का तबादला इलाहाबाद हो गया। तब से मैं क्या करूं रोज शाम को उधर ही मुंह करके बांसुरी बजाता हूँ। वह उसे प्यारी थी और मुझे विश्वास है, कि वह इधर ही मुंह किए चुप मेरी बांसुरी सुनती होगी। अब तो शायद उसका विवाह भी हो गया हो।''[68]

कहानी का अंत :

फिर बांसुरी लेकर मेरे देखते ही देखते उसके दो टुकड़े कर दिये। मैने कहा – यह क्या कर डाला? कैलाश उठ कर खड़ा हो गया। बोला 'मेरे विचार में अब इसका अंत ही ठीक है' मैं कई दिनो से सोच रहा हूँ कि आखिर इस बांसुरी को बजा कर हम इस संसार में कब तक रह सकते हैं। एक पुरुष होकर मुझे अपना हनन करना सीखना ही पड़ेगा।

''वीरेश्वर सिंह के कथानकों की और विशेषता उनमें घटना के साथ भाव और चरित्र का निबंधन है उनकी कहानियों में प्रेमचन्द्र और प्रसाद दोनो की समन्वित दिखाई पड़ता है। यथार्थ और आदर्श की मनोबली स्थिति भारतीय और पाश्चात्य शैलियों का समागम एक ही स्थान पर पाकर हिन्दी पाठक अवश्य ही आश्चर्य चकित होंगे।''[69]

शीर्षक :

वीरेश्वर सिंह की कहानियों के शीर्षक विषयानुकूल, आकर्षक, नवीन, लघु एवं भावबोधक होते हैं। उदाहरणार्थ ऊँगली का घाव, बॉसुरी, कबूतर, रेशमी रूमाल, काजल, बोध, पतिव्रता, मोटर का मूल्य, परिवर्तन , दृष्टि, अंतराग्नि आदि।

कथोपकथन :

"वीरेश्वर की कहानी रचना में संवाद या कथोपकथन का महत्वपूर्ण स्थान है। कहानी के विभिन्न सारे, पात्रों की मनोदशायें और अंतर्द्वंदों का विकास कथोपकथनों के द्वारा ही होता है।"[66] वीरेश्वर के कथोपकथन कथावस्तु के साथ पूर्ण संयोजन तथा एकलक्ष्यता स्थापित करते हैं। कथोपकथन भाव, चरित्र, को उद्घाटित करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।[70]

पात्र एवं चरित्र चित्रण :

वीरेश्वर के कहानियों के पात्रो एवं चरित्र चित्रण में यथार्थ, मनोविज्ञान एवं सहजमानव जीवन की अभिव्यक्ति हुयी है। वे आंतरिक दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त करते हैं। यथार्थ का जीवन जीते हैं, पर आदर्शों की बलि देते हुए भी राष्ट्रीय छात्र धर्म का निर्वाह करते हैं। उनके पात्र ग्राम्य एवं नगरीय जीवन से लिए गये हैं। काल्पनिक पात्रों में यथार्थ की अनुभूतियां देखते ही बनती हैं। उसके नायक नायिका प्रेमी होकर आदर्श नायक बन जाते हैं। अधिकांश नायक नायिका गृहस्थ हैं अथवा श्रमिक कर्मठ एवं कृषक सम्पन्न संस्कृति से जुड़े हुए हैं। नारी पात्रों में रूप, चरित्र स्नेह प्रदान करने वाली नारियां हैं, और विलाश के स्थान पर त्याग करती हुई संघर्षशील नारियाँ चिन्हित हुयी हैं।

"वीरेश्वर सिंह कहानी के क्षेत्र में मौलिकता, मानवीय संवेदना, संप्रेषणीयता, विधि–विधान, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा को लेकर हिन्दी कहानियों में एक नई क्रांन्ति की है।"[71]

काव्य और शिल्प की दृष्टि से वीरेश्वर की कहानियां हिन्दी कहानी–कला की उपलब्धि मानी जा सकती है। वीरेश्वर की 'पतिव्रता', 'उंगली का घाव', 'बांसुरी', 'यात्राभंग', 'बोध', आदि कहानियॉ कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं।

"सांकेतिक अर्थवत्ता से युक्त वीरेश्वर की कहानियाँ मानवीय अनुभूतियों के गहरे स्वरो`को छूने में समर्थ प्रेम संवेदनाओं को जिस सांकेतिक मुद्राओं, कलात्मक अभिव्यक्तियों से व्यक्त किया गया है, उससे नैतिक मूल्यों को उद्घाटित करने में सहायता मिलती है।"[72]

वीरेश्वर सिंह की कहानियों में आदमी ही केन्द्र में है। नई कहानी में आदमी को परिभाषित करते हुए कमलेश्वर ने लिखा है–

"नई कहानी का आदमी न जैन संशयवाद का शिकार है, न बौद्ध दुःखवाद का और न ही हिन्दू भाग्यवाद का। वह चाहे अविशय अकिंचन और अति साधारण हो, चाहे नितांत मौलिक आवश्यकताओं का मारा हुआ हो, पर वह है मात्र आदमी। अपने यथार्थ परिवेश में सांस लेता जिजीविषा से सम्पन्न व्यक्ति।"[73]

मोहन राकेश ने भी कमलेश्वर के मत का समर्थन करते हुए कहा है–

"नई कहानी की दृष्टि अपने संदर्भों में रहकर, उसके अंदर से अपने समाज और परिवेश को आंकने की दृष्टि है जो हर बार नए प्रयोग में यथार्थ को उसकी सजीवता में व्यक्त करने की नई कोशिश करती है।"[74]

राजेन्द्र यादव ने आज की कहानी के संदर्भ में प्रकाश डालते हुए कहा है, "स्वतंत्रता के बाद के कथाकार का एक संसार वह है जो उसके चारो ओर है, जिससे उसे घृणा है, बेहद नफरत है, लेकिन उसमें रहने, टूटने और समझौता करने को वह बाध्य है।"[75]

वीरेश्वर की कहानियों में स्वाधीनता के बाद में जो भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, शोषण तथा अन्याय का वातावरण उत्पन्न हुआ है, कहानीकार ने उसे भी व्यक्त किया है। सामाजिक रूढ़ियों के बीच संघर्ष करने वाली स्त्रियां भी चित्रित हैं। वीरेश्वर के पात्र संघर्षशीलता से जूझते हैं। नए विज्ञान नये विश्व के परिवर्तनों से परिचित होते हैं, किन्तु उनमें अपनी स्वस्थ परम्परा की पुनर्जीवित करने की लालसा है।

सम्वेदना को विकसित करने के लिए वीरेश्वर सिंह की कहानियॉ हिन्दी में याद की जायेंगी। मानवीय संदर्भों में टूटते मूल्य, पारविारिक जीवन मूल्यों में अर्न्तविरोध, रोजी रोटी के लिए संघर्षरत श्रमिक वर्ग के जीवन को रेखांकित करने वाली कहानियॉ हिन्दी कथा क्षेत्र की निधि हैं।

वीरेश्वर की कहानियां टूटती आदमीयत पारस्परिकता को नयी मानसिकता प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को एक नयी प्रगति चेतना से जोड़ने का कार्य बीरेश्वर सिंह की कहानियों ने किया है।

वीरेश्वर सिंह की कहानियों का एक विशिष्ट उद्देश्य है। संतुलित जीवन दृष्टि प्रदान करने वाली वीरेश्वर सिंह की कहानियॉ मानव चेतना में परिवर्तन उत्पन्न करती हैं। कथाकार वीरेश्वर सिंह के शब्दों में "मैं तो यह मानता हूँ कि हिन्दी में एक कविता, एक कहानी, एक लेख, एक छोटी सी अच्छी सी कोई चीज लिख देने में वही पुण्यफल; वही अमृत है जो गंगा स्नान या एक हजार गायों के

पुण्य में है, और वही सुख संतोष है जो गरीबों के ऑसू पोछ देने या खद्दर के पहिनने ओढ़ने में है।

काल प्रवाह में कुछ वर्षों की दूरी तक तो ये कहानियाँ चलेंगी ही और जहॉ तक, जब तक ये तरंगित रहेंगी, तब तक हिन्दी साहित्य प्रेमियों के हृदय बदलेंगे, ऐसी आशा है।''[76]
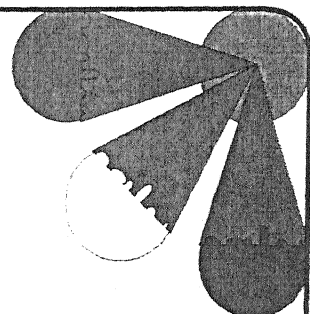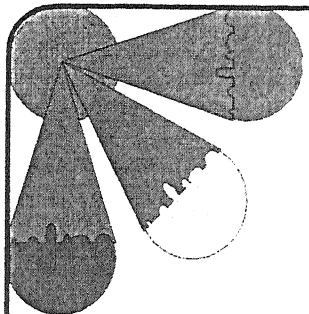
संदर्भ

1. कालजयी कहानियाँ, डॉ. चन्द्रिका प्रसा दीक्षित 'ललित', प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ (1993) पृ. भूमिका।
2. अस्तित्ववादी और नई कहानी, डॉ. लाल चन्द्र गुप्त, 'मंगल' पृ. 9
3. हिन्दी नई कहानियों का समाज शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. महेश चन्द्र, 'दिवाकर' पृ. 27
4. कहानी–पथ–भूमिका, सं. महेश प्रताप, पृ. 27
5. हिन्दी कहानी का विकास, डॉ देवेश ठाकुर, पृ 22–23
6. हिन्दी नई कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ महेश दिवाकर पृत्र.27
7. हिन्दी नई कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ महेश दिवाकर पृत्र.40
8. कालजयी कहानियाँ, सं. डॉ, चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित', भूमिका भाग – पृ. 11
9. हिन्दी साहित्य युग और प्रवित्तियाँ, डा. शिवकुमार शर्मा, पृ. 597–98
10. हिन्दी कहानी : उद्भव और विकास, डॉ. सुरेश सिन्हा, पृ. 479–80
11. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 76
12. स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य, सीताराम शर्मा, पृ. 206
13. हिन्दी कहानी का विकास, डॉ देवेश ठाकुर, पृ 107
14. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, भूमिका पृ. 1
15. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित, पृ. 12
16. तदुपरिवत, पृ. 15
17. तदुपरिवत, पृ. 16

18. तदुपरिवत, पृ. 17

19. तदुपरिवत, पृ. 18

20. तदुपरिवत, पृ. 18

21. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ. 61

22. तदुपरिवत, पृ. 68

23. तदुपरिवत, पृ. 76

24. तदुपरिवत, पृ. 84

25. तदुपरिवत, पृ. 97

26. तदुपरिवत, पृ. 104

27. तदुपरिवत, पृ. 115

28. तदुपरिवत, पृ. 127

29. पतिव्रता, वीरेश्वर सिंह (अप्रकाशित) पृ. 1

30. मातृत्व की अेक, वीरेश्वर सिंह (अप्रकाशित) पृ. 1

31. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह (अप्रकाशित) पृ. 1

32. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह (अप्रकाशित) पृ. 1

33. अपराध, वीरेश्वर सिंह (प्रकाशित), नई कहानियाँ, इलाहाबाद, दिसम्बर–1968

34. यात्रा भंग, वीरेश्वर सिंह (अप्रकाशित) पृ. 1

35. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित, पृ. 28

36. पतिव्रता, वीरेश्वर, पृ. 1

37. मातृत्व की टेक, वीरेश्वर पृ. 8

38. तदुपरिवत, पृ. 42

39. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह पृ. 1

40. तदुपरिवत, पृ. 1

41. तदुपरिवत, पृ.1

42. बॉसुरी, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 25

43. रेशमी रूमाल, पृ. 44

44. तदुपरिवत पृ. 94

45. तदुपरिवत, पृ. 1

46. तदुपरिवत पृ. 9

47. बॉसुरी, वीरेश्वर सिंह पृ. 23

48. ऑचलिक कहानियॉ

49. कबूतर, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 98–99

50. मोटर का मूल्य, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 46

51. पतिव्रता, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 1

52. बोध, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 117

53. राखी, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 110

54. प्रेम का अंत, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 7

55. अपराध, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 15

56. यात्राभंग, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 6

57. राखी, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 106

58. तदुपरिवत, पृ. 144

59. कबूतर, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 102

60. वीरेश्वर के नाम, मुंशी प्रेमचन्द्र के पत्र

61. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित, पृ. 18

62. तदुपरिवत पृ. 22

63. पतिव्रता, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 5

64. मोटर का मूल्य, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 50

65. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित पृ. 28

66. परिवर्तन, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 80

67. बॉसुरी, 'वीरेश्वर सिंह' पृ. 19

68. तदुपरिवत, पृ. 27

69. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित पृ. 32

70. तदुपरिवत, पृ. 35

71. तदुपरिवत, पृ. 35

72. तदुपरिवत, पृ. 38

73. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, पृ. 25–26

74. परिवेश, मोहन राकेश, पृ. 203

75. हिन्दी कहानी का विकास, डॉ. देवेश ठाकुर, पृ. 113

76. उंगली का घाव, 'वीरेश्वर सिंह', (भूमिका) पृ. 1
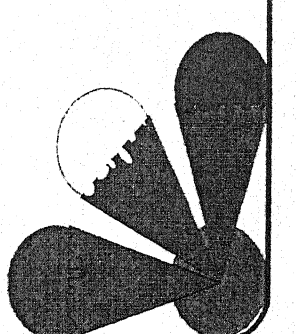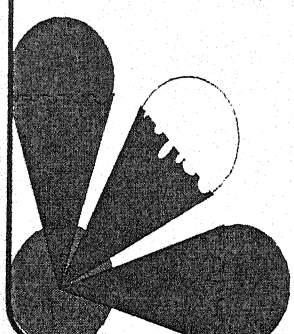
अध्याय ५

वीरेश्वर का नाट्य साहित्य

बिजली नाटिका की कथावस्तु

बिजली नाटिका की नाट्यपरक उपलब्धियाँ

अन्य नाट्य साहित्य - बाल एकांकी

अध्याय- ५

वीरेश्वर सिंह मूलतः कहानीकार, कवि हैं, किन्तु उन्होने नाटकों की भी रचना की है। 'बिजली' नामक 'नाटिका' को लिखकर, उन्होनें एक ऐसी चरित्र सृष्टि की है, जिसमें हिन्दी नाटक को एक नयी चेतना प्राप्त हुयी है। 'बिजली' नाटिका का प्रकाशन प्रथम बार 1934 में साहित्य मण्डल, दिल्ली से हुआ। प्रकाशक कथाकार ऋषभ चरण जैन के शब्दों में –

"ठाकुर वीरेश्वर सिंह, बी.ए., हिन्दी की उन महान आशाओं में से हैं, जिसके विकास पर हमारी दृष्टि अत्यन्त सतर्क भाव से लगी हुई है। उन्होने एक कहानी लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य से स्पर्श किया है। उनकी कहानी कला, स्वाभाकिता और मौलिकता की दृष्टि से इतनी भव्य, सुन्दर, और अभिनन्दनीय है, कि अपने आप साहित्य जीवन में ही उन्होने अपनी गिनती हिन्दी के श्रेष्ठ लेखकों में करा ली है।

'बिजली' उनकी एक अविकसित नाट्य कलिका है। यह वस्तु जितनी कच्ची है, उतनी ही बेजोड़ है। बिजली, जैसी युवती की कल्पना हिन्दी नाट्य साहित्य के लिए एक सर्वथा अपूर्व चीज है। इसके अतिरिक्त भाषा का ओज वाक्यों का संगठन तथा चरित्रचित्रण की तीव्रता नाटक के समस्त गुणों का समावेश भी आप इस रचना में पा सकेंगे।

हमें विश्वास है, पाठक गण इस पुस्तक को ह्रदय से अपनायेंगे।"

विनीत

ऋषभचरण जैन

जहाँ तक नाटक का प्रश्न है,

नाटक शब्द मूलतः संस्कृत के नट् धातु से निस्पन्न हैं जिसका अर्थ है

अनुकरण करना। अवस्थानुकृति नट्यिम' के अनुसार मूल ऐतिहासिक पात्रों की अवस्था की अनुभूति ही नाट्य है।[1] आचार्य भरतमुनि ने 'नाट्य शास्त्र में वेशभूषा, क्रिया कलाप आदि वाह्य रूपों का ही नहीं, अपितु नाना अनुभवों के द्वारा स्थायी, संचारी आदि मानसिक विकारों के अभिनय का ही सूक्ष्म विद्यान है वस्तुतः यहॉ अनुकरण का अभिप्राय अभिनय ही है।''[2] वीरेश्वर सिंह ने 'बिजली' नामक नॉटिका की रचना की है। 'नाटिका' दृश्यकाव्य के उपरूपक का एक भेद है।[3]

काव्य

दृश्य				श्रव्य		
रूपक		उपरूपक				
नाटक	नाटिका	त्रोटक	चम्पू	गद्यकाव्य		पद्यकाव्य
प्रकरण	गोष्ठी	सट्टक	विरुद्ध	कथा	मुक्तक	
भाण	नाट्यरासक	प्रस्थानक	करम्यक	अख्यारिका	वृत्तिगंपि	
व्यायोग	उल्लाप्यम	रासकम्		उपन्यास	उत्कलिका	
समवकार	प्रेरणम	विलासिका		यात्रावर्णन	प्राय	
डिम	संलापक	प्रकरणिका		इतिहास	चूर्णक	
प्रहसन	शिल्पक	मणिका				
ईहामृग	दुर्मल्लिका	श्रीगदित				
अंक	हल्लीश					
वीथी						

महाकाव्य पद्य	
खण्ड काव्य	मुक्तक
गीति काव्य	युग्मक
सुभाषित	संदानिक
कोश	विशेषक
अज्या	कलात्मक

इस प्रकार उप रूपकों में नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सप्टक, नाट्यरासक, प्रस्थान, उल्लास्य, काव्य प्रेरण, रासक, संलापक, धीगदित, शिल्पक, विलासिका,

दुर्यल्लिका, प्रकरण, हल्लीशक, और मणिका।[4]

आचार्यों ने रूपक को नाट्य और उपरूपक को नृत्य भी कहा है। नाट्य को रसाश्रित और नृत्य को भावाश्रित माना है। 'प्रस्तारतभ' के रचयिता भरत और कोहल के अनुसार ' नाट्य के दो भेद हैं। – मार्ग और देशी। मार्ग के 20 भेद होते हैं। उनमें 10 रूपक और 10 देसी बताये गए हैं। भरत और दशरूपककार धनंजय ने नाट्य के रूपकों का विवेचन किया है। किन्तु उपरूपकों का कोई विवेचन नहीं किया है।[5] धनंजय ने केवल नाटिका की व्याख्या की है।

वीरेश्वर ने 'बिजली' नाटिक को तीन अंकों में विभक्त किया है। साथ ही इसमें वीररस का प्राधान्य है। नाटककार ने प्रथम अंक ने दो तथा द्वितीय अंक में दो दृश्य तथा तृतीय अंक में तीन दृश्यों का विधान करके कुल 7 दृश्यों में कथावस्तु को संयोजित किया है।

जहॉ तक 'बिजली' नाटिका की कथावस्तु का सम्बन्ध है, वह मेवाड़ की सुरक्षा से सम्बन्धित है। काल्पनिक 'बिजली' के द्वारा राष्ट्र भक्ति और नारी प्रतिष्ठा को लेकर इसकी कथावस्तु तैयार की गयी है।

राष्ट्रीय नवजागरण और नारी संगठन को लेकर 'बिजली' नायिका का ताना–बाना बुना गया है। 'बिजली' नाटिका की नायिका है, प्रतीयमान अर्थ में भी वह क्रोध, क्रांति, ज्वाला की प्रतीक बन कर आती है।[6]

बिजली नाटिक की कथावस्तु :

'बिजली' नाटिका में तीन अंक हैं। प्रथम अंक का प्रथम दृश्य बिजली और उसकी सखी सुषमा के संवाद से प्रारम्भ होता है। श्रंगार के स्थान पर बलिदान को महत्व देने वाला एक सहज संवाद है। सुषमा अपनी सहेली बिजली से मेंहदी

न लगाने का कारण पूछती हैं और बिजली श्रंगार के उपयुक्त नहीं मानती। वह प्रारंभ से वीरता के भावों से ओत–प्रोत है। बिजली में मॉ के प्रति गहरी आस्था है। मॉ को खपरैल के जिस टुकड़े से चोट लग जाती है। उसे बिजली खरल करती है। बाल्यकाल से ही उसकी मॉ के प्रति अटूट निष्ठा है। बिजली अंधकार के समय पैदा हुयी थी, बिजली के तड़प कर गिरने और उसी समय उसके जन्म के कारण उसका नाम 'बिजली' रखा गया।

प्रथम अंक के दूसरे दृश्य में बिजली और उनकी मॉ मदालसा का संवाद है। बिजली का मॉ से पूछना कि बिजली के गिरने से अजगर कैसे मरा? फिर बिजली की मॉ की संदूक से एक किताब मिली। जिसमें मॉ की दिनचर्या लिखी थी तथा किताब मे टूटी चूड़ी का टुकड़ा मिला। लाल स्याही से (खून) से लिखा हुआ पढ़कर बिजली अपनी मॉ की दशा से परिचित हो गयी। और मॉ के साथ कौमार्य में ही रास रचकर, उसे गर्भवती छोड़कर जाने वाले क्रूर पिता के प्रति प्रतिशोध से भर उठी। उसी क्षण से वह अजगर से प्रतिशोध के लिए तैयार हो गयी। अजगर जिसने उसकी मॉ के जीवन को बर्बाद किया। मॉ ने उसे तूफान की संज्ञा दी थी। 'बिजली' नाटिका के दूसरे अंक की प्रथम दृश्य बिजली और उसके पति सुजान सिंह के संवाद से प्रारम्भ होता है। सुजान सिंह नितांत भावुक कवि हृदय है। उसका कथन बिजली से – चॉद न होता तो कैसे जीते? बिजली का उत्तर 'जीने वाले भाग्य से जीते हैं और मरने वाले चॉदनी रात में मरते हैं। बिजली को चॉद और कोकिल नामर्दी के प्रतीक लगते हैं। उसे दखजल का दहकना, तूफान का मचलना पसंद है। वह ओठों से हृदय परिवर्तन का अग्नि भरा मंत्र फूंक रही होती है। वह कर्म रहित कल्पना को विष मानती है। उसका कथन है कि अपने बच्चे और अपनी सुन्दरी के लिए नक्षत्रों के हार गूँथना कहा की मनुष्यता है? वह विषमता की भांति पहाड़ की छाती फोड़कर निकली है। वह

अपने पति को लड़ने की प्रेरणा देती है।

द्वितीय दृश्य में बिजली और कराली का संवाद है। बिजली कराली के साथ स्त्रियों का एक विशाल संगठन तैयार करती है। वह कराली से बताता है किं देश और मॉ को छोड़कर उसे कुछ भी नहीं प्रिय है। अपने प्यारे मेवाड़ को उसके गौरव को याद रखना चाहती है। बिजली की क्रियाशीलता को देखकर सुजान का पद कथन, आज मैं सेना नायक हूँ। इस गढ़ का रक्षक हूँ और बिजली की विक्षिप्त इच्छाओं की कठपुतली हूँ।

नाटिका के तृतीय अंक का प्रथम दृश्य महल का विशाल कक्ष है। मेवाड़ के महाराणा और महारानी का संवाद है। राजा जीवट गुप्तचर से हाल–चाल पूछता है। जवट का उत्तर है कि महाराज युद्ध के आरम्भ में आपके घायल हो जाने से सेना हतोत्साहित हो गयी थी, किन्तु देवी बिजली के कारण सब ठीक हो गया। आपको चोट पहुँचाने वाले का सिर बिजली ने काटकर अपने शिविर के द्वार पर टांग दिया है। मेवाड़ की रानी ने उसे अपनी प्यारी बेटी कहकर सम्बोध् ान किया तथा महाराज ने उसे देश की मुख्य सेनापति बना दिया।

तीसरे अंक के द्वितीय दृश्य में बिजली के शिविर से प्रारंभ होता है। बिजली से कराली ने बताया कि स्वामी उपसेनानायक को सेना का भार सौंपकर अपने शिविर में कुछ लिख रहे हैं। बिजली दायित्व को छोड़कर लेखन, कविता का महत्व नहीं मानती। साथ ही देश के दुश्मन का साथ देने वाले तथा मॉ के साथ छल करने वाले का प्रतिशोध लिए हुए है। बिजली की मॉ का कथन कि तुमने दुश्मन का मार्ग रोककर एक सैनिक को काट डाला। बिजली का प्रतिउत्तर 'मॉ जिसकी छाती का खून पीने के लिए तुमने मुझे बिजली बनाया, शत्रु को घर का भेद बताने वाले उस क्रूर पिता को बंदी रूप में प्रस्तुत कराती है तथा उसका

वध करती है और मॉ से कहती है, मॉ तेरा प्रतिकार पूरा हुआ। मॉ दुष्ट पति के मृत्यु पर प्रायश्चित करती है तथा विक्षिप्त हो कर मर जाती है।

तीसरे अंक का तृतीय दृश्य महल का एक विशाल कक्ष है, बिजली भयंकर युद्ध में नर मुण्डों के संहार के बाद अपनी सहेली सुषमा के वैद्यव्य को देख कर दुखी होती है। अपनी सहेली के पति को युद्ध में मारने के कारण क्षमा याचना भी करती है। घायल होकर भी अपनी सहेली के दुःख घावों को भरने के लिए प्रयत्नशील है। सुषमा के पुत्र राजकुमार की शिक्षा का भार कराली पर छोड़ती है तथा कराली से स्त्रियों के विशाल संगठन पर बल देती है। तथा कराली से अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करती हुयी कहती है ''हर एक ने अपना प्रथम पुत्र देश के हितार्थ दिया तो निश्चय ही यह देश दस वर्ष में अजेय हो जायेगा। कराली प्रतिज्ञा करती है ''एक–एक बच्चों की घूँटी में वह कालकूट दूंगी कि उसकी हुंकार से ही संसार का काम हो जाए।[8] महाराजा का कथन यह जीवन और देश बिजली का ही है। बिजली की दवा कराने के लिए कराली वैद्य को बुलाना चाहती है, पर बिजली का यह कथन – ''यह बिजली किसी के मारे नहीं मरेगी। दवा आग और तूफान के लिए नहीं मांस के लोथड़े और मामूली खुरचों के लिए होती है''[9] और अंत में मृत्यु को समीप देखकर वह कराली सखी से ये कहती है– ओह कराली, कराली। मेरी गणासी ला, मैं उस बदतमीज यम की आंख निकाल लूँ। उफ कैसा घूर रहा है। ओ मरा मांस खाने वाले कुत्ते। खबरदार। जब तक मैं इस घर को छोड़ न दूँ, तब तक यहां अगर आया तो –

''ओ इन्द्र, खाली कर अपना सिंहासन, बिजली आ रही है–ओ मौतें, गुलाम, खींच – खींच लो मेरी आग से बनी हुई इस गाड़ी को, आसमान रास्ता कर पृथ्वी सॅभल, मैं उठ रही हूँ ब्रहम संभाल अपनी इस सृष्टि के तराजू को।''[10]

सुषमा रानी, कराली सभी बिजली के निधन पर उसकी ज्वाला के सहारे प्रकाश में आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं।

"हिन्दी साहित्य में वीरेश्वर ने अलग–अलग विधाओं में रचना कौशल चितनशील और अनुभूति का रूप व्यक्त किया है। जहॉ वे कथाकार हैं वहीं कवि भी। हिन्दी नाट्य क्षेत्र में 'बिजली' जैसी मौलिक नाट्यकृति लिखकर उन्होने अपनी प्रतिभा को प्रमाणित कर दिया।"

'बिजली' नाटिका 1934 ई. में प्रकाशित हुयी तो इस नाटिका को लेकर हलचल हुयी। पाठकों, आलोचकों, रंगकर्मियों में यह कृति चर्चित हुयी। यह नाटिका रंगमंच में नहीं खेली गयी अन्यथा इसे और भी लोकप्रियता प्राप्त होती।

वीरेश्वर की इस नाटिका में राष्ट्रीयता है और मानवीय संवेदना भी। वीरेश्वर साहित्य के अध्येता डॉ ललित का कहना है– "वीरेश्वर वीर पूजा भावों के कवि, कथाकार एवं नाट्यशिल्पी हैं। उन्होने राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना का साहित्य की विधि विधाओं से संचार किया है। राष्ट्रीयता और मानवीय संवेदना को आधार बनकर नारी चरित्र सृष्टि में वीरेश्वर बेजोड़ हैं।"[12]

वीरेश्वर का मुख्य उद्देश्य भारतीय स्वाधीनता, संग्राम के लिए अप्रतिम त्याग और बलिदान के साथ नारियों का संगठन तथा उनके द्वारा देशभक्ति रस का आस्वादन कराना है। बिजली राष्ट्रीय जागरण चाहती है। बिजली में मातृभूमि एवं माता ही सर्वोपरि है। प्राणों का उत्सर्ग कर देश को स्वतंत्र करना चाहती हैं। विजली की एक मात्र निष्ठा मातृभूमि के प्रति प्रेम है।

क्रांतिकारी बिजली के लिये भावुकता कला, कविता, प्रेम कुछ भी नही है। बिजली ने अपने पिता जो देशद्रोही थे ह्रदय की कमजोरी दूर कर उनकी हत्या कर दी।

नाट्यपरक उपलब्धियाँ :

मदालसा, बिजली की माँ का विवाह परम्परागत रूप में नहीं होता। वह कौमार्य का समर्पण करती है, और उसको प्रेमजाल में फँसाने वाला पति उसे गर्भावस्था में छोड़कर पाँवों से कुचलते हुए निकल जाता है। मदालसा प्रतिशोध की अग्नि में जलती है। अंधकारपूर्ण रात्रि में बिजली के तड़पन के साथ ही 'बिजली' का जन्म होता है। बिजली पिता के प्यार से वंचित है। उसे अपने तथाकथित पिता की काली करतूतों का पता चलता है और वह अपनी माँ का बदला लेने के लिए प्रतिशोध से भर उठती है।

'मदालसा' के माध्यम से वीरेश्वर जी ने एक ऐसी नारी का चित्रण किया है, जो पति के स्नेह से वंचित, प्रतिशोध से भरी हुयी अपनी पुत्री के प्रति आशावान है। मदालसा में आत्मसम्मान है। वह पति से प्रतिशोध तो लेना चाहती है, किन्तु उसका मरण नहीं देखना चाहती। पुत्री बिजली द्वारा उस अजगर को मारने से उसे पीड़ा होती है और संतोष भी। वह अपने को नहीं बचा पाती। उसमें भारतीय नारी का भाव प्रमुख है।

"'बिजली' नायिका की घटनाएं काल्पनिक हैं। स्वतंत्र चेतना उद्दीप्त, प्रतिशोध की आग से भरी हुयी, करुणा से ओतप्रोत चरित्रों की दृष्टि में लेखक को अद्भुत सफलता मिली है।"[13]

काल्पनिक चरित्रों एवं घटनाओं द्वारा लेखक ने देशद्रोही और कायर पात्रों की दुर्गति दिखायी है। साथ ही नारियों के संगठन और बालकों में राष्ट्रीय चेतना के संस्कार जगाने के लिए बिजली, कराली जैसे पात्रों की स्वतंत्रता भी है। मेवाड़ की रानी राजकुमार, सभी का देश के बलिदान के लिए तत्पर होना ही नाटिका का लक्ष्य है। नवयुवकों और नवयुवतियों में कर्तव्य की भावना भरना ही लेखक

का उद्देश्य है।

बिजली आक्रांताओं से लड़ने में सक्षम है वह आक्रांताओं को आगे बढ़न से रोकने में सफल है वह बलिदान के लिये हर क्षण प्रस्तुत है। अपनी कर्मठता और देशभक्ति के कारण महाराणा ने उसें प्रधान सेनापति का गौरव प्रदान करते हैं और महारानी उसे मेवाड़ की शान मानती है।

'बिजली' वीरेश्वर की एक ऐसी कल्पना सृष्टि है जिसके माध्यम से लेखक ने थकी हारी सेना में एक नया मनोबल पैदा कर स्वतंत्रा के लिये सिर बलिदान करने की प्रेरणा प्रदान करता है। वह थकी हारी सेना में विश्वास लौटाना चाहती है। मेवाड़ कें इतिहास में एक नया तूफान उठाना चाहती है। बिजली के कारण न केवल आक्रान्ताओं को पीछे हटना पड़ता है बल्कि उन्हें काल के गाल में समाना पड़ता है। काली एवं भैरव शिव जैसे पौराणिक पात्रों के द्वारा लेखक ने युद्व के वातावरण को व्यक्त किया है। रक्त से काली के खप्पर भर–भर कर पीने शिव के द्वारा मुण्ड माला को धारण कर तृप्त होना, काली का महानृत्य करना आदि पौराणिक बिम्बो से लेखक ने विजय का चित्र खींचा है।

दुष्कर्म, दुस्वाभिमान माँ के सतीत्व के लुटेरे पति और अपने तथाकथित पिता की हत्या बिजली के द्वारा की जाती है। यह घटना पूर्णतः काल्पनिक होकर भी बिजली के संघर्षशील जीवन, माँ के प्रति सम्मान और क्रूर पिता के प्रति प्रतिशोध के भाव को व्यक्त किया गया है।

बिजली मे अधिकार लिप्सा नही है। महाराणा उसे प्रधान सेनापति बना देते हैं किन्तु वह पद के प्रति लिप्सु नही है उसकी प्रबल आंकाक्षा शक्तिशाली संगठन की है। नारियों की विशाल सिंहवाहिनी की है। देश में स्वतन्त्रता के प्रति रूचि जगाने की है।

बिजली में प्रतिशोध की भावना स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक है। मॉ अकेले ही बिजली का पालन–पोषण करती है तथा मॉ के बाक्स से एक किताब के पृष्ठों पर उसके पति द्वारा किए गये दुष्कर्मों एवं अमानवीय क्रूर व्यवहार को जानकर वह प्रतिशोध. से भर उठती है। तथा उस नर पिशाच को मृत्युदण्ड देती है।

नरसंहार और युद्ध की विभीषिका के बीच वह अपनी सहेली सुषमा के वैद्यव्य के दुख से दुखी है। उसके घावों को भरने के लिए वह चिंतित हो स्वयं के घावों की चिंता छोड़कर सुषमा की वेदना के प्रति अत्यंत संवेदनशील है।

नारी जनित करूणा का रूप ऐसे स्थानों में देखते ही बनता है। स्त्रियों का स्वाभिमान, तेजस्विता, राष्ट्रभक्ति, मातृत्व सभी अद्‌भुत हैं। बिजली में अद्‌भुत संगठन शक्ति है और वह राज परिवार तथा राज्य में अत्यन्त लोकप्रिय है। वह अपने पीछे महिलाओं की एक सेना छोड़ जाना चाहती है और युवकों को बलिदान की प्रेरणा देती है।"[14]

बिजली के चरित्र में मातृ–एवं राष्ट्ररक्षा की जिस छवि को लेखक ने उतारा है, वह राष्ट्रीय चेतना की सास्वर उद्‌भावना है। बिजली का अंग प्रत्यंग राष्ट्रीय भावना से उद्वेलित है। वह मेवाड़ मुक्ति संगठन की नायिका है। मातृ एवं मातृ भूमि की रक्षा के लिए सन्नद्व है। सफल सेनानी के रूप में रणवाहिनी को विजय श्री प्रदान करने वाली है।

मदालसा के जीवन में घटित घटना किसी भी नारी की हो सकती है। ऐसे पुरुष जो छल पूर्वक कौमार्य भंग करते हैं। फिर दायित्व बोध से हटकर पॉवों के नीचे कुचलते हैं, जिन गर्भधारण करने वाली कुमारियों का जीवन आंतक के साये में बितता, पिता या संरक्षण के बिना बालक–बालिकाएं विद्रोही हो जाते है।

बिजली अपने पति को जो भावुक है तथा काव्य रचना में तल्लीन रहना चाहते हैं, उन्हें राष्ट्र का बोध कराती है। स्वयं निष्ठावान नागरिक के रूप में युद्ध करती है। सेना का संचालन करती ह। युद्ध में घायल होकर स्वयं प्राण–विसर्जित करती है। मरते समय उसे देश की स्वतंत्रता एवं सेनाओं के गठन की चिंता रहती है।

बिजली निज धर्म का निर्वाह करती है। अपनी सहेली सुषमा के पति के युद्ध में मारे जानी पर उसकी वैधव्य स्थिति पर दुखी है। उसके बेटे के अध्ध्यन का उत्तरदायित्व अपनी प्रिय सखी कराली पर छोड जाती है।

मातृ भूमि के रक्षार्थ आक्रांताओं से युद्ध करती हुयी प्राणों का विसर्जन करती है।

पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियां घर और बाहर दोनो जगह शोषित होती है फिर अविवाहित माँ बनने वाली स्त्री का जीवन ही शोषण और संघर्ष की दास्तान बनकर रह जाता है। मदालसा ऐसी ही स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। जो पति के प्रति पूर्ण समर्पण करती है, वहीं पति द्वारा मदालसा का तिरस्कार, अन्याय, परित्यक्त होना वर्णित है। स्त्री जीवन की इस विसंगति की ओर नाट्य शिल्पी ने ध्यानाकर्षण किया है।

'बिजली' के माध्यम से ऐसी नारी का चित्रण लेखक ने किया है। जो निर्भीक, तेजस्विनी, शास्त्रार्थ में निपुण सैन्य संचालक, युद्ध में दक्ष है। उसे मातृत्व प्राप्त नहीं है। अतः वह अपने भीतर ममत्व के एक विशेष प्रकार का आभाव अनुभव करती है।

शासक वर्ग नारियों में महारानी (महाराणा की पत्नी) मदालसा (बिजली की

माँ), कराली (बिजली की सहेली) आदि पात्रों का चरित्र चित्रण गौरवपूर्ण ढ़ंग से किया गया है। जहॉ मदालसा (बिजली की मॉ) उपेक्षित रखने वाले अन्यायी क्रूर पति की मृत्यु पर अपने प्राणें की बलि चढ़ाकर आदर्श भारतीय नारी के चरित्र की रक्षा करती हैं, वहीं बिजली अपने प्राणों की परवाह न करते हुए अपनी सहेली सुषमा के घावों को भरने के लिए प्राणों की आहुति देती है। कराली दायित्व निर्वहन के लिए संघर्षरत है। नारी जिसे स्नेह से वंचित होना पड़ा बिजली उसी का प्रतिनिधित्व करती है। बिजली जो देश के लिए बलिदान हो जाती है, जिसे मातृत्व से पूर्ण होने का अवसर नहीं मिल पाता।

मेवाड़ की स्वतंत्रता का कथानक, अतीत के स्वर्णिम पृष्ठों से लिया गया है, किन्तु नाटककार ने आधुनिक युग की संतप्त नारी जिसका कौमार्य भंग किया गया है। और उसके प्रेमी द्वारा शोषण करके, उसे छोड़ दिया गया है, साथ ही नारियों का संगठन और जागरण का सूत्र जोड़कर कथावस्तु से आधुनिकता का समावेश बड़े कौशल के साथ कराया गया है।

दर्शकों और श्रोताओं के साथ बिजली नाटिका का सजीव चित्र प्रस्तुत करके नाटककार ने सफलता को वरण किया है।नाटककार ने इतिहास से मेवाड़ का जो प्रसंग लिया है, उसे अपने कौशल से छॉटा है तथा मेवाड़प्रिय महाराणा, महारानी, राजकुँवर आदि का संयोग करके इसे इतिहास के संदर्भो से जोड़ दिया है।कुशल नाटककार की भांति ठा. वीरेश्वर सिंह ने जिस घटनाओं का वर्णन किया है, वे काल्पनिक होकर भी सजीव हो गयी हैं और इतिहास के रस की अनुभूति में बाधा नहीं उत्पन्न करतीं।नाटककार ने बिजली नाटिका में आधिकारिक कथा का ही पल्लवन किया है। प्रासंगिक कथा और अधिकारिक कथा के अंतराल को मिटा दिया है।अधिकारिक कथा वस्तु को राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत

करने में नाटककार ने जिस कौशल का परिचय दिया है, वह नाट्यकला की चरम उपलब्धि है।

प्रासंगिक कथाएं बिजली का अपनी सखी के पति की हत्या के कारण वैध ात्व होने की पीड़ा का अनुभव तथा कराली द्वारा स्त्रियों के संगठन आदि के प्रसंग राष्ट्र प्रेम को और भी पुष्ट करते हैं।

नाट्य दर्पणकार के अनुसार – सर्वतोन्मुख्य वृत्त के लिए किए गए प्रयत्न के द्वारा ही प्रासंगिक वृत्त की सिद्धि करनी चाहिए। इस दृटि से वीरेश्वर सिंह को अद्भुत सफलता मिली है। समस्त घटना चक्र तथा वृत्त मुख्य वृत्त को आध ार देता है।

बिजली नाटिका में जिस कथावस्तु संयोजन नाटककार ने किया है, वह सर्वश्राव्य कोटि की है, जो सबके ही सुनने योग्य है, अतः स्वागत कथा का कोई उपयोग नहीं किया गया।

" वस्तु संगठन की दृष्टि से नाटक कार ने जिस राष्ट्रीय जागरण, नारी जागरण तथा नारी शोषण के विरोध में न्याय दण्ड विधान के मूल संदेश को प्रतिपादित करना चाहा है उसे कथानक में भावुक रूप से प्रस्तुत किया गया है "। [16]

कथावस्तु की आधार मूल सामग्री इतिहास, गाँधी आंदोलन, नारी जागरण तथा अवैध सम्बंधों और कामशोषण आदि विषयों से सम्बन्धित है। अतीत और वर्तमान की दूरियों को एकाकार करने में नाटककार को सफलता प्राप्त हुयी है।

अन्य पात्रों की तुलना में नारी पात्र अधिक सक्रिय, राष्ट्रभक्त एवं बीरोचित मूल्यों से युक्त है।

राष्ट्रीय आंदोलनों को नाटकों में प्रचीन इतिहास के द्वारा प्रस्तुत करना एक विशेष कौशल का कार्य है। इस कार्य को 'बिजली' नाटिका के माध्यम से किया गया है।

प्रगतिशील नाटककार में वीरेश्वर श्रमिक और किसान के साथ ही नारियों को भी आजादी की लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करते हैं।

वीरेश्वर की संवाद योजना वीरोचित, प्रसंगानुकूल तथा राष्ट्रीय जीवन धारा की ओर प्रचण्ड प्रवाह के साथ विचारों और भावों को तरंगित करते हैं।

" बिजली 'नाटिका' प्राणों का उत्सर्ग करके भी एक नए सूर्योदय, एक नए संगठन की आधार शिला धरती है, अतः दुखांत न होकर वीरांत प्रकार के हैं।"[17] श्रृंगार, भोग विलास और कामुक प्रकरणों को वीरेश्वर के नाटकों में स्थान नहीं मिलता। वे मेंहदी के स्थान पर रक्त की लालिमा से श्रृंगार के पक्षधर हैं।

" काव्य और कला की उपादेयता तभी तक है जब तक देश सुरक्षित है। बिजली सुजान के काव्य प्रेम को उस समय चिन्हित करती है, जब देश में युद्ध का वातावरण हो। इस प्रकार एक छोटी सी कृति 'बिजली' नाटिका में, इतने सारे मूल्यवान विचारों को पिरोने का कार्य वीरेश्वर ने जिस भाषा को मौलिकता के साथ किया है, वह प्रशंसनीय है।"[18]

अपने चरित्रबल से बिजली एक साधारण सैनिक से सेनापति का पद प्राप्त कर लेती है, तथा महाराणा उसे देश का सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हैं, राजकुंवर से यह कहकर कि यह देश 'बिजली' का है।

नाटिका को योद्धा रूप में प्रस्तुत करने में नाटककार को अद्भुत सफलता मिली है।

'मदालसा' शोषण का शिकार बनती है, जिसका प्रसंग करुण रस की सृष्टि करता है। अन्यायी अजगर (शोषक पुरुष) के प्रति मदालसा और उसकी पुत्री 'बिजली' में प्रतिशोध का भाव है। अजगर के प्राणांत में वीरता का संचार होता है और फल की प्राप्ति होती है –

वीररस के अनुकूल वीरोचित भाव, भंगिमा, कथन, संवाद, भाषा सभी अत्यंत उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत हुए हैं। कतिपय वाक्य द्रष्टव्य हैं – बिजली – "एक क्षण जीऊँगी, पर जीऊँगी विजयी की तरह। चमकूंगी, तड़पूँगी और प्रहार करते हुए निकल जाऊँगी।"[19] बिजली आत्मपरिचय देती हुई अपनी शीर्षक को उद्घाटित करती है –

"सूर्य के घोड़ों की पीठ पर कोड़ों से पड़े हुए निशान मेरे अग्नियान की गति का आभास देंगे। बुलबुल की बोली और कोयल की कूक नहीं, बज्रपात का वक्ष विदारक नाद मेरा संगीता होगा।"[20]

"जीने वाले आग से भी जीते हैं और मरने वाले इस चाँदनी रात में भी मरते हैं।"[21]

"मेरा तो प्रवाह ही जीवन है। मैं पहाड़ की छाती फोड़कर निकली हूँ, और फिर निकलूँगी, और दुनिया को काटते हुए महासागर में जा मिलूँगी।"[22]

वीरेश्वर के बाल एकांकी, एकता क्लब/[23]रंगमंच पर व्यापक प्रभाव उत्पन्न करने वाला है। भाषागत भिन्नता को लेकर एकता का प्रयत्न करने वाला यह एकांकी उद्देश्यपूर्ण है। गप्पी और गप्पा वालों के माध्यम से हास्य–व्यंग्य किया गया है और एकांकी को सरल तथा अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है।

भाषाओं पर पेट की भूख की प्रधानता स्थापित करने वाला एकांकी अपने

आप में एक क्रान्तिकारी परिकल्पना वाला एकांकी है।

"वीरेश्वर ने भाषागत भिन्नता के प्रश्न को उठाकर और मौलिकता का परिचय दिया है तथा पेट की भूख सर्वोपरि है, वहाँ भाषाओं का अंतर मिट जाता है। नाटककार का आधुनिक विचार अभिनंदनीय है।"[24]

"वीरेश्वर ने हिन्दी बाल एकांकी के क्षेत्र में यद्यपि एकल एकांकी, एकता क्लब, की रचना की है, किन्तु अपने अभूतपूर्व उद्देश्यों में एकता की स्थापना की सफलता को प्राप्त किया है।"[25]

हिन्दी बाल एकांकी में वीरेश्वर का नाम एक ही एकांकी 'एकता क्लब' से जुड़ जाता है और राष्ट्रीय चेतना के जागरण में यह एकांकी अपना नया कीर्तिमान भी स्थापित करता है।

समकालीन हिन्दी नाटककारों में वीरेश्वर सिंह ऐसे नाटककार है, जिसमें राष्ट्रीय –सांस्कृतिक धारा दिखाई पड़ती है। राष्ट्रीय नाटकों की रचना का जो शुभारम्भ भारतेन्दु युग में हुआ, जिसे प्रसाद तथा उनके उपरान्त हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविन्द दास, शिवप्रसाद सिंह, देवराज पथिक आदि ने देशभक्ति के भावों का अंकुरण किया। वीरेश्वर सिंह 'बिजली' नाट्य कृति एवं 'एकता क्लब' एकांकी के द्वारा उसी परंपरा को आगे बढ़ाया। ये दोनों कृतियॉ देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता, भाषायिक एकता की अविस्मरणीय कृतियॉ हैं।

देशभक्ति को स्वतंत्र रस के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हो चुकी है। देशभक्ति का रस देखना हो तो वीरेश्वर का नाट्य साहित्य अल्पमात्रा में होकर भी पर्याप्त रसान्दोलित करने वाला है। देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता के भाव से लेखक परिचित है। राष्ट्रीय एकता की अन्तःधारा इन कृतियों में प्रवाहमान है। "देशप्रेम में मातृप्रेम की मिश्रित अनुभूतियॉ भी वीरेश्वर के नाटकों की उल्लेखनीय विशेषता है।

बिजली के द्वारा मॉ के शत्रु का प्रतिशोध तथा बलिदान के द्वारा मेवाड़ की रक्षा मातृ एवं मातृभूमि दोनो के प्रति कृतज्ञता का भाव उत्पन्न करती है। वीरता और करुणा का विचित्र अनुबंध वीरेश्वर की नाट्य कृति 'बिजली' में देखने को मिलता है।''

'बिजली' में देशभक्ति, मातृभक्ति का व्यापक रूप परिलक्षित होता है। उत्साह, क्रोध, श्रृंगार आदि भावों को देशभक्ति का अंग बनाकर नाटककार ने प्रस्तुत किया है। बिजली में आक्रोश है, माँ के शोषण के प्रति। उसमें उत्साह है, मात्भूमि की रक्षा के लिए। वह मातृभूमि को शत्रुओं से पद दलित होकर नहीं देखना चाहती है, और न ही मॉ के यौवन का शोषण करने वाले अजगर को माफ करना चाहती है। मातृभूमि के प्रति अखंड निष्ठा और शोषण के प्रति आक्रोश और विद्रोह दोनो को मूर्तिवत करने में नाटककार को पूरी सफलता मिली है।

शत्रुओं के आक्रमणों से सीमाओं को बचाने के लिए बिजली ही सक्षम है। वह भावी, आक्रमणों से मेवाड़ को मुक्ति दिलाती है। उसके लिए नारी जागरण, नारी संगठन, कूकी आंदोलन का सूत्रपात करती है। राष्ट्र की आशाएं और आकांक्षाएं 'बिजली' के रूप में बची रहती है।

वस्तुतः 'बिजली' नाट्यकृति देशभक्ति एवं मातृभक्ति की प्रतीकात्मक, प्रतिनिधि एवं प्रेरक कृति है, जो सहृदयों को वीरभावों, मातृपूजा एवं राष्ट्रभक्ति के भावों से ओतप्रोत करती रहेगी। 'बिजली' के लिए देश और मॉ को छोड़कर तीसरी चीज इस संसार में नहीं है।''[26] ''बिजली मेवाड़ के गौरव को अक्षुण्य रखना चाहती है।'' मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आपने प्यारे मेवाड़ को और उसके पूर्व गौरव को याद रखियेगा।''[27] राजा का कथन बिजली के चरित्र को उद्घाटित करता है। 'शाबास! वीर पुत्री शाबाश! भारत का गौरव और मेवाड़ की

स्वत्रंता तुम्हीं जैसों से बनी है।''[28]
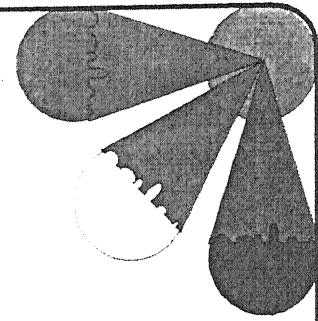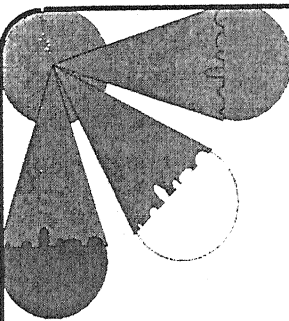
वीरेश्वर की नाट्यकृति वीररस से आपूर्ण जीवन अग्नि को फूँक–फूँक कर सुलगाने वाली कृति है। एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक फैलने वाली रचना है। नाट्यकृति में देशप्रेम के अग्नियात्र है। वक्ष–विदारक संगीत है। हृदय–हृदय में परिवर्तन का अग्निमय मंत्र फूंकने वाली नाट्य कृति ने कर्म और राष्ट्रधर्म का शंखनाद किया है। काव्य–कला को युद्ध कला में परिवर्तन कराने का संकेत नाट्य कला का मुख प्रतिपाद्य है।

संदर्भ

1. 'बिजली', वीरेश्वर सिंह, (प्रकाशकीय टिप्पणी) ऋषभचरण जैन पृ. 1
2. नाट्यशास्त्र, आचार्य भरतमुनि
3. तदुपखित, पृ.
4. प्रबोध चन्द्रोदय एवं संकल्प सूर्योदय नाटको का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रेरक, डॉ. अनामिका पृ. 25
5. अवध विलास, लालदास, भूमिका पृ. 5
6. वीरेश्वर का रचना संसार , डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 28
7. बिजली, वीरेश्वर सिंह, साहित्य मण्डल दिल्ली, ऋषभचरण जैन द्वारा प्रकाशित, 1934 ई.
8. तदुपरिवत पृ. 52
9. तदुपरिवत, पृ. 54
10. तदुपरिवत, पृ. 54
11. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 32
12. तदुपरिवत, पृ. 35
13. तदुपरिवत, पृ. 38
14. तदुपरिवत, पृ. 40
15. तदुपरिवत, पृ. 45
16. तदुपरिवत, पृ. 28
17. तदुपरिवत, पृ. 25
18. तदुपरिवत, पृ. 28
19. तदुपरिवत पृ. 19
20. तदुपरिवत, पृ. 20

21. तदुपरिवत पृ. 20
22. तदुपरिवत, पृ. 26
23. एकता–क्लब, वीरेश्वर सिंह पृ. 1
24. वीरेश्वर सिंह का रचना संसार, डॉ. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 28
25. तदुपरिवत, पृ. 30
26. बिजली, वीरेश्वर सिंह पृ. 33
27. तदुपरिवत, पृ. 32
28. तदुपरिवत, पृ. 38

अध्याय ६

वीरेश्वर साहित्य का कला पक्ष

वीरेश्वर की काव्य की भाषा
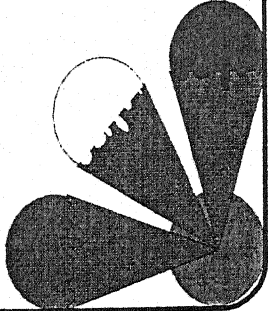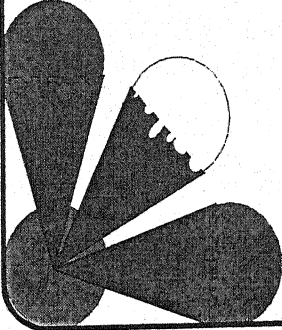
वीरेश्वर के कथा साहित्य की भाषा

वीरेश्वर के नाट्य साहित्य की भाषा

छन्द योजना

मुहावरे

लोकोक्तियाँ, अन्य प्रयोग

अध्याय- ६

भाषा और अभिव्यक्ति का घनिष्ठ और अविच्छिन्न सम्बंध है। बैलेरी का कथन है "काव्य का रूप धारण करने वाली भाषा, भाषा के भीतर एक एक भाषा है।"[1]

भाषा की सत्ता अत्यंत व्यापक है। शब्द को ब्रह्म कोटि में रखकर आचार्य चंद ने इसी व्यापकता की ओर संकेत दिया है–

"शब्द ब्रह्म के अर्थ विचारो

चरचा भक्त शिष्य अनुसारो ।।[2]

भाषा संस्कृति की अभिव्यंजना है। समकालीन हिन्दी कवि धूमिल ने भाषा को तमीज की संज्ञा दी है –

कविता

भाषा में

आदमी होने की तमीज है"[3]

समकालीन कवि, समालोचक अज्ञेय के शब्दों में कविता का जो भी गुण है, वह वस्तुतः भाषा का ही गुण है।"[4] तार सप्तक के द्वितीय संस्करण के कवि वक्तव्य 'पुनश्च' में कहा गया है। काव्य सबसे पहले शब्द है और सबसे अंत में भी यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। शब्द की अर्थवक्ता की सही पहचान ही कृति और कृतिकार की पहचान है। वीरेश्वर सिंह ने भाषा को रचनात्मक सृष्टि का आधार माना है।

काव्य की भाषा

महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयत्नों से खड़ी बोली हिन्दी रचना में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। सर्वश्री नाथूराम 'शंकर' शर्मा, मैथलीशरण गुप्त, राम नरेश त्रिपाठी, सोहनलाल द्विवेदी आदि अनेक कविगण खड़ी बोली के माध्यम से काव्य रचनाएं कर रहे थे। हरिऔध, जयशंकर प्रसाद, निराला ने खड़ी बोली में कविताओं को लिखकर उत्कर्ष तक पहुँचाया। वीरेश्वर के काव्य की भाषा खड़ी बोली है। उनकी भाषा का अध्ययन करने के लिए उनकी भाषा को कई स्वरों में विभाजित कर सकते हैं।

1. **खड़ी बोली के साथ ही आंचलिक ग्राम्य भाषा का प्रयोग।**
2. **कुछ खड़ी बोली की कवितायें।**
3. **सरल खड़ी बोली की कवितायें।**
4. **बाल गीतों की भाषा**

वीरेश्वर कविता में नयी भाषा, एकता की भाषा के भागीरथ हैं। उनका भाषा चिंतन अन्य कवियों से कुछ भिन्न है। वे भाषा को 'तकरार' का विषय नहीं मानते। भाषा भेदों से हटकर वे पेट की भाषा के कवि हैं और नागरी, के माध्यम से नागर भाषा को जगाना चाहते हैं।

'भीखू ना लिखिए ना पढ़िए
लिखे पढ़े तकरारी
छाती को पाती करि लीजे
मरिए मार कटारी।'[5]

''एक ही माता से उत्पन्न पुत्रों द्वारा भाषाओं का मतभेद कवि को स्वीकार नहीं है –

''सब पेटन मॉ एक अगिन,

सब खारै अॅसुवा रोवैं।

बाल गोपाल सवै सम किलकैं,

यसुदा दूध पिलावैं।

यशुदा दूध पिलावैं यारों

सोह माखन सब खाए।

स्वारथ कौन विलग सब बोलौ

एक मात के जाए।''[6]

वीरेश्वर सिंह की 'भीखू की कुंडलिया' काव्य की भाषा चित्रात्मक है तथा ग्राम्य आंचल की बोलियों से युक्त है।

'रे ग्रीष्म बिरथा दहकै

जनि लहकै अगिन उँबाए

पेटागिन भीखू की तुमतें

जरैं दून अंगारे

जरै दून अंगारे, यारो

रूख रोट औ पानी

मारे मरै न पंजर भव

को अगम चिलम विज्ञानी

एक चिनगी है चिलम में

एक चिनगी तन मॉहि

भीखू फूॅकै मगन मन

अग जग अलख जगाहिं ।।''[7]

उपर्युक्त छंद में ग्रीष्म में (ग्रीष्म) विरथा (व्यर्थ) अगिन (अग्नि) पेटागिन (पेटाग्नि) रूख (रूक्ष) आदि शब्दों का प्रयोग तदभव रूप में किये गये है। '' ग्रामीण पात्रों की भाषा में तत्सम के स्थान पर तद्भव के प्रयोग सहज स्वाभाविक बन पड़े हैं। कवि विशिष्ट संज्ञाओं में भी दहकै, लहकै, बारै, फूँकै आदि प्रयोग से भावाभिव्यक्ति में सहजता उत्पन्न की है। तद्भव शब्दों में समुन्दर, भगत, तिरवनी, मंजूर आदि के प्रयोग मिलते हैं।''[8]

ध्वन्यात्मक भाषा

वीरेश्वर की काव्य भाषायें ध्वन्यात्मक शब्दावली का प्रयोग विशेष महत्व का है। यथा लक्ष्य, चित्रात्मक वर्णन हेतु ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ –

अ. 'हर हराय डटकै अंधड़।''[9]

ब. ''छहर छहर लहरै लहर।''[10]

स. चमचम चमकै चॉद सितारा।''

चमचम मोहन टोपी''[11]

द. बम शंकर, हर गंगे, हर हर।''[12]

य. पानी बरसा झम्माझम।''[13]

र. चुप, चुप, चुप, चुप, चुप, चुप, चुप

हैं स्वराज्य का यह घन घुप्प।''[14]

आंचलिक भाषा

वीरेश्वर के काव्य में आंचलिक भाषा का सौन्दर्य भी विद्यमान है। बुन्देलखण्ड के आंचल की शब्दावली भी स्वाभाविक रूप में प्रयुक्त हुयी है –

अ. दुबरानी सरिता, सूखे
सर जरी, घास और पाती
वरै विषम दुपहरिया तेरी
जंगल जीव संघाती।''[15]

इन पंक्तियों में दुबरानी, जरी, बरै आंचलिक शब्द हैं; जो दुर्बल, जलने और बरने के अर्थ में बुन्देलखण्ड के बॉदा आंचल में प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार के अन्य आंचलिक शब्द भी वीरेश्वर के काव्य में प्रयुक्त हुए हैं –

झमकै, कछोटा, हरिआय।''[16]

गरै, ढ़रै, मड़ैया, धकापेल, माई, तलैया, झॉवर

चमकै मगन, पवन संग झमकैं

पहिर कछोटा पंजर ढ़ाढ़ा सजनि कौन रस डोलै

पेट ने पीक रटन भरै हाड़न जल हरिआय।''[17]

भीखू बैठे फूस मड़ैया देखै जगत पॅवारे।''[18]

धकापेल नावन की सेनी।''[19]

जय गंगा माई।''[20]

थिर जल ग्राम तलैया जब तक झलकै विश्व अलेखे।''[21]

सॉवर रंग, झॉवर मुख मण्डल झलकि रहे सित केसा।''[22]

गीतात्मक भाषा

भाषा में गीतात्मकता का उपयोग वीरेश्वर सिंह ने किया है। प्रगति चेतना के गीतों से भाषा का श्रृंगार किया गया है। नवीन मूल्यों की रचना में नवगीतात्मक एक भाषा के प्रयोग प्रभावी सिद्ध हुए हैं –

''भूखी है मजूरी
भूखी है किसानी
भूखा है बुढ़ापा
भूखी है जवानी
बहता है पसीना
मेहनत का है जीना।
विधि का विधान क्या
संसार कौन है।
दो हाथ हमारे
क़रतार कौन है।
सब पेट एक है
दुख राग एक है
भूखों की भूख में
सब आग एक है
बहता है पसीना
मेहनत का है जीना।।''[23]

चित्रात्मक भाषा

वीरेश्वर के काव्य की उत्कृष्टता, उसकी चित्रात्मक भाषा है। वीरेश्वर चित्रात्मक भाषा प्रयोग, में एक सफल शब्द शिल्पी के रूप में आते हैं –

"कठिन राज है शिशिर तिहारो
दिनकर तेज सिरानो
गरै बरफ सी रात, ढ़रै दिन
पंजर ठिठुर ठिरानो।
पंजर ठिठुर ठिरानो, यारो
सकल जीव हिम मारे
फटी फतुहिया, पहिरे भींखू
चिलम जोग मन धीर
काल भसम पँजर रमे
पेटागिन धँधुआय
चिलम जगी सुन रे शिशिर
तेरे हिम न बुझाय ।।"[24]

उपर्युक्त छंद में वर्षा के गलने, पंजर के ठिठुरने फटी फतुहिया के पहनने के चित्र चित्रात्मक भाषा के कारण अत्यन्त सजीव हो उठे हैं। कवि ने चित्रात्मक भाषा के द्वारा वीर रस की भी सुंदर व्यंजना की है–

"तन चेतना आई, यारो।
उमगि चली मन गंगा
मारि छलांग पॅवारै सागर
ऐसेइ छन बजरंगा ।"[25]

बाल्योचित भाषा

बालगीतों एवं किशोरों के लिए लिखी गयी कविताओं में वीरेश्वर सिंह ने जिस खड़ी बोली का प्रयोग किया है वह सरल, प्रसाद एवं ओजगुण युक्त, बाल मनोविज्ञान के अनुकूल भाषा है। उस भाषा में नवज़ागरण की प्रेरणा भी है –

अ. "उठो छोड़ आलस, जगत उठ पड़ा है
विधाता नया एक दिन गढ़ रहा है
नयी प्राणदायक हवा चल रही है
नयी लालिमा पूर्व में ढ़ल रही है"[26]

ब. "एक धौबी के पालतू ये हैं,
शेष दुनिया के फालतू ये हैं
जेठ वैसाख में मोटाते हैं
ठेठ बरसात में सुखाते हैं।"[27]

स. चलो आज गॉधी जयंती मनावें
चलो आज मिल प्रेम के गीत गावें ।"[28]

द. पानी बरसा झम्मा झम
फिसला पैर गिर गए हम
चल चल रे अंग्रजी राज़
बहुत दूर है अभी स्वराज।"[29]

य. सबेरा हुआ है सबेरा हुआ है।
अहा, फिर से सूरज का फेरा हुआ है।
गया देश को छोड़ करके अंधेरा,
नया छा गया सब तरह है उजेरा ।।"[30]

भाषायिक ऐक्य

विविध भाषाओं के शब्दों के प्रयोग कवि ने अपने काव्य में किया है। भावों को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए विभिन्न भाषाओं के शब्द स्वीकृत किये गये हैं।

शब्दावली :

आर्डिनेन्स कन्ट्रोल [31]

फूड राशनिंग [32]

जुलम[33]

तबाही [34]

जालिम [35]

सरकार [36]

इन्कलाब[38]

अंग्रेजी[38]

बन्दूक[39]

लंदन[40]

तदवीर[41]

ग्रेन प्रोक्योरमेंट[42]

वीरेश्वर अंग्रेजी साहित्य के भी विद्वान थे। उन्होने अंग्रेजी के रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े हुए अनेक शब्दों का प्रयोग किया है तथा भाषा को समृद्ध बनाया है। अंग्रेजी के ये शब्द हमारे अपने जैसे प्रतीत होते हैं।

सोऊ अब तुम कह चीन्हे यारो, महलन के रंग रसिया।
भीखू तुम्हरो रंग न मानै चिलम जोग बनबसिया ।।

रंगरसिया' बनवसिया' जैसे प्रयोग कवि की भाषा सज्जा तथा भाषा को ग्राम्योचित वातावरण एवं प्रसंगों में ढ़ालने की शक्तिक्ता को प्रकट करते हैं।

वीरेश्वर की कविताओं में संस्कृतनिष्ठ साहित्यक शब्दावली का प्रयोग मिलता है। इससे कवि की भाषा की रुचि सम्पन्न्ता का आभास मिलता है। यथा –

तत्सम शब्दावली :

स्वस्तिं [38]

अगस्त्य [39]

निर्भय [40]

विषधर [41]

स्वातत्रं [42]

जान्हवी[43]

भगीरथ [44]

निगमागम [45]

सृष्टि [46]

थम्ब [47]

मुहावरे लोकोक्तियाँ :

वीरेश्वर सिंह ने काव्य को जीवन्त, अर्थपूर्ण और जीवन दर्शन से सम्पृक्त करने के लिये जिन मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है वह जीवन अनुभूतियों से जीवंत है। उदाहरणार्थ –

"योद्धा रहे पापड़ बेल ,
यह देखो किस्मत का खेल।" [48]

एक एक चींटी मे एक एक गज का बल।'' [49]

चींटी ने चाट लिया हाड़, हाड़, हाड़ रहे।''[50]

जीवन्त एवं ज्वलंत भाषा

क्रांति चेतना के कवि वीरेश्वर ने जिस भाषा को गढ़ा है, उसमे जीवंत और ज्वलंत भाषा प्रयोग है। भाषा की प्रभाव शक्ति मारक शक्ति के रूप में काम करती है। जनता के कवि के रूप में जन कवि के रूप में जीवन के कवि के रूप में और जागरण के कवि के रूप में जिस भाषा को निराला ने चुना था, उसे और अधिक प्रभाव पूर्ण बनाने में वीरेश्वर सिंह को सफलता मिली है। कतिपय उदारण दृष्टव्य है।–

अ.

कतार की कतार, धुँआधार
चींटियॉ अपार
चल पड़ी चपल, उमड़, सबल
सहस्र दल सवार
एक, एक, एक
हॉ, असंख्य औ अशेष
एक रंग,
एक ढंग
एक संघ
राजा है कोई, न कोई है रंक
चींटी की दुनिया में चींटी निशंक।
रोकेगा कौन भला इनका दल
एक एक चींटी में एक एक गज का बल
चींटी को कौन त्रास

एक भूख और प्यास
चींटी को भूख लगी, विधना की कौन आस
धरती को छेद चली
भूधर को भेद चली
सारा संसार
पेड़ पल्लव प्रासाद
चाट जंगल कछार
बढ़ी चीटियां अपार
चींटी का नाम जंग
चींटी का काम जंग
दुनिया के जीवन में
चींटी का राम जंग
दिग्गज चिंघाड़ रहे
केहरी दहाड़ रहे
चींटी ने चाट लिया
हाड़ हाड़, हाड़ रहे।''[51]

आजादी के पूर्व सन् 1946 में कवि ने चींटी प्रतीक द्वारा जिस जंग के जीतने का संकेत दिया है, उसमें जीवंत और ज्वलंत भाषा का प्रयोग करके हिन्दी प्रगतिशील कविता को नए–नए मानक प्रदान किए हैं।

ब. जिसके बूढ़े हाथों ने हठ
माता की जंजीरें तोड़ी
जिसकी सीधी लकुटी ने
टेंढी भवों की गतिविधि मोड़ी

वह नग्न देह
जिसने महलो को छोड़
बनाया झोपड़ियों को स्वर्ग गेह
जिसने अगस्त्य बन शोषण के
सागर को सोखा रहित नेह।[52]

स. वह रहित धर्म
वह धर्म प्राण
वह हिन्दू, ईशा, मुसलमान
गीता, इंजिल, कुरान
किया जिसने सब का सम्मान
वह नया भागीरथ, नव युग का
जिसने तन तोड़ फोड़ पत्थर
स्वातंत्र जान्हवी अगम बहा दी
जग हित धरती पर हर हर
जिसका गॉधी शुभ नाम
उसे शत् शत् नवशीश प्रणाम।[53]

वस्तुतः वीरेश्वर सिंह ने जनवादी चेतना मानवता वादी मूल्यों एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता के अनुकूल भावों की व्यंजना के लिए, अपने चिंतन और दर्शन के अनुकूल भाषा की संरचना में कमाल हासिल किया है। जिनके भाषा बिम्बों पर प्रेमचन्द्र जैसे महान साहित्यकार मुग्ध हो उठते थे, ऐसे वीरेश्वर सिंह की भाषा का स्वतंत्र अध्ययन भी आवश्यक है। वीरेश्वर साहित्य के अध्येता डा. ललित दीक्षित का इस सम्बंध में अभिव्यक्ति दृष्टव्य है–

प्रगतिशील हिन्दी कविता में नए विम्बों , प्रतीकों, अभिव्यंजनों और भाषायिक संगठन के लिए वीरेश्वर को जितनी सफलता मिली है, वह हिन्दी के लिए गौरव की वस्तु है। भारतीय श्रमिकों, कृषकों की गाथा को वीरेश्वर की कविता ने उसी गाथा, में जैसे प्रेमचन्द्र ने उपन्यास्ों की भाषा के माध्यम से गॉवों की गाथा को गाने में सफलता प्राप्त की है।[54]

ध्वनियो, बिम्बो में जिस कवि का मूर्तमान अक्षर है, कविता को मूर्त न करने वाला कवि वीरेश्वर है।

नाट्य संकेत :

नाट्य संकेत रंग मंचीय व्यवस्था तथा पात्रों को अभिनव करने की दिशा प्रदान करते हैं। वीरेश्वर इनके द्वारा पात्र तथा वस्तु आदि की मनोभावनात्मक स्थितियों को व्यंजना देते हैं। वीरेश्वर की बिंजली नाटिका तथा एकता क्लब ने इस प्रकार के नाट्य संकेत मिलते हैं –

1. बिजली की सखी सुषमा मेंहदी पीस रही है।[56]
2. बिजली (उठ कर मॉ की ओर चलते हुए)।[57]
3. बिजली खरल उलटकर उसे बड़े जोर जोर से जमीन से ठोंक कर पिसा चूर्ण निकालती है और उसे पैर से रगड़ कर इधर उधर बिखरा देती है।[58]

बिजली में मॉ के अपमान का बदला लेने तथा शत्रु को नष्ट करने का संकल्प व्यक्त कराया गया है।

4. मॉ बैठी चरखा काट रही है। उसके हाथ तो काम कर रहे हैं, पर खुद कहीं दूर खोई सी मालूम पड़ती है। बिजली एक बड़ी सी कटार का जंग कपड़े के टुकड़े से छुड़ा रही है।[59]

बिजली की मॉ मदालसा की मनोस्थिति का चित्रण है।

5. बिजली मोटे कपड़े की एक अच्छी केसरिया रंग की धोती पहने है। उसका पति सुजान सिंह कलगीदार पगड़ी और अच्छे रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित है। एक बड़े शानदार दीवार पर पॉच बड़े–बड़े दीपक जल रहे हैं।[60]

6. नेपथ्य से – आयी बिजली रानी की आवाज आती है, उसके बाद ही कहानी का प्रवेश।[61]

7. वस्त्र पहना चुकती है और एक तलवार ला कर देती है।[62]

कराली द्वारा बिजली को वस्त्र पहनाने और तलवार देने का उल्लेख नाट्य संकेत में किया गया है।

8. सुजान आश्चर्य से भयभीत देखता है, बिजली एक कड़ी निगाह से सुजान सिंह को देखकर सैनिक गति से चली जाती है। कराली उसके पीछे–पीछे जाती है।[63]

9. मेवाड़ाधिपति सैया पर पड़े हैं। दो वैध 'महारानी राजकुमार तथा सामन्त और दासियाँ, यथायोग्य स्थित है।

10. कैदी घुटने टेककर गिड़ गिड़ाता है। माँ लकवे की मारी सी खड़ी रहती है।

तलवार छाती में घुसेड़ देती है। [64]

11. ओह– बेटी। बेटी सिर थामकर गिरकर बैठ जाती है। फिर कुछ देर बाद आंखे खोलकर डरी और चकित सी.........।। [65]

12. बिजली शैय्या पर बैठी है। उसके हाथों में सुषमा का हाथ है। रानी,

राजकुमार, कराली, सुषमा का पुत्र तथा सैनिक वेष में कई युवतियाँ यथा योग्य बिराजमान है। [66]

नाट्य साहित्य में प्रयुक्त भाषा :

1. 'खून के फव्वारे में इस ध्रुव से उस ध्रुव तक लिख दे अपनी माँ का प्रतिकार।'[67]

2. "मैं दुनिया में आई हूँ, तो दुनिया के ऊपर होकर रहूँगी। एक क्षण जीउंगी; पर जीऊँगी बिजली की तरह। चमकूँगी, तडपूंगी और प्रहार करते हुए निकल जाउँगी।[68]

3. 'सूर्य के घोड़ो की पीठों पर कोड़ो से पड़े हुए निशान मेरे अग्नियान की गति का आभाष देंगी। बुलबुल की बोली और कोयल की कूक नहीं, बज्रपात का वज्र वक्ष–विदारक नाद मेंरा संगीत होगा। भूकम्प मेरे हृदय की धड़कन होगा और आसमान फटे तो समझना मेरे दोना होठ मुस्कराने को अलग हुए हैं। तूफान और अंधड़ मेरे श्वाँस .... ।[69]

4. बिजली मोटे कपड़े की एक अच्छी केसरिया रंग की धोती पहने है, उसका पति सुजान सिंह कलगी दार पगड़ी और अच्छे रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित है। एक बड़े शानदार दीवार पर पॉच बड़े–बड़े दीपक जल रहे हैं।[70]

5. नाथ, जीने वाले आग से भी जीते हैं, और मरने वाले इस चॉदनी रात में भी मरते हैं।[71]

6. स्वप्न में डूबे हुए कविता कामिनी के खोखले झाझों की झनकार सुनना, थिरकना, लुढ़कना, लिपटना, आहें भरना और अपने घर की आग को दर्शन शास्त्र के अनित्य सागर में डुबो देना यह कौन सा आनंद है नाथ।[72]

7. मैं तो त्रिपथगा के सामान हूँ। मेरा तो प्रवाह ही जीवन है। मैं पहाड़ की छाती फोड़कर निकली हूँ और फिर निकलूंगी और दुनिया को काटते हुए महासागर में जा मिलूंगी।[73]

नाट्य में मुहावरे-

बिजली की मार से शत्रुओं के दिल दहल गये है।[74]

खून में डूबी, मौत की मूर्ति, उसकी तलवार किसके सिर पर टूट पड़ेगी, कोई नहीं कह सकता।[75]

आज तेरी प्यास मैं मिटा सकी हूँ।[76]

पैरों के नीचे इसकी छाती बताशे की तरह चूर–चूर हो जावेगी।[77]

कथा साहित्य की भाषा

वीरेश्वर के कथा साहित्य की भाषा अत्यन्त मार्मिक सांकेतिक, यथार्थपरक अभिव्यंजनाओं से युक्त है। वीरेश्वर प्रगतिशील चेतना के कथाकार है। एक विशिष्ट अर्थ में वे प्रगतिशील कथाकारों से इस अर्थ में भिन्न भी है कि उनमें किसी वाद की गंध नहीं है। और न ही कोई ऐसी सीमा जो सैद्धान्तिक रूप में उन्हें किसी वर्ग में बांधा जा सके।

वीरेश्वर की कहानियों पर कथा सम्राट प्रेमचंद्र जी भी मुग्ध थे।

वीरेश्वर का कथा संकलन 'उंगली का घाव', 'अपराध ' प्रकाशित है शेष कहानियां अप्रकाशित है उंगली के घाव की कहानियों ने अपने प्रकाशन के साथ हिन्दी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया इस संकलन की कहानियों में उंगली का घाव, वह बात, बांसुरी, माया, मोटर का मूल्य नीनी, दृष्टि, अंतराग्नि, परिवर्तन,

रेशमी रुमाल, कबूतर, राखी, बोध, काजल कहानियाँ संकलित है।

भूमिका में वीरेश्वर जी का कथन है– मैंने इतनी हिन्दी लिखी है– हाँ अमर भारत की अमर हिन्दी लिखी है।[55]

वस्तुतः वीरेश्वर का भाषा शब्दकोष मन को उद्घाटित करने में सफल सिद्ध होता है।

कहानियों की भाषा

भाषा मूलतः और अंततः एक संस्था है। वह अपनी चरम प्रयोजन की प्रासंगिता में सामाजिकता की प्रतीक और प्रमाण होती है। कोई भी रचनाकार जिस भाषा के द्वारा अपने को अभिव्यक्ति करता है, वह उसे उत्तराधिकार के रूप में समाज से मिलता है, साथ ही जिस विषयवस्तु या रचना के किसी पक्ष अथवा अंग के बारे में कोई कृति विद्यात्मक संरचना द्वारा भावों अथवा विचारों को व्यक्त करती है, उसमें भाषा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से विषय बनकर आती है।[78]

नाटकीयता

"मुकदमा है तो यहाँ घर पर क्यों आयी।"

'इंसाफ के लिए' चम्पा ने कहा।

' इंसाफ इजलास में मिलता है' –मजिस्ट्रेट बोले

'वहाँ भी मिलता है और यहाँ भी मिलता है' चम्पा ने कहा।

क्या नाम है तेरे आदमी का?

'हीरा', चम्पा ने कहा

'दरोगा ने उसे झूठा क्यों पकड़ा, क्या दुश्मनी है?'

"हुजूर, इस दबाव से दरोगा मुझे अपने पास बुलाना चाहता है, मैं नहीं गयी, न जाऊंगी

हुजूर की ड्योढ़ी पर जान दे दूंगी, मुकदमा झूठा है।" [79]

भाषा शैली का सम्बन्ध विचारों या अनुभूतियों की मात्र अभिव्यक्ति से नहीं है, बल्कि विषय वस्तु की पूर्ण प्रभाव पूर्ण तथा औचित्यपूर्ण अभिव्यक्ति विषय एवं व्यक्तित्व प्रेरित वैशिष्टयों से य्रुक्त अभिव्यक्ति से है। अभिव्यक्ति का माध्यम है भाषा और मुहावरों, लोकोक्तियों, बिंब, प्रतीक, संकेत तथा रंग आदि के प्रयोग द्वारा उसमें वैशिष्टय उत्पन्न होता है। [80]

वीरेश्वर की कहानियों की भाषिक संरचना की आधार शिला है हिन्दुस्तानी भाषा यानी हिन्दी में अरबी फारसी, अंग्रेजी और आंचलिक बोलियों में शब्दों से मिलाकर एक ऐसी भाषा जिसे ग्रामीण नगरीय सभी समझ सके। वीरेश्वर की कहानियों की भाषा की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार है।

अ. "विचार दरिया की मौजों की तरह उठ–उठकर लोट लोट जाते थे।" [81]

ब. "बाह में बांधेगें तो गुदगुदा कर खुल जांऊगी, आंखों में बंद करोगे तो निश्वास में निकल जांऊगी।" [82]

स. "देख बाप पैदा तूने जरुर किया है पर ब्याह मेरा भगवान करेगा।" [83]

द. "हुजूर मुझे जबर्दस्ती मेरे घर से पकड़ लाए, दीवान जी मेरी औरत से कहते थे जाकर दरोगा जी से मिलो।" [84]

ध. तीन सौ माहवारी तनख्वाह हुयी थी, आखिर लड़कियों की पढ़ाई–लिखाई, शादी ब्याह का खर्च कैसे पूरा होगा। चुनाचे अपनी धर्मपत्नी मालती से उन्होंने प्रस्ताव किया। [85]

शब्दावली

अर्थ–संकेतिक शब्दों या पदों का समूह भाषा है और भाषा के अंग प्रत्यंग का विवेचन विश्लेषण व्याकरण या शब्दानुशासन कहलाता है। व्याकरण में सार्थक शब्दों पर विचार होता है, प्रस्तुध्यान अर्थ पर रहता है। शब्द कहलाता है 'वयस्क' और अर्थ वाच्य। [86]

शब्दों को व्याकरणिक कार्यकारिता की दृष्टि से आठ वर्गों में रखा जाता है किन्तु यह वर्गीकरण बड़ा उथला और मात्र व्यावहारिक है जैसा कि ये स्पर्सन आदि ने दिखाया है। अपने यहां नाम, आख्यस, उपसर्ग निपात रूप में जो चार या सुबंत, तिड़त और अग्ययरूप में तीन वर्ग बताये गए है, वे ही अपेक्षाकृत ठोस है। कार्यकारिता को छोड़ दिया जाए वो वर्गीकरण को दो आधार बच रहते हैं। [87]

1 **रचना** रूढ़, यौगिक एवं योग रुढ़

2 **इतिहास** तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी

संस्कृत से निकले विकृत या विकसित शब्दों को तद्भव कहते है। तद्भव एवं देशज शब्द आंचलिक या ग्राम्य शब्दों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। वीरेश्वर सिंह की कहानियों में आंचलिक शब्दावली के कतिपय शब्द इस प्रकार है।

आंचलिक शब्दावली –

कंजरा पुरा [87]

पनकपड़ा [88]

डिबिया [89]

फ्राक [90]

औसारे [91]

डाइन [92]

अड्ड–खड्ड [93]

गोटेदार [94]

चिरैया [95]

गौना [96]

भूतिनी [97]

पनडब्बा [98]

भुइयां रानी [99]

कनपटा [100]

लाट [101]

सेंध [102]

पिंछवाडे [103]

अरबी-फारसी

गुस्लखाना [104]

तख्त–ताज [105]

गुलदस्ता, इनकार वद किस्मत [106]

गुनाह [107]

ख़याल [108]

महफिल [109]

ज़हीन [110]

नामुमकिन[111]

चुंनाचे [112]

भादाव [113]

सल्तनत [114]

तालिब इल्म [115]

कयामत [116]

बेफिक [117]

जवां मर्दी [118]

निहावत एखलाके [119]

तशरीफ [120]

वल्लाह [121]

कफन [122]

नगद पेसगी, जवा मर्द [123]

रोजनाम़चा [124]

दर्याफ्त [125]

अंग्रेजी

लेटर पेपर [126]

कैरम बोर्ड[127]

पैक [128]

टिंचर आयोडीन [129]

टेबिल गियर [130]

टाइफाइड [131]

रिटायर्ड [132]

रूल [133]

राइटिंग आर्डर [134]

सेक्टर [135]

प्रेसिडेंट [136]

हेडलाइट [137]

मड गार्ड [138]

टैक्सी [139]

बिल्डिंग फंड [140]

स्लिप [141]

क्वार्टर [142]

यौगिक शब्द : उगालदान [143]

तत्सम :

सौंदर्योपासक [144]

निस्तब्धता [145]

उत्सुकता [146]

स्मित मुख [147]

निर्जीविता [148]

उच्छृंखलता [149]

घृणोत्पादक [150]

अंतराग्नि [151]

कौमार्य [152]

अनुपयुक्त [153]

समाख्या[154]

भाव भंगिमा[155]

ध्वनिमूलक : छम छम करती, किलकती, उछलती [156]

गड़गड़ाहट [157]

बुलबुला, खिलखिला[158]

सन्न, हॉफ [159]

कुड़कुड़ाहट [160]

झलमलाहट [161]

गुटरगूँ–गुटरगूॅ [162]

धक–धक [163]

उपर्युक्त शब्दावली के अध्ययन ज्ञात होता है कि वीरेश्वर सिंह ने भाषा को जीवंतता प्रदान की है। साहत्यिक भाषा को बोल–चाल की भाषा के रूप में तथा व्यवहार के लिए हिन्दी में, उर्दु, अरबी, फारसी, अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।

मुहावरे :

भाषा को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए तथा भाषिक संरचना को बिम्बात्मकता

भाषा को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए तथा भाषिक संरचना को बिम्बात्मकता और लाक्षणिकता प्रदान करने के लिए वीरेश्वर सिंह ने कहानियों में मुहावरों का सटीक प्रयोग करके भाव भंगिमाओं को प्रभावी बनाया है। उनकी कहानियों में मुहावरों और लोकोक्तियो के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं।–

दिल थामना [164]

उसके पंख उग आते है, उस पर रंग चढ़ जाता है और मन के बाग में तितली सी उड़ी–उड़ी फिरती है। [165]

मैं हवा की तरह, मन ही मन चुपके से शरवती की देह के रोएं–रोएं को छू कर बलखा जाने वाला। [164]

मैं कहता हूँ यदि यही विकास है कि अन्दर की सारी महक ही उड़ जाय, सारी मस्ती, सारा रंग, हवा हो जाये तो हे ईश्वर मुझे तू फिर से वही कली बना दें। [167]

आग लगे जाने कैसी गाड़ी है। [168]

दाँतों तले किर किरा उठता है। [169]

धन्नो खुला खेल खेलने वाली निकली [170]

दबे पाँव बिल्ली की तरह निकलती है। [171]

एक जीवित प्राणी प्रणयी का गला घोंट रही है। [172]

सीधे मुंह बात न करना। [173]

मुंह ताकना। [174]

साँप भी मर जाय, लाठी भी न टूटे। [175]

"जितनी चादर उतना पैर फैलाना होता है। [176]

भविष्य उन्हें सामने एक बड़े ऊसर मैदान सा दिखायी पड़ रहा था। [177]

उस पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया। [178]

कालान्तर में एक रात सान्याल साहब के घर पर थाली बजी। [179]

बच्चों से कोई सीधे मुंह बात करने वाला नहीं है। [180]

चुनांचे बच्चे मारे–मारे फिरते हैं। [181]

जैसे बिना पतवार की अगनित नौकाओं किसी झील में इधर–उधर डोल रही हो। [182]

अध्यापक चुप बैठे हुए प्रिंसिपल का मुंह ताक रहे थे। [183]

योगेन्द्र बाबू पर जैसे गाज गिरी। [184]

उपयुर्क्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि वीरेश्वर सिंह के द्वारा प्रयुक्त मुहावरों में आंतरिक अभिव्यंजना प्रगतिशील जीवन को व्याख्यवित करने की शक्ति तथा आंचलिक रंगों की छटाएं भी सजीव हो उठती है। भाषा में काव्यात्मकता, प्रभावोत्पादकता एवं यथार्मोन्मुख स्वाभाविकता को अभिव्यक्ति देने की शक्ति मुहावरों के कारण ही संभव हुयी।

शैली

आधुनिक कहानी लेखन में विभिन्न साहित्यिक शैलियों को प्रयोग किया गया

है। कहानीकारों ने अपनी पूर्व पीढ़ी से भी ग्रहण किया है और शिल्प के नए—नए प्रयोग भी किये है।

वीरेश्वर की कहानियों में जिन प्रमुख शैलियों का प्रयोग मिलता है वह इस प्रकार है—

१. आत्मकथात्मक शैली

कहानी को यथार्थपूर्ण बनाने तथा उसमें संवेदना उत्पन्न करने के लिए कहानीकार प्रथम पुरुष अर्थात मैं के माध्यम से कहानी की कथावस्तु को आगे ले चलता है। उदाहरणार्थ—

"हाय, मैंने बड़ा अपराध किया, इसका प्रयश्चित कैसे हो? मुझसे बड़ा अपराध हुआ। मैं अपने प्यारे श्याम से जरुर मिलूँगी। क्या हुआ, लड़के ने इस शरीर को छू लिया तो उसी ने तो इसे साँप से बचाया था। यह कंचन काया नहीं मिट्टी है। इसके लिए मैंने एक भोले बालक को कलंकित किया। [185]

इसी आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग कहानीकार ने राखी कहानी में किया है। [186]

२. वर्णानात्मक शैली

इस शैली के अन्तर्गत कहानीकार एक तटस्थ व्यक्ति की भाँति घटनाओं, पात्रों एवं स्थितियों के सम्बन्ध में वर्णन करता चलता है। 'वह अपने माँ—बाप की इकलौती संतान, बी.ए. का विद्यार्थी था। सत्रह साल का, बड़ा जहीन, अभी पूरी रेखें भी न भीगीं थी।' [187]

डायरी शैली

इस शैली के अन्तर्गत कहानीकार पात्रों की मनोवैज्ञानिक दशाओं का

विश्लेषण करता है, कहानीकार स्वतंत्र होता है। उत्तरदायित्व पात्रों पर होता है उदाहरणार्थ–

तारों से जगमग आकाश, संसार का अमित विस्तार उन्मुक्त प्रेम का जीवन। सचमुच स्वर्ग ऐसा ही होगा। उसने एक सांस भर कर हस मादक अध रात्रि की मदिरा की एक घूंट पिया फिर मद मरे स्वर में पास खड़े हुए राकेश से बोली– प्यारे अब किधर ? [188]

चित्रात्मक शैली

इस शैली के अन्तर्गत कहानीकार ग्राम, अंचलों की रीति–रिवाजों, रुढ़ियों, अंधविश्वासों, परम्पराओं, संस्कृति प्रेम सम्बन्धों आदि के चित्र प्रस्तुत करता चलता है। आंचलिक कहानियों में इस शैली का प्रयोग प्रचुर रूप से होता है। वीरेश्वर की कहानियों में चित्रात्मक शैली के उदाहरण भी मिलते हैं।–

चम्पा कंजाडिन को लोग नागिन भी कहते थे किसी जलन के कारण नहीं, बल्कि उसकी असाधारण छवि के कारण। वैसी औरत सारे कंजरपुर की तीन हजार की आबादी में दूसरी न थी। सोलह साल की थी तो बाप ने उसका दाम तय कर लिया। चम्पा ने सुना तो सामने जाकर बाप से बोली– देख बाप पैदा तूने जरुर किया है, पर ब्याह मेरा भगवान करेगा। मैं उस बूढ़े के घर नहीं जा सकती। [189]

नाटकीय शैली

नाटकों के कथोपकथनों के माध्यम से कथावस्तु को आगे बढ़ाया जाता है। पात्रों की मनः स्थिति को कथोपकथनों के संगठन द्वारा व्यक्त किया जाता है।– उदाहरणर्था–

राकेश– तो चलो, आज ही रात को चले, टैक्सी का प्रबंध मैंने कर लिया है।

रम्मा– चलो

राकेश–कहाँ मिलोगी

रम्मा– अपने आंगन में, पिछवाड़े का दरवाजा धीरे से खोल लेना, मैं सांकल न लगाँऊगी।

राकेश– कहीं सांकल लगा के सो न जाना। [190]

हास्य व्यंग्य शैली

कहानी में हास्य और व्यंग्य का प्रयोग किया जाता है। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, श्रीकांत शुक्ल, रवीन्द्र त्यागी ने हास्य–व्यंग्य शैली का प्रयोग अधिकांश रूप में किया है। वीरेश्वर सिंह ने अपनी कहानियों में इस शैली को चुना है।–

अ. उफ! इंडिया की सत्लनत का बोझ उतना नहीं जितना जुलाई के महीने में एक हाईस्कूल का होता है। [191]

ब. ड्राइवर नूर खाँ उर्फ जाँबाज़ और उनकी मशहूर टैक्सी खड़ी थी छत नदारद, मडगार्ड नदारद, हार्न नदारद, हेडश्रलाइट सिर्फ एक। वह टैक्सी अपने कल पुरजों से नहीं नूर खाँ के दम से चलती थी। लाइसेंस नूर खाँ ने लिया नहीं था, क्योंकि कबाड़ खाने की भरी मोटरों के पंजरों से उन्होंने अपने हाथों टैक्सी का यह करिश्मा बनाया था। जो जवाँ मर्दी के कामों में ही इस्तेमाल व एवज इनामी किराया होता है। [192]

पत्रात्मक शैली

इस शैली के अन्तर्गत कहानीकार नायक–नायिका के बीच पत्राचार का प्रयोग कराता है। कभी–कभी पत्र लिखकर ही पूरी कहानी की समाप्त किया जाता है और कहीं–कहीं कहानी के बीच में पत्र शैली का प्रयोग किया जाता है वीरेश्वर सिंह ने कहानियों में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ–

अ. मेरे प्राणों के नाथ,

भला मेरा जीवन इस तरह क्यों नष्ट किया जा रहा है। पतजड़ की पीली पत्तियों से ये नीरस दिल एक–एक कर जड़ होते जा रहे हैं और मैं आपकी सेवा से वंचित रखी जा रही हूं। नाथ क्या मोटर आपकी दासी के प्रेम से भी बढ़कर है? [193]

आपकी प्रेम पुजारिन

श्यामा

ब. प्यारे सरोज,

मैं जा रही हूँ मुझे जाना ही पड़ रहा है। मैं जैसा जीवन व्यतीत कर रही हूँ, उसमें एक जगह रहना ठीक नहीं होता–

आशा है, तुम मेरी तरह से गलत धारणा न बनाओंगें। मेरी जिन्दगी का क्या ठिकाना। शायद किसने दिन गोली ही खाकर मरना पड़े। [194]

तुम्हारी फिर न मिल सकने वाली रहस्मयी

वीरेश्वर सिंह की कहानियों में प्रायः सभी शैलियों का प्रयोग देखने को मिलता है और कहीं–कहीं एक से अधिक शैलियों का मिश्रित रूप भी प्रयुक्त हुयी

है।

बाल गीतों की भाषा

वीरेश्वर के बालगीतों में खड़ी बोली का सरल रूप देखा जा सकता है। उनके बाल गीतों की कतिपय विशेषताएं इस प्रकार है।

ध्वनि मूलक

काला झब्बर, झब्बर यह

कम्मल भालू सा लगता

अम्मा, इसे ओढ़ने में

मन मेरा बेहद डरता। [195]

पानी बरसा झम्मा झम फिसला पैर गिर गए हम। [196]

उर्दू मिश्रित खड़ी बोली

राजाओं की पुश्तैनी है आप सवारी

बड़े मोल के है गजराज सिद्व संसारी। [197]

अंग्रेजी मिश्रित खड़ी बोली

हुई शाम अब देखों तो यह लाली कैसी छाई

जैसे टेविल पर मैंने थी लाल इंक ढरकाई। [198]

ग्रेन प्रोक्योरमेंट टर्राव फूड राशनिंग काटे खाये।

ग्रेन प्रोक्योरमेंट टर्राव फूड राशनिंग काटे खाये।

निशिचर आर्डिनेन्स कन्ट्रोल फिरैं ओढ़ खद्दर का खोल।

हिन्दुस्तानी (मिश्रित)

दमदार तो सरदार है, सरदार रहेंगे।

दमतोड़ दुम सिकोड़ फकत सवार रहेंगें। [199]

गोरी हो, पर हो जल्लाद

सुनती नहीं दाद—फरियाद। [200]

वीरेश्वर की कहानियों की शब्दावली का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनकी भाषा यौगिक और योगरुढ़ है—

इतिहास की दृष्टि से भी शब्दावली पर विचार करना वांछनीय है। वीरेश्वर सिंह ने तत्सम शब्दों का जो काव्यात्मक गद्य का उदाहरण बन सकते हैं उनका अधिकांश प्रयोग किया है। कहानीकार ने कविकल्पनाओं के द्वारा रंग भर कर जो चित्र बनाये हैं वे काव्यात्मक शब्दावली एवं तत्सम प्रधान ही है। प्रेम, सौन्दर्य प्रकृति चित्रण एवं राष्ट्रीय भावों की अभिव्यक्ति में कहानीकार ने ऐसी ही शब्दावली को चुना है—

"दिन बीतते गये। मैं प्रकृति से ही भावुक था, सौन्दर्यो पासक था, पर एक भारतीय घर के प्यार, विश्वास और मर्यादा के वातावरण में पले रहने के कारण मुझसे भय, आदर और संकोच की मात्रा भी थोड़ी न थी।" [201]

वीरेश्वर सिंह ने अपने साहित्य में जिस खड़ी बोली का प्रयोग किया हे,

उसमें हिन्दी–उर्दू के शब्दों के साथ–साथ अरबी–फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। इस प्रकार लेखक ने हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग किया हे।

कविताओं में कवि वीरेश्वर सिंह ने जहाँ ग्राम्य जीवन, कृषकों के जीवन की अभिव्यक्ति दी है, वहाँ आंचलिक शब्दावली का प्रयोग किया है।

आधुनिक खड़ी बोली के शब्दों में तत्सम शब्दों की प्रधानता होती हे, किन्तु वीरेश्वर जी ने जिस भाषा को चुना है उसमें संस्कृतनिष्ठता के स्थान पर जनता में प्रयुक्त होने वाली भाषा को स्थान दिया है। सरल जनता की भाषा, हिन्दू उर्दू मिली जुली भाषा। हिन्दी में उर्दू की ध्वन्चयात्मक रूपों का प्रयोग पाया जाता है। उर्दू की क़, ख़, ग़, ज़, फ़, ध्वनियाँ प्रयुक्त की गयी है।

वीरेश्वर के साहित्य में प्रयुक्त शब्दावलियों से भी स्पष्ट होता है कि वे प्रेमचंद्र की भांति हिन्दुस्तानी के पक्षधर है। प्रेमचंद्र और वीरेश्वर की भाषा में यह अंतर अवश्य है कि वीरेश्वर में ग्राम्य जीवन के पात्रों और संवादों में आंचलिकता, बुन्देली आदि के क्षेत्रीय प्रयोग अधिक है।

.वीरेश्वर सिंह अंग्रेजी भाषा के विद्वान होकर भी हिन्दी के पक्षधर है। वे भाषाओं को तकरार का विषय नहीं बनाते; बल्कि भूखे, नंगे भारत के किसान, मजदूर और आम आदमीं की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं और उसे हिन्दी मानते हैं।

हिन्दी की रचनात्मक शक्ति बढ़ाने के लिए वीरेश्वर सिंह ने अरबी–फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी सभी के शब्दों को ग्रहण करने में कोई कोताही नहीं की।

" वीरेश्वर सिंह ने हिन्दी को पहचान दिया हिन्दी जो लोगों के हृदय को बहला सके ऐसी हिन्दी जो आगे बढ़ सके, उस हिन्दी को रचनाकार ने अपने साहित्य में स्थान दिया है।" [202]

हिन्दी में भण्डार भरने का दावा तो वीरेश्वर सिंह ने नहीं किया किन्तु उन्होंने हिन्दी में लिखकर संतोष और तृप्ति अनुभव किया है। जीने योग्य हिन्दी लिखी है। कम लिखकर भी बहुत दिनों तक जीवित रहने वाली हिन्दी के रचनाकार के रूप में वीरेश्वर जी याद किये जाएंगें।
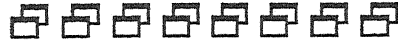
संदर्भ

1. दि आर्ट आफॅ पोयट्री (अनु. डेनस फोलियर) पाल बैलेरी, पृ. 63
2. शिव सारंगाध्यावली, (अप्रकाशित, हस्तलिखित प्रति चंददास शोध संस्थान, बाँदा) चंददास, पृ. 5
3. संसद से सड़क तक, धूमिल, पृ. 9
4. तार सप्तक (द्वितीय संस्करण में कवि का वक्तव्य पुनश्चय में)
5. भीखू की कुंडलिया, भाषा विषयक, पृ. 3
6. तदुपखित, पृ. 3
7. तदुपखित, ग्रीष्माविषयक, पृ. 1
8. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 25
9. भीखू कुंडलिया, ग्रीष्म शीर्षक
10. भीखू कुंडलिया, संगम स्नान विषयक
11. गोरा बादल की कहनी, वीरेश्वर सिंह पृ. 3
12. तैराक, वीरेश्वर सिंह पृ. 1
13. पानी बरसा झम्माझम, वीरेश्वर सिंह पृ.
14. पानी बरसा, वीरेश्वर सिंह पृ. 2
15. भीखू की कुंडलिया, ग्री म वि ायक, पृ. 3
16. तदुपरिवत, वर्षा पृ. 3
17. तदुपरिवत, वर्षा पृ. 3
18. तदुपरिवत, ऋतुराज, पृ. 3

19. तदुपरिवत, संगम स्नान पृ. 1

20. तदुपरिवत, पृ. 2

21. तदुपरिवत रुपदर्शन पृ. 1

22. तदुपरिवत, पृ. 2

23. बहता है पसीना, वीरेश्वर सिंह पृ. 1

24. भीखू की कुंडलिया, शिशिर विषयक पृ. 1

25. सूर्योदय, वीरेश्वर सिंह

26. सवेरा, वीरेश्वर सिंह

27. गदहा वीरेश्वर सिंह

28. गांधी जयंती, वीरेश्वर सिंह पृ.

29. पानी बरसा, वीरेश्वर सिंह पृ.

30. सवेरा, वीरेश्वर सिंह पृ.

31 बरसा पानी झमामझ, वीरेश्वर सिंह पृ.

32 बरसा पानी झमामझ, वीरेश्वर सिंह पृ.

33. भीखू की कुंडलिया

34. तदुपरिवत, पृ.

35. तदुपरिवत, पृ.

36. तदुपरिवत, पृ.

37. तदुपरिवत, पृ.

38. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ.

39. तदुपरिवत, पृ.

40. तदुपरिवत, पृ.

41. तदुपरिवत, पृ.

42. तदुपरिवत, पृ.

43. तदुपरिवत, पृ.

44. तदुपरिवत, पृ.

45. तदुपरिवत, पृ.

46. तदुपरिवत, पृ.

47. तदुपरिवत, पृ.

48. पानी बरसा वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

49. चींटी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

50. तदुपरिवत, पृ. 3

51 तदुपरिवत, पृ. 2–3

52 गांधी, वीरेश्वर सिंह पृ.

53. तदुपरिवत, पृ. 3

54. वीरेश्वर सिंह का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित, पृ. 48

55. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, भूमिका, पृ. 1

56. बिजली, वीरेश्वर सिंह, पृ.

57. तदुपरिवत, पृ.

58. तदुपरिवत, पृ.

59. तदुपरिवत, पृ.

60. तदुपरिवत, पृ.

61. तदुपरिवत, पृ. 27
62. तदुपरिवत, पृ.
63. तदुपरिवत, पृ.
64. तदुपरिवत, पृ. 45
65. तदुपरिवत, पृ.
66. तदुपरिवत, पृ. 50
67. तदुपरिवत, पृ. 18
68. तदुपरिवत, पृ. 18
69. तदुपरिवत, पृ. 19
70. तदुपरिवत, पृ.
71. तदुपरिवत, पृ. 20
72. तदुपरिवत, पृ.
73. तदुपरिवत पृ. 26
74. तदुपरिवत, पृ. 37
75. तदुपरिवत, पृ. 37
76. तदुपरिवत, पृ. 39
77. तदुपरिवत, पृ. 40
78. हिन्दी के ऑचलिक उपन्यास, डा. मृत्युंजय उपाध्याय पृ. 151
79. पतिव्रता, वीरेश्वर सिंह, पृ. 2
80. हिन्दी के ऑचलिक उपन्यास, डा. मृत्युंजय उपाध्याय पृ. 176
81. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ. 4

82. वह बात, वीरेश्वर सिंह, पृ. 14

83. पतिव्रता, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

84. तदुपरिवत, पृ. 6

85. मातृत्व की टेक, पृ.1

86. शब्दानुशासन, किशोरीदास बाजपेयी पृ. 121–122

87. भाषा विज्ञान, डॉ, भोलानाथ तिवारी, पृ. 404

88. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ.3

89. तदुपरिवत, पृ. 7

90. वह बात, वीरेश्वर सिंह, पृ. 15

91. माया, वीरेश्वर सिंह, पृ. 39

92. मोटर का मूल्य, वीरेश्वर सिंह, पृ. 48

93. नीनी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 57

94. दृष्टि, वीरेश्वर सिंह, पृ. 64

95. परिवर्तन, वीरेश्वर सिंह, पृ. 75

96. काजल, वीरेश्वर सिंह पृ.75

97. प्रेम का अंत, पृ. 15

98. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह, पृ. 5

99. पतिव्रता पृ. 3

100. तदुपरिवत, पृ. 5

101. तदुपरिवत, पृ. 5

102. तदुपरिवत, पृ. 6

103. अपराध, पृ. 12

104. दृष्टि, वीरेश्वर सिंह पृ. 66

105. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ. 4

106. तदुपरिवत, पृ. 7

107. तदुपरिवत, पृ. 8

108. बांसुरी, वीरेश्वर सिंह पृ. 24

109. मोटर का मूल्य, वीरेश्वर सिंह पृ. 24

110. नीनी, वीरेश्वर सिंह पृ. 56

111. तदुपरिवत, पृ.56

112. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह पृ. 3

113. तदुपरिवत पृ. 3

114. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह पृ. 3

115. तदुपरिवत पृ. 3

116. तदुपरिवत पृ. 3

117. शिक्षा मंदिर,. पृ. 6

118. प्रेम का अंत, पृ. 5

119. शिक्षा मंदिर पृ. 9

120. तदुपरिवत, पृ. 10

121. तदुपरिवत, पृ. 10

122. तदुपरिवत, पृ. 10

123. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह, पृ. 5

124. तदुपरिवत, पृ. 8

125. तदुपरिवत, पृ. 8

126. वह बात, वीरेश्वर सिंह, पृ. 15

127. बांसुरी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 26

128. माया, वीरेश्वर सिंह, पृ. 35

129. तदुपरिवत, पृ. 35

130. अन्तराग्नि, वीरेश्वर सिंह, पृ. 65

131. कबूतर, वीरेश्वर सिंह पृ. 99

132. काजल, वीरेश्वर सिंह, पृ. 129

133. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह, पृ. 3

134. तदुपरिवत, पृ. 3

135. तदुपरिवत, पृ. 1

136. तदुपरिवत, पृ. 1

137. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह पृ. 5

138. तदुपरिवत, पृ. 5

139. तदुपरिवत, पृ. 3

140. शिक्षा मंदिर, वीरेश्वर सिंह पृ. 3

141. तदुपरिवत, पृ. 3

142. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह, पृ. 2

143. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह, पृ. 2

144. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह पृ. 6

145. बांसुरी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 27

146. मोटर का मूल्य, वीरेश्वर सिंह, पृ. 43

147. नीनी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 54

148. तदुपरिवत, पृ. 69

149. दृष्टि, वीरेश्वर सिंह, पृ. 66

150. तदुपरिवत, पृ. 66

151. अंतराग्नि, पृ. 69

152. तदुपरिवत, पृ. 74

153. परिवर्तन, पृ. 75

154. रेशमी रुमाल, पृ. 90

155. अपराध, वीरेश्वर सिंह, पृ. 4

156. नीनी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 53

157. प्रेम का अंत, पृ. 51

158. तदुपरिवत, पृ. 54

159. दृष्टि, वीरेश्वर सिंह, पृ. 66

160. रेशमी रूमाल, पृ. 84

161. तदुपरिवत, पृ. 85

162. काजल, वीरेश्वर सिंह, पृ. 102

163. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह, पृ. 57

164. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ. 8

165. वह बात, वीरेश्वर सिंह, पृ. 10

166. तदुपरिवत, पृ. 12

167. तदुपरिवत, पृ. 17

168. माया, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

169. दृष्टि, वीरेश्वर सिह,ह पृ. 76

170. तदुपरिवत पृ. 65

171. कबूतर, पृ. 100

172. राखी, पृ. 104

173. शिक्षा मंदिर, पृ. 3

174. तदुपखित, पृ. 3

175. प्रेम का अंत, पृ. 7

176. मातृत्व की टेक, पृ. 4

177. तदुपरिवत, पृ. 10

178. तदुपरिवत, पृ. 11

179. तदुपरिवत, पृ. 15

180. शिक्षा मंदिर, पृ. 72

181. तदुपरिवत, पृ. 2

182. तदुपरिवत, पृ. 3

183. तदुपरिवत, पृ. 3

184. तदुपरिवत, पृ. 9

185. अपराध, वीरेश्वर सिंह, पृ. 4

186. राखी, वीरेश्वर सिंह पृ. 1

187. अपराध, वीरेश्वर सिंह, पृ.

188. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिह, पृ.

189. पतिव्रता, वीरेश्वर सिह, पृ.

190. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह, पृ.

191. शिखा मंदिर, वीरेश्वर सिंह, पृ.

192. प्रेम का अंत, वीरेश्वर सिंह, पृ.

193. मोटर का मूल्य, वीरेश्वर सिंह, पृ. 43

194. काजल, वीरेश्वर सिंह, पृ. 151

195. कम्बल, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

196. पानी बरसा झम्मा झम, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

197. गजराज, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

198. खाट पर लेटे लेट, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

199. बच्चों से, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

200. धूप, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

201. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, पृ. 6

202. वीरेश्वर का रचना संसार, डॉ. ललित दीक्षित, पृ. 45

अध्याय ७

वीरेश्वर का समग्र मूल्यांकन

कवि के रूप मे मूल्यांकन

कथाकार के रूप में मूल्यांकन

नाटककार के रूप में मूल्यांकन

अध्याय – ७

वीरेश्वर का समग्र मूल्यांकन

वीरेश्वर सिंह का काव्य बाल साहित्य और युवा साहित्य दोनो रूपों में लिखा गया है। उन्होंने युवकों के लिए क्रांतिकारी, प्रगतिशील यथार्थवादी महान कविताएं लिखी हैं, वहीं उन्होने बाल गीतो की रचना करके बाल्य साहित्य को भी अपनी अमूल्य भेंट दी है।

पाश्चात्य समीक्षक ब्रैसी रोड्रास का कथन है –

"कोई काम इतना कठिन नहीं है, जितना बच्चों के लिए लिखना।" [1]

" वस्तुतः बाल साहित्य उपेक्षा के योग्य नहीं है। महेश्वरी जी का स्पष्ट कथन है, बच्चे परिवार का अंग हैं, समाज के अंग हैं। दुनिया के अंग हैं अतः जरूरी तौर पर उनमें रचना प्रक्रिया के जरिये ऐसे मूल्यों की चेतना प्राथमिक स्तर पर ही जागृत की जानी चाहिए जो उन्हें आगे चल कर नागरिकता समाजिकता से कहीं अधिक जिम्मेदारी से जोड़ सके।" [2]

साहित्य मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को संप्रेषित करने का सशक्त माध्यम है। बाल साहित्य ने बालमनों की मानसिक चेतना को मूल्यों और संवेदनाओं से रचानात्मक बनाया है। 'वीरेश्वर सिंह' ने बाल साहित्य के क्षेत्र में जिन बालगीतों की रचना की, उनके द्वारा राष्ट्रीय चेतना (देश प्रेम) राष्ट्रीय एकता का संचरण कराया है।

मनोवैज्ञानिकों ने बालकों की आयु के आधार पर शिशु वर्ग (3 से 6 वर्ष), बाल वर्ग (7 से 10 वर्ष) किशोर वर्ग (11 से 14 वर्ष) तीन श्रेणियों में विभक्त किया है। इस प्रकार बाल साहित्य भी तीन प्रकार का हो जाता है। शिशु साहित्य, बाल साहित्य, किशोर साहित्य।

'वीरेश्वर सिंह ने शिशु, बालक और किशोर तीनो आयु वर्गों को ध्यान में रखकर बाल साहित्य की रचना की है। कवि ने बाल साहित्य की रचना करते समय बच्चों के मनोविज्ञान को दृष्टि में रखा है, किन्तु वह उन्हें अक्कड़ बक्कड़ बॅबे बोल, अस्सी नब्बे पूरे सौ, तक ही नहीं सीमित करता और न ही कथा सरिता सागर, पंचतंत्र और हितोपदेश की शैली में बालकों को उपदेश देता है। कवि ने मध्यकाल की भक्ति और रीति साहित्य की कथा परम्परा से हटकर उन्हें नए राष्ट्रीय संस्कार देने के लिए प्रयत्नशील है।''[3]

वह श्रीधर पाठक, हरिऔंध, प्रेमचंद्र, सोहनलाल द्विवेदी, की परम्परा का मिलाजुला रूप प्रस्तुत करते हुए बालकों को बौद्धिक और भावात्मक दोनो स्तरों पर विकसित करता है। वीरेश्वर के बाल साहित्य की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वह बालको को कहानी सुनाकर उनका मनोरंजन नहीं करना चाहता। अधिकांश बाल साहित्यकारों ने बाल साहित्य के अन्तर्गत कहानी विधा को ही अंगीकार किया है। वीरेश्वर सिंह ने बालकों के लिए काव्य और नाटक (एकांकी) को चुना है। शिशुगीत, सहगान, क्रियागीत तथा एकांकी आदि शैलियों से बाल साहित्य सर्जक रूप में आते हैं।

'एकता क्लब' बाल एकांकी के द्वारा वीरेश्वर सिंह ने यह प्रयत्न किया है, बालक भाषा की विभिन्नता तथा उसके तकरार को समझ सके, और भूखे मजदूर के लिए एकजुट हो सकें। इस प्रकार का संवेदन संस्कार उत्पन्न करना किसी सच्चे साहित्यकार का ही काम है।

बालकों की पीढ़ी का निर्माण राष्ट्र के भावी निर्माण की उत्तरदायी भूमिका है। बाल साहित्य में जो रचनात्मक आभाव दिखाई पड़ता है, उसे वीरेश्वर सिंह न बखूबी पूरा किया है। उनका बाल साहित्य उद्देश्यपूर्ण है और एक विकसित

प्रगतिशील राष्ट्र के अनुकूल है।

अंग्रेजी के बाल साहित्यकार एडवर्ड लीवर, लुई कैरोन, रूसी बाल साहित्यकार निकोलाई नोसोव तथा बंगला के बाल साहित्यकार सुकुमार राय के बाल साहित्य में वैचित्रय को हास्य उत्पन्न करता है। बच्चे के स्वस्थ मानसिक विकास ने हास्य की भूमिका महत्वपूर्ण है।

वीरेश्वर सिंह ने हास्य उत्पन्न करने में अर्ध विसंगति या नोनसेंस को बढ़ावा नहीं दिया। वे जहॉ कहीं हास्य उत्पन्न करते हैं वहीं कोई मूल्य स्थापित करते चलते हैं। उदाहरणार्थ –

'गदहा' शीर्षक कविता में हास्य व्यंग से सार्थक मूल्यों की स्थापना का एक चित्र देखें –

'देख लीजै प्रकट खड़े हैं आज

विश्व चीपो, श्री गधे महराज

लाद ढ़ोते हैं, घास खाते हैं

करके श्रमदान यश कमाते हैं

घाट से घर व घर से घाट गए

शुद्ध जीवन महान काट गए

दॉत हैं काटते पर आप नहीं

करते हिंसा का कोई पाप नहीं

एक धोबी के पालतू ये हैं

शेष दुनिया के फालतू ये हैं

बॅधके खूॅटे से है नही रहता

विश्व स्वाधीन रेंक कर चरते।"[5]

उपर्युक्त कविता में विश्व चीपों श्री गधे महाराज का वर्णन कवि ने किया है। लाद ढ़ोने तथा घास खाने के प्रयोग में श्रमदान करके यश अर्जित करने का मूल्य है। घाट से घर व घर से घाट जाने के मुहावरे में कवि ने शुद्ध सात्विक जीवन बिताने तथा आजन्म अपने लक्ष्य में लगे रहने, इधर उधर व्यर्थ समय न खोने का मूल्य है। दाँत होकर भी दाँत न काटने में अहिंसा का मूल्य स्थापित करते हैं। खूँटे में नहीं बंधते ये किसी एक राजनीतिक दायरे या गुट में नहीं रहते। खूँटा यहाँ गुट के अर्थ में है तथा निर्गुट लेकर ये विश्व साधीनता की रेंक लगाते हैं। राष्ट्रीय एवं विश्व मैत्री का संदेश देने वाली यह कविता 'गधा' के माध्यम से जितनी सहज बन पड़ी है, कवि की दृष्टि और उसके कलात्मक संयोजन को देखते ही बनता है।

वीरेश्वर सिंह बालकों को चिंतन की दिशा देते हैं। उनमें कल्पना का विस्तार करते हैं और उनकी कल्पनाओं को उड़ने के लिए दिशा देते हैं।

प्रभात का वर्णन काव्य कवियों ने विशेष रुचि से किया। किसी ने सूरज में आग का गोला, किसी ने रश्मियों में किरणों की परियों का उतरना और किसी से नींद तोड़ने का वर्णन करके काव्य धर्म की इतिश्री कर दी। पं. सोहनलाल द्विवेदी की कविता

"''उठो लाल अब आँखे खोलो
पानी लाई हूँ, मुँह धो लो।''

के माध्यम से बालाकों की नींद से जगाने का करती है। वीरेश्वर सिंह की सबेरे को और अधिक मुखर होकर अभिव्यक्ति देते हैं –

''सबेरा हुआ है, सबेरा हुआ है
अहा, फिर से सूरज का फेरा हुआ है

गया देश को छोड़कर अंधेरा
नया छा गया सब तरह है उँजेरा।''[7]

कवि उगते हुए सूर्य का दर्शन करने तथा सूर्य अभिवादन करने के लिए बालकों को प्रेरित करता है। सूर्य की वंदना सृष्टि के आदि काल से प्राचीन ऋषिगण करते आये हैं, उसी परम्परा मं नया तेज मढ़ने का काम वीरेश्वर जी की कविता करती है –

''उठो, उठ रहा सूर्य, दर्शन करो तुम।
गया तेज तन और मन में भरो तुम।।''[8]

'सबेरा सृष्टि कर्ता की एक नयी सृष्टि है, जिसमें नयी प्राणदायिनी हवा चलने लगती है। प्राणवायु के मूल्य से कवि बालकों का परिचय कराता है –

''उठो छोड़ आलस, जगत उठ पड़ा है,
विधाता नया एक दिन गढ़ रहा है।
नयी प्राणदायक हवा चल रही है,
नयी लालिमा पूर्व में ढ़ल रही है।''[9]

''वीरेश्वर सिंह ने जिस कोटि का बाल साहित्य रचा है, वह हिन्दी के भंडार को समृद्ध करने वाला है। इतने सुंदर शिशुगीत और बाल साहित्य अन्यत्र मिलना कठिन है। वीरेश्वर सिंह की एक विशेषता यह है कि वे कल्पना से अधिक यथार्थ पर बल देते हैं। बालकों को देश काल से परिचित कराते हैं। उनमें सच्चे अर्थों में राष्ट्रीयता का भाव भरते हैं और उन्हें आगामी मनुष्य बनने की भूमिका प्रदान करते हैं।''[10]

'पुत्र के प्रश्न' नामक कविता में कवि ने माँ से कुछ प्रश्न पूछे, माँ ने उसका

उत्तर दिया। जो उत्तर है, वह बालक के मन को झकझोरता है, उसे देश, काल, स्थान से परिचित कराता है। उदाहरणार्थ –

"माँ क्या है स्वराज्य जब अपने पर
अपने ही राज करें?
न बेटा स्वराज है,जब जन की
सेवा सिरताज करें
माँ क्या है श्रमदान कि जिसमें
सूट पहन अफसर जावे
मजदूरों का मन बेटा मालिक
हैं योही बहलावे।
माँ, क्यों घासलेट खाने में भी
तू करती कृपनाई,
बेटा, आग लगी इसमें भी
ऐसी है अब मंहगाई
माँ क्या है उद्घाटन जो
नेता आए दिन करते हैं
जलसा है बेटा, जिसको कर
अखबारों में छपतें हैं।
माँ, नेता चुनाव में क्यों
वोटर को राजा कहते हैं?
एक मसखरी है बेटा वे करते हैं
हम सहते है
माँ, बैलों को क्यों नेता लोगों ने

चिन्ह बनाया है

बेटा, चरने को स्वदेश यह सबसे

उत्तम काया है

माँ, बापू थे कौन कभी देखा तुमने था?

उनको देखो

बेटा, वे निर्धन के धन थे,

नवयुग है उनका लेखा

माँ बापू कहते क्यों तेरी

आँखें यों भर आयी।

बेटा उनके मरते ही सब ओर

अँधेरी सी छाई।।[11]

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर में माँ ने स्वराज्य, श्रमदान, मँहगाई, उद्घाटन, चुनाव, श्रमदान, गाँधी आदि पर जो दृष्टिकोण उपस्थित किया है, वह बालकों को यथार्थ से जोड़ने वाले हैं तथा एक सच्चे और "यथार्थवादी कवि के दायित्व को पूरा करने वाले हैं। बाल साहित्य के रचनाकार के रूप में वीरेश्वर सिंह ने बाल साहित्य को संस्कारित किया। एक कुशल शिल्पकार की भाँति काट–छांट कर बालकों में अच्छे संस्कार पैदा किया। वीरेश्वर का बाल साहित्य बालकों में साहित्यिक, राष्ट्रीय एवं मानवतावादी संस्कार जगाकर बालकों को व्यक्ति के नए ढांचे में ढालता है।"[12]

वीरेश्वर सिंह ने जिस बाल साहित्य रचना की है वह प्राचीन कथाओं, परीकथाओं, पौराणिक कथाओं तथा ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित नहीं है। उन्होने ऐसे बाल साहित्य की रचना की है, जो बच्चों के आस–पास के वातावरण, देशकाल को परिस्थितियों एवं मानवीय मूल्यों से बच्चों को नए संस्कार दे सके।

बालक–बालिकाओं की सृजन क्षमता को विकसित करने तथा बच्चों में रचनात्मक प्रतिभा, कलात्मक संस्कार, संवेदनात्मक चेतना को अंकुरित कर पल्लवित करने में वीरेश्वर सतर्क रचनाकार के रूप में सामने आते हैं।

अपने देश के प्रति प्रेम, सम्मान, श्रम और खेतिहर किसानी संस्कारों के प्रति आदर का मान जगाने में वीरेश्वर की बाल कविताएं उल्लेखनीय हैं। बाल भारती, दिल्ली से उनकी कुछ बाल कविताएं प्रकाशित हुई हैं। शेष अप्रकाशित हैं, पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि वीरेश्वर सिंह का बाल साहित्य दीर्घजीवी होगा। बाल साहित्य में क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए वे याद किए जाएंगे। उनके बाल साहित्य से नई–नई दिशायें प्राप्त होंगी। डॉ. ललित के शब्दों में "आज जब परीकथाओं की प्रासंगिकता का सवाल नहीं रह गया है। भूत प्रेतों की कहानियों का युग समाप्त हो चुका है। ऐसे समय में वीरेश्वर सिंह ने दिनकर, सोहन लाल द्विवेदी, निरंकार देव सेवक की परम्परा में राष्ट्रीय बाल काव्य का सृजन करके हिन्दी को जो योगदान दिया है उससे बाल साहित्य को प्रतिष्ठित करने में सहायता प्राप्त होगी।"[13] वीरेश्वर सिंह के बाल साहित्य नें बच्चों को समाज और देश का अंग बनाया है। वे पृथ्वी और मानवता के अंग बनकर आये हैं। अंधविश्वासों, रूढ़ियों, भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध चेतना जगाने वाले वीरेश्वर सिंह को बाल साहित्यकार के रूप में भी मान्यता देनी चाहिए।

वीरेश्वर सिंह एक सीमा तक ही आस्थावादी हैं। अन्यथा रूढ़ि के विरुद्ध हैं। "वीरेश्वर सिंह की कविताओं में आस्था के स्वर हैं। यह आस्था शास्वत के प्रति है। परंपरित चिंतन रूढ़ियों जो मनुष्यों की प्रतिज्ञा को आक्रांत किए हुए हैं। ईश्वर का अस्तित्व जिससे मनुष्य भयाक्रांत रहता है, स्वर्ग नरक के कल्पित बन्धनों का भय जो मनुष्य को धार्मिक रूढ़ियों में बांधे रहता है, उन सबके प्रति वीरेश्वर ने आस्था व्यक्त की है। उसका कवि लोकतंत्र, समाज वाद, धर्म

निरपेक्षता तथा सामाजिक न्याय का पक्षधर है।"[14]

आस्था का जो स्वर वीरेश्वर के काव्य में अभिव्यक्त हुआ है, वह निम्नलिखित पंक्तियों में दृष्टव्य है –

अ. "लक्ष्मी जी को बना लिया घरनी। अंगरक्षक बनाया विषधर नाग। क्यों न सिरताज बनके राज करों। क्यों न सुरगण तुम्हारा गाएँ राग। कामधेनी बँधी तुम्हारे घर। और उपवन में कल्पवृक्ष खड़ा। है न बच्चों को यहाँ दूध नसीब। घर गृहस्थी में है आकाल पड़ा।"[15]

ब. "वह रहित धर्म। वह धर्म प्राण। वह हिन्दू, ईशा, मुसलमान।"[16]

स. "भीखू अब की कुम्भ नहाय बीच धार तिरवेनी
धकापेल नावन की सेनी, भगतन की धुर श्रेणी
भगतन की धुर श्रेणी, यारो दुउ बुड़की लै भागै
पनिहा दूध चढ़ाया, खरी आसिष गंगा सो माँगै
छहर छहर लहरै लहर, सरित मधुर मुसकाय
भीखू संगम देखिए, कोउ न गंगा नहाय।"[17]

द. अरे छोड़ आसमान। वहाँ कहाँ भगवान। धर धरती का ध्यान। तेरी फूस की मड़ैया का छवैया यही आदमी।"[18]

उक्त पंक्तियों में जाहिर है कि कवि वीरेश्वर रूढ़ियों, आडम्बरों और तथाकथित मर्यादाओं के खिलाफ एक आवाज उठाते हैं और उनकी कविताओं में गहरी अनास्था की अभिव्यक्ति हुई है –

अ. "विधि का विधान क्या
संसार कौन है?

दो हाथ हमारे

करतार कौन है?''[19]

ब. ''छोड़ दैव की पुकार

वीर, पौरुष प्रसार

देश, वेष को सँवार

भाग्य भारत विहान का करैया यही आदमी।''[20]

ईश्वर के स्थान पर माँ की कोख की पूजा के लिए संदेश देते हैं। लोक को ही स्वर्गलोक में बदलने का क्रान्तिनाद करते हैं और आदमी की सत्ता को सर्वोपरि मानते हैं –

''पूज माता की कोख,

साज दुनिया विशोक,

लोक ही है स्वर्गलोक

प्रण, प्राण औ जहान का रखैया यही आदमी।''[21]

अनास्था को व्यक्त करने के लिए कवि ने गहरे व्यंगों का भी प्रयोग किया है –

अ. "जन चिन्ता को घिउ पिवें

सेवा दूध नहाय

साथी, तापे देश हित

भगवन मगन मोटॉय।'

एक बार पुनि वोट दीजिए

राम रहीम दोहाई

चूक पुरानी छमिये जनगन,

सके न करि सेवकाई
पुनः वोट जो दीजिए, सेवा करैं बनाय
साथी, विधि सों देवता, पॉच साल फिर खाय।"[22]

कवि वीरेश्वर सिंह ने मानवीय सहानुभूति और दरिद्र नारायण की उपासना पर आस्था व्यक्त की है। प्रचलित मान्यताओं को तोड़कर नए सामाजिक यथार्थ के जीवन पर चिंतन करता हुआ कवि नई आस्था, श्रम को तीर्थ की संज्ञा प्रदान करता है। लाल क्रांति का उद्घोष करता है –

अ. "मन्दिर, मस्जिद बसइ न गिरजा गृह।
श्रमिक, स्वेद प्रभु उपजैं खेत सदेह।।"[23]

ब. "संघ सुधा रस धाके कृषक मजूर।
जागे, जागे, जागे, अब जग पूर।।"[24]
"करत विश्रृंखल श्रृंखल श्रमिक मजूर।
नवयुग रंग अनुरागे, अरुण अबीर।"[24]

स. "आगे–आगे आगे हनत हंकार
सीस हॅथेरी राखे साम्य प्रसार।।"
क्षय रजनी, जय दिनकर अरुण उमंग
लाल छजानम फहरत तरुण तरंग।।"[25]

"वीरेश्वर की कविताएं समकालीन जीवन की जटिलताओं, विसंगतियों को व्यक्त करती हैं। उनकी कविता में भूख, रोटी भी है। साथ ही साधारण से साधारण वस्तुओं में कविता की खोज।"[26] 'चुंगी की लालटेन' कविता ऐसी ही कविता है, जिसके माध्यम से कवि ने जिन्दगी को रोशनी प्रदान की है। लाल जागरण कविता संदेश दिया है –

पर चौराहे पर जो गूँगी जनता
की बनी पुकार खड़ी
कैसे सरकारी तेल गला
पा सकती है वह लालटेन?
होवे अन्धों का राज जहाँ
क्या वहाँ, मूल्य उजियारी का
हों जहाँ चोर सरदार वहाँ
हो क्यों न राज अधिकारी का?
जनता की लालटेन की लौ
बोलो फिर कैसे जल पावे?
कैसे जीवन की, ज्योति सजग
इस चौराहे पर मुसकावे
कब लाल जागरण की होली
आकर जवान धधकावे गें
हैं अलख जगाती खड़ी अंधेरे
की अलबेली लालटेन'' [27]

स्वतंत्रता के पूर्व और स्वाधीनता के बाद की स्थितियों को लेकर अनेक व्यंग्य परक रचनाएँ वीरेश्वर सिंह ने लिखी हैं। यह व्यंग, राजनीति के अवमूल्यन, लूटपाट, घूसखोरी, मिलावट, नेताओं और अफीसरों के शोषण पर किए गये हैं। व्यंग रचनाओं के माध्यम से कवि ने समाज, देशकाल के सच को उद्घाटित किया है।

अ. 'बढ़े टैक्स अँसुवा मत ढारौ
मँहगी भए न रोओ

साथी रात स्वराज सुहानी

तान चदरिया सोओ

तान चदरिया सोओ, यारो

चीज अगम अपारा

मूरख मन क्यों धीर न धारै

नेता हैं करतारा।''[28]

ब. खादी यारौ गला न काटै

चर्खा पेट न फारै

साथी, रात स्वराज सुहानी

गीता खड़ी पुकारै

गीता खड़ी पुकारै, यारौ

अमर जीव जग जाया

रे मूरख, क्यों रपट लिखावै

परम ब्रह्म की माया।''[29]

वीरेश्वर की कविता की एक मुख्य विशेषता है करुणा और अहिंसा तथा श्रम और संवेदना के मूल्यों की स्थापना। वह मनुष्य के गहरे और आत्मीय जीवन संघर्षों से परिचित कराती है। संघर्ष के लिए प्रेरित करती है, संगठन का मंत्र तैयार करती है। प्रेम और सौन्दर्य के तत्व संघर्ष चेतना के साथ गतिशील है।

अ. "मुट्ठियों को बॉध, रे मानव अगिन अब साध

बन अपना सहारा।''[30]

ब. "गरजते बादल, तड़पती तड़ित, बहती है हवा

हड्डियों को बेधती है ठंड, अँधियारी धरा

पर यही वह क्षण है, जब का प्रण है,

हिल के कीच, जग के बीच

नद औ नार सब कर पार

हम मंजिल चलेंगे

बचन पूरा करेंगे।"[31]

स. "वीर, कातर होते बेकार

यही तो है संसार

अगम कूदौं, तैरो उस पार

अरे, हँस के लों वार।"[32]

द. "कतार की कतार, धुआँधार, चीटियाँ अपार

चल पड़ी चपल, उमड़, सबल सहस्रदल सवार

रोकेगा कौन भला इनका दल

एक एक चींटी में एक–एक गज का बल।"[33]

वीरेश्वर सिंह की कविताएँ मनुष्य को जीने की प्रेरणा देती है। सौन्दर्य के साथ साक्षात्कार कराती हैं और सौन्दर्य की गहरी भावभूमियों में प्रवेश कराती हैं। उनमें श्रम के प्रति सच्ची निष्ठा है। श्रम देवता है। वीरेश्वर सिंह के काव्य में –

अ. "तन धौवे श्रम स्वेद सों

खेत सीच हरषाय।

भीखू सोई तीरथ करै

सोई गंग नहाय।"[34]

ब. "बंजर को कर हरा

लोहे को मोड़ दे,

आदम के हाड़ से

पत्थर को तोड़ दे।" [35]

वीरेश्वर सिंह के काव्य में किसान, मजदूर, श्रमिक, कुली, शोषित व्यक्तियों के चेहरे हैं। उनके काव्य में स्वाधीनता की लहर है। रस और बौद्धिकता का समन्वय है। कवि की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

अ. " अपने तन का है भरोसा और की आशा नही

होगी दुनिया तमाशा, टेंसन तमाशा है नहीं

हड्डियों को तोड़, घुटने फोड़ कर करता है काम

रेलवे का यह कुली पाता है तब थोड़े से दाम।" [36]

ब. "बहता है पसीना

मेहनत का है जीना

भूखी है मजूरी

भूखी है किसानी

भूखा है बुढ़ापा

भूखी है जवानी।" [37]

द. "चींटी का नाम जंग

चींटी का काम जंग

दुनिया के जीवन में, चींटी का राम जंग।

दिग्गज चिंघाड़ रहे

केहरी दहाड़ रहे,

चींटी ने चाट लिया, हाड़, हाड, हाड़ रहे।"[38]

वीरेश्वर सिंह के काव्य के मूल्यांकन के लिए नई कसौटी की आवश्यकता है। उनकी कविता एक ओर महाकवियों की परम्परा को सुरक्षित करती है तो दूसरी ओर सामाजिक क्रान्ति को काव्य चिंतन का विषय बनाती है। 'भीखू' और 'गोरा बादल' उनकी कविता के चरित्र नायक हैं, जो भारतीय ग्राम्य, संस्कृति, आर्थिक विषमताओं के बीच जीते हुए एक ऐसे मनुष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अभी तक संघर्षो में अविजेय रहा है। उनकी कविता एक ऐसे रूप का दर्शन कराती है –

अ. ''पेटागिन भीखू की तुमसे जरै दुन अंगारे
जरै दून अंगारे, यारों रूख रोट औ पानी
मारै मरै पंजर भव को अगम चिलम विज्ञानी।''[39]

ब. ''पेटागिन पंजर जरै, जरै चिलम अंगार
सुनिये श्री ऋतुराज जू मृषा कुसुम श्रंगार।''[40]

वीरेश्वर की कविताएं अधिकांशतः रूप में अप्रकाशित हैं। उनकी कविताओं के मूल्यांकन में एक बड़ी बाधा उनका प्रकाशित न हो पाना है। यदि समय रहते ये कविताएं प्रकाशित हो गयी होती तो शायद मूल्यांकन में इतनी कठिनाई नहीं होती। उनकी कविताओं का समग्र संकलन अभी तक प्रकाश में नहीं आया। अन्यथा राष्ट्रीय आंदोलन के कथाकार प्रेमचंद्र की भॉति हिन्दी कविता के क्षेत्र में वीरेश्वर का नाम अग्रगण्य होता।

उन्होने कविताओं में पूंजीपतियों का विरोध किया है। असहयोग आन्दोलन तथा खादी ग्रामोद्योग के प्रति आस्था व्यक्त की है। कहानियों की भांति उनकी कविताएं साम्राज्यवाद के विरोध में लोकतंत्र को मजबूत करती हैं। बहुसंख्यक

किसान जनता के लिए उनकी कविताओं में पीड़ा और संघर्ष का समवेत स्वर मुखरित हुआ है।

वस्तुतः वीरेश्वर हिन्दी के क्रान्तिकारी कवि हैं, संघर्षशील कवि हैं। गॉधीवादी होकर वे साम्यवादी हैं और सभी वादों से मुक्त होकर मानवतावादी कवि हैं। 'एकला चालो रे के रवीन्द्र की भॉति, वीरेश्वर भी अकेले ही संघर्ष से जूझते हैं। निराला के 'मैं अकेला मैं अकेला। जानता हूँ, नदी झरने। जो मुझे थे पार करने। कर चुका हूँ, हँस रहा यह देख कोई नहीं भला। मैं अकेला।

वीरेश्वर सिंह भी संघर्ष जयी कवियों की परम्परा में 'एकांकी' संघर्षरत हैं –

"गहन है यह सान्ध्य बेला
जल रहा है दूर मन्दिर में अकेला दीप
है अखिल सुनसान, कोई है न आज समीप
सो गए तृण तरु, गगन निस्तब्ध है
बुझ रहे धूमिल नखत प्रारब्ध है
उड़ गए पंछी –
गहन है सान्ध्य बेला
सान्ध्य के इस विजन में
बस मैं अकेला।"[41]

वीरेश्वर ने अपनी कविताओं में रूस की क्रान्ति की ओर संकेत दिया है। एशिया के जागरण का चित्र खींचा है। एशिया काव्य जागरण, मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा को वीरेश्वर ने भलीभांति पहचाना है। "वस्तुतः वीरेश्वर भारतीय परम्परा के ऐसे महान प्रगतिशील कवि हैं जिनकी कविताओं ने जन जागरण

किया, कविता लिखकर जन संगठन खड़े किया, जन आंदोलन चलाए। नारियों को संगठित करने का संदेश दिया। उन जैसा संवेदनशील कवि हिन्दी प्रगतिशील कविता में कोई नहीं है। वे कवि के रूप में नागार्जुन, त्रिलोचन और केदार की भाँति क्रान्तिकारी, संवेदनशील और ऊर्जावान कवि हैं। प्रचार् और प्रसार के कारण उनका मूल्यांकन नहीं हो सका। कहानियों के क्षेत्र में वे प्रेमचंद्र को भी भावमुग्ध करने वाले कथाकार हैं और कविता के क्षेत्र में महाप्राण निराला के उत्तराधिकारी डॉ. ललित के शब्दों में [42] –

– वीरेश्वर आधुनिक प्रगतिशील चेतना के मानवतावादी कवि हैं।

– उन्होने अपने साहित्य जीवन का प्रारम्भ कहानियों से किया। कविता की ओर उनकी प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही रही है।

– कविता में उन्होने 'भीखू' और 'गोरा बादल' उपनामों का प्रयोग किया। आंचलिक और ग्राम्य संवेदनाओं का यथार्थ चित्रण 'भीखू' की कुंडलियों के रूप में तथा राजनीतिक व्यंग एवं क्रान्तिकारी चेतना की कविताएं 'गोरा बादल' के नाम से लिखी। [43]

– वीरेश्वर सिंह का कोई कविता संग्रह प्रकाश में नहीं आ सका।

– उनकी बाल कविताओं में से 'सबेरा' बालक (पटना) 1968 में, 'कम्बल' कविता बालभारती (नई दिल्ली) 1968 में प्रकाशित हुयी, शेष कविताएं अप्रकाशित रहीं। वीरेश्वर जी की अन्य प्रकाशित कविताएं 'तैराक', दीदी पत्रिका में, 'गोरा बादल की कहेनी' कविता 'जनयुग' पत्रिका में 'चींटी' कविता 'विकल्प' (बाँदा) में प्रकाशित हुयी, शेष कविताएं अप्रकाशित हैं।

– डा. ललित ने सूचित किया है कि वे अपनी कविताएं भीखू की कुंडलियां

पढ़ते–पढ़ते से फफक फफककर रो पड़ते थे। उनकी संवेदनाओं के साथ कवि का जीवन तदाकार कर जाता था। ऐसी सच्ची और गहरी संवेदना वाली कविताएं हिन्दी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ हैं।

वीरेश्वर सिंह का व्यक्तित्व हिन्दी जगत के सामने , उँगली का घाव, प्रकाशित कहानी संकलन के माध्यम से आया।

'उँगली का घाव' का प्रथम बार प्रकाशन 1945 ई. में हुआ। इसके प्रकाशक कलाकुंज, 120 छोटी पियरी, काशी के थे, इसके मुद्रक बी. के. शास्त्री ज्योतिष प्रकाश प्रेस काशी थे।[44]

'उँगली के घाव' कहानी संकलन की भूमिका में वीरेश्वर सिंह ने जो कुछ कहा, वह आज भी उल्लेखनीय है। "हिन्दी के उज्ज्वल और शक्तिशाली भविष्य में_विश्वास रखकर उसके एक अनन्य और गर्वीले पुजारी की तरह फूलों का यह दोना हिन्दी को भेंट करते हुए मुझे संतोष हो रहा है। मैं तो यह मानता हूँ कि हिन्दी में एक कविता, एक कहानी, एक लेख, एक छोटी से अच्छी कोई चीज लिख देने में वही पुण्य फल, वही अमृत है जो गंगा स्नान या एक हजार गायों के पुण्य में है। वही सुख संतोष है जो गरीबों के ऑसू पोछने या खद्दर के पहिनने ओढ़ने में है। हिन्दी केवल एक भाषा ही नहीं, यह जागृत भारत की आत्मा है, यह वह मंत्र है, जिसमें जप जाप और प्रताप से नए अवतार होंगे।

मैं हिन्दी लिखता हूँ, हिन्दी पढ़ता हूँ, हिन्दी बोलता हूँ। मैं उतना ही अधिक सुधरता हूँ और जाग्रत होता हूँ। विस्तृत बनता हूँ। इन कहानियों में हिन्दी संसार के सामने प्रस्तुत करने में मुझे इसलिए संतोष हो रहा है, कि मैने इतनी हिन्दी लिखी है। हाँ, अमर भारत की अमर हिन्दी और मेरे जीवन के इतने क्षण निश्चित रूप से सार्थक हुए हैं।

काल प्रवाह में कुछ वर्षों की दूरी तक तो ये कहानियॉ चलेंगी ही। और जहॉ तक, जब तक ये हैं, या रहेंगी, तब तक हिन्दी साहित्य प्रेमियों हृदय बदलेंगी। ऐसी आशा है। मेरी एक छोटी सी कृति के लिए इतना काफी होगा। इससे अधिक ईश्वर की कृपा पर है।"[45]

वीरेश्वर सिंह की कहानियों के मूल्यांकन के लिए जो प्रतिमान बनाए जा सकते हैं, उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं –

अ. परिवेश से सम्पृक्ति :

वीरेश्वर की कहानियॉ परिवेश से सम्पृक्त कहानियाँ हैं। यही कारण है कि मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति की जय यात्रा उनकी कहानियों में सुरक्षित हैं। परिवेश का अर्थ मात्र वाह्य जीवन और जगत का विवरण नहीं है। इसका आशय जीवन स्थितियों और समय के यथार्थ के प्रभाव हैं। जिसे न सिर्फ कहानी की घटना और कार्य व्यापार रूपायित होते हैं बल्कि उससे चरित्रों का मनोविज्ञान और कहानी की केन्द्रीय अनभूति निर्धारित होती है। कथा के विकास, चरित्रों की गतिविधियॉ, कहानी कार की दृष्टि और संवेदना, व्यक्त होने वाले अनुभव और चेतना पर परिवेश का निर्णायक प्रमुख होता है। वीरेश्वर की कहानियों के परिवेश का रिश्ता सक्रिय और द्वन्द्वात्मक है।

वीरेश्वर की कहानियों में सामाजिक परिदृश्य को रूपांतरित करने के लिए कहानीकार ने नैतिक और मानवीय जिम्मेदारी सक्रिय रूप से निभायी है। उनकी कहानियाँ अपने समाज की प्रतिनिधि और प्रतीक कहानियाँ हैं।

अनुभव संसार :

"कहानी का सारा घटना–विन्यास क्रिया व्यापार उस अनुभव को रूपायित

करता है जो कहानीकार का अपना निजी और व्यक्तिगत अनुभव है। इसलिए किसी भी कहानीकार की श्रेष्ठता की पहचान और परख उसके संसार की व्यापकता से होती है।''[46] .

वीरेश्वर की कहानियाँ आत्म अनुभव की ईमानदारी और प्रमाणिकता से युक्त हैं, उन्होनें वैयक्तिक सघनता और सामाजिक व्यापकता भोगे हुए यथार्थ और अनुभव की प्रमाणिकता पर लेखक ने बल दिया है। कहानीकार ने अपने व्यक्तिगत सुखों, दुखों को सामाजिक संदर्भ प्रदान कर उन्हें मानवीय आशय प्रदान किया है। लेखक ने व्यक्तिगत अनुभवों को एक वृहत्तर सामाजिक यथार्थ का अंग बना दिया है।

वीरेश्वर की कहानियों का मूल्यांकन सामाजिक अनुभव की दस–बीस, लेखा–जोखा, कार्यकारण सम्बंधों की पहचान, उसके निहित आशयों का उद्घाटन,उनकी संवेदनात्मक उत्तेजना और ऊर्जा की परख से उनकी कहानियाँ अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावी बन गयी हैं।

भाव वोध वैशिष्ट :

वीरेश्वर सिंह की कहानियों के सम्यक मूल्यांकन के लिए उन्होने कहानियों के भाव बोध को जानना आवश्यक है। उनकी कहानियों में व्यक्त भाववोध, उदासीनता, तटस्थ एवं नकारात्मक नहीं हैं। उनका भावबोध सौन्दर्य के प्रति एक विवेकवान दृष्टि देता है। मानसिक और चेतना के विकास में उनकी कहानियाँ स्थायी मूल्यों को जगाती हैं।

वीरेश्वर की कहानियाँ जिस भाव बोध को जगाती हैं, उसमें चरित्रों, स्थितियों, प्रसंगों और कार्य व्यापार के माध्यम से सामाजिक शक्तियों की अन्तःक्रिया,

द्वंद और संघर्ष की समझ पैदा होती है। मानवीय संवेदना के आधार पर चरित्र का निर्धारण होता है। उनकी कहानियाँ संस्कारों को संशोधित करती हैं। स्थापित मूल्यों का पुनर्गठन करती हैं। वे एक नया चरित्र रोक बनती हैं।

मानवीय संवेदन कहानी का केन्द्र :

वीरेश्वर की कहानियों के केन्द्र में मानवीय सत्ता ही प्रमुख है। कहानियों में मनुष्य ही प्रतिबिम्बित होते हैं। मनुष्य की यथार्थ पहचान उन कहानियों में उभरती है। उनकी कहानियों में व्यक्त होने वाला मनुष्य (नर और नारी) उनके क्रिया–कलाप, उनकी गतिविधियाँ, उनका जीवन दर्शन, उनका आचरण, व्यवहार यथार्थवादी और आश्वस्त कारी है। उनकी कहानियों में उभरने वाले मानव हमारे देश काल के मानवों से मेल खाते हैं। मानवीय चरित्र अपने युग और समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। वीरेश्वर की कहानियों का मूल्यांकन करते समय इस बात की जांच पड़ताल आवश्यक है कि उनकी कहानियों में व्यक्त मनुष्य की मनोवृत्तियाँ कितनी सघन, सूक्ष्म और यथार्थ से युक्त हैं। मानव चरित्रों में कितनी स्वाभाविकता और सजीवता है। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में वह कितना महत्वपूर्ण है।

मूल्य दृष्टि और परिप्रेक्ष्य :

"यूँ तो समूचा साहित्य ही मानवीयता की सुरक्षा के संघर्ष मे रत एक रचनात्मक चेष्टा है लेकिन चूँकि कहानी में मनुष्य और उसका परिवेश अन्य विद्यार्थी की तुलना में अधिक मूर्त होकर आता है, अतः उसमें वे दिशाएं और कोण अधिक स्पष्ट होकर उभर सकते हैं? उभारे जाने चाहिए, जिसमें या जहाँ मानसीयता का हर संकट सबसे गहरा है।"[47] वीरेश्वर की कहानियों की रचनात्मक चेष्टा उन सबके खिलाफ है जो मनुष्य की गरिमा, उसकी स्वतंत्रता, उसकी अस्मिता, उसकी समग्रता और पूर्णता के खिलाफ है। मुनष्य के परिवेश और

समाज में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन मनुष्य की मुक्ति, एक बेहतर मानवीय संसार की रचना ही परिप्रेक्ष्य है जिसमें लिखी गयी कहानियाँ सार्थक होती हैं। वीरेश्वर सिंह की कहानियों में समाज की मुक्ति के दो रास्ते अपनाए गये हैं। एक तो समाज की कमजोरियों, गलतियों, विसंगतियों और अन्तर्विरोधों को उद्घाटित करके, ताकि उन पर विजय पायी जा सके और दूसरी उसकी ताकत और सामर्थ्य का एहसास कराकर मुनष्य और समाज के विकास की दिशा में बाधक और प्रतिगामी ताकतों, वृत्तियों और स्थितियों को उजागर करने वाली वीरेश्वर सिंह की कहानियाँ मनुष्य के अन्तर्निहित ताकत का संकेत करती हैं। वे एक सकारात्मक, विधेयात्मक, सक्रिय और क्रान्तिकारी मूल्य चेतना से सम्पन्न हैं।

वीरेश्वर की कहानियों की मूल्य दृष्टि और परिप्रेक्ष्य की पहचान हम उनमें अन्तर्निहित जीवनदर्शन, विचारधारा और विश्व दृष्टि से कर सकते हैं। उनकी कहानियों में जीवन दर्शन और मूल्य दृष्टि वास्तविक अनुभव की आँच में तय कर ही आए हैं। उनुभवों से ही दृष्टि का विकास होता है और दृष्टि से उन्हें एक परिप्रेक्ष्य मिलता है। मूल्य हीन और परिप्रेक्ष्य मानवीय अनुभव के संवेदनात्मक आघात और आशय से ही जीवन और प्रासंगिक हो उठे हैं।

रूपविधान और भाषिक संरचना :

वीरेश्वर की कहानियों में रूप विधान का उतना ही महत्व हैं जितना कि उसके कथ्य और अनुभव संसार का। वीरेश्वर की कहानियों में संस्मरण, काव्य, रेखाचित्र, रिपोतार्ज, सूक्तियों का विन्यास भी घुलमिल गया है। उनकी कहानियों के रूप विधान में प्रेमाख्यान, लघुकथा, लोककथा, लम्बी कहानी, नाटकीय विन्यास अनेक रूप विधान मिलते हैं। इन सबका समन्वय उनकी कहानियों में मिलता है।

वीरेश्वर सिंह की कहानियों के रूप विधान का केन्द्र कहानियों की भाषिक संरचना भी है। उनकी कहानियों में अर्न्तवस्तु के रूप में समाज और आदमी है। परिवार और आंतरिक सम्पन्नता है। भाषा भी उनके अनुकूल है। भाषा से सहजता, उल्लास, वीरोचित, भावना है। सीधी, सहज बिम्ब प्रधान, काव्यात्मक भाषा कहानीकार के गहरे चिन्तन मनन का परिणाम है।

वस्तुतः वीरेश्वर की कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. भाषा का संतुलित प्रयोग
2 भाषा में सार्थकता की पकड़
3 साहित्यिक सौष्ठव, अर्थवत्ता, नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि महत्व
4 अभिव्यक्ति सजीव, मार्मिक, हृदयग्राही, व्यंजनापूर्ण
5 बिम्बों के उपयोग से वातावरण का निर्माण
6 ऑचलिक बिम्बों का प्रयोग
7 जीवन और प्रकृति का संतुलन
8 संघर्षों से चरित्र निर्माण
9 श्रम से उपजी संवेदनाओं का रूपान्तरण
10 स्वावलम्बन, स्वतंत्रता एवं संवेदना की ओर चलने वाली कहानियॉ
11 कहानियों मे गीतों का प्रयोग
12 प्रेमचन्द्र और प्रसाद का मिलता जुलता प्रभाव
13 पात्रों में नारियों की भूमिका अधिक सक्रिय
14 शिक्षा मंदिरों की दुर्दशा, व्याप्त भ्रष्टाचार एवं छात्रों के भविष्य की चिंता
15 रूढ़ियों का विरोध

16 कहानियों के माध्यम से आत्मिक शक्ति का विश्बास, हृदय का परिवर्तन, प्रेम और करुणा की ओर प्रस्थान।

17 प्रेम संवेदनाओं में चरित्र का स्थापन्न

18 कहानियों में उद्देश्यपूर्ण, क्रान्तिकारी, सार्थक जीवन की अभिव्यक्ति

वस्तुतः निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि वीरेश्वर की कहानियों का समग्र मूल्यांकन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। 'उनकी कहानियों में प्रेमचन्द्र और प्रसाद दोनो परम्पराओं का एक नया संस्करण देखने को मिलता है। वे श्रमजीवियों, कृषकों और दलितों के मसीहा प्रेमचन्द्र के यथार्थवादी दृष्टिकोण को लेते हैं, किन्तु प्रसाद की काव्यात्मकता, दार्शनिकता एवं भाव प्रवणता को भी लेकर चलते हैं।''[48]

वीरेश्वर की कहानियॉ हिन्दी के एक अनन्य गर्वीले पुजारी की कहानियॉ हैं। वे आत्मिक परिवर्तन कराने वाले कथाकार है। परम्परा और नवीनता के बीच के सेतु हैं। प्रेमचन्द्र की दृष्टि में वे हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकार थे।

वस्तुतः वीरेश्वर सिंह का समग्र कथा साहित्य यदि प्रकाशित हो जाए तो उनकी कहानियॉ चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी की भॉति हिन्दी की अमर कहानियॉ होने के योग्य हैं।

नाटककार के रूप में मूल्यांकन :

"आधुनिक युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से हिन्दी नाट्य साहित्य का विकास अविच्छिन्न गति से होता रहा, तथापि श्री जयशंकर प्रसाद के अविर्भाव के पूर्व किसी युगान्तकारी प्रतिभा के दर्शन ही नहीं हुए। प्रसाद के आगम से हिन्दी नाटक साहित्य को एक नवीन दिशा एवं गति मिली। जिसे लक्षित करके

आलोचकों ने इस युग को हिन्दी नाट्य साहित्य का 'विकास युग' माना है।[49]

प्रसाद परम्परा में वीरेश्वर सिंह नाटकों के क्षेत्र में आए, किन्तु उन्हें अधिक समय नहीं मिला। "उन्होने परिमाण की दृष्टि से केवल दो नाटकों की रचना की। प्रथम 'बिजली' नाटिका और दूसरा बाल एकांकी 'एकता–क्लब'। मात्र इन दो नाट्य कृतियों से वीरेश्वर को हिन्दी नाटककारो में प्रतिष्ठित करना कठिन है किन्तु बिजली नाटिका के प्रकाशन से वे हिन्दी नाटकों के क्षेत्र में उतरे और अपनी एकल नाट्यकृति से उन्होने राष्ट्रीय चरित्र, वीरोचित नारी चरित्र की जैसी अद्भुत सृष्टि की है, उससे वे अमर नाटककारों की –पंक्ति में अग्रगण्य हो गए हैं।"[50]

वीरेश्वर सिंह की नाट्य कृति 'बिजली' समाज को वीरता, देशसेवा, राष्ट्र धर्म से परिचित कराती हुयी नारी के क्रान्तिकारी रूप को प्रतिष्ठित करती है। वीरेश्वर सिंह ने 'बिजली' जैसे चरित्र की सृष्टि करके नाट्य प्रेम में हलचल उत्पन्न कर दिया है। 'बिजली' रसानुभूति ही नहीं कराती, क्रान्ति संगठन, अनुशासन और राष्ट्र रक्षा के लिए नयी पीढ़ी को प्रेरणा देती है। रंगमंच पर बिजली का प्रत्यक्ष प्रेषण कराया जाय तो निश्चय ही सहृदयों में एक ऐसा साधारणीकरण होगा। जिससे नयी पीढ़ियों को उत्सर्ग की प्रेरणा मिलती रहेगी।"[51]

लोक मंगल की भावना को दृष्टि में रखते हुए नाट्य शिल्पी वीरेश्वर सिंह ने जिस चरित्र को गढ़ा है, वह सामाजिकों के हृदय में तूफान जगाने वाला, हलचल मचाने वाला, हृदय परिवर्तन करने वाला चरित्र है।

वीरेश्वर सिंह की नायिका 'बिजली' वीररस की सजीव प्रतिमा है। उसके अंग प्रत्यंग से वीरता कौंधती है। अपने नाम की प्रतीकात्मक अर्थव्यथा को उद्घाटित करती है। नाट्यकारों द्वारा स्थापित भक्ति एवं शांत रसों को छोड़कर

युगानुकूल वीर रस को चुनने के पीछे वीरेश्वर सिंह का दृष्टिकोण सर्वथा क्रान्तिकारी है।

वीर रस के माध्यम से नाट्यकार वीरता के भावों से सहृदयों, सामाजिकों, पाठकों और दर्शकों को एक नए भाव लोक मे प्रतिष्ठित करना चाहता है, जहॉ नारी स्वातंत्र, सामाजिक, और राष्ट्ररक्षा ही जीवन का सर्वस्व है।

वीरेश्वर की नाट्य कृति बिजली में लोक मंगल की भावना रस निष्पत्ति में बाधक नहीं बनती, अपितु वह तीव्र रसानुभूति में सहधर्मी बनती है।

नाट्यकारों ने नैतिक प्रतिमानों पर बल देने से स्वाभाविकता के रूप में विकृति होने की आशंका की है, किन्तु वीरेश्वर जिन नैतिक प्रतिमाओं को लेकर नाट्य सृष्टि करते हैं, उसने कहीं भी रूप विकृति का प्रश्न ही नहीं उठता। नैतिक प्रतिमानों से उच्चादर्श और उच्च मनोबल की प्राप्ति करने में वीरेश्वर को अद्भुत सफलता मिली है।

वीरेश्वर सिंह ने ऐतिहासिक चरित्रों के साथ एक काल्पनिक चरित्र 'बिजली' को गढ़कर, जैसी चरित्र रचना की है, वह विश्व नाट्य क्षेत्र में अद्वितीय है। नाटिका की नायिका में आत्मबल है, अपूर्व शक्ति, सौंदर्य, लावण्य एवं वीरता एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी हैं। नाट्य शिल्पी ने 'बिजली' के माध्यम से मौलिक उद्भावना व्यक्त की है।

वीरेश्वर सिंह की नाट्य कृति 'बिजली' में जिस कथोपकथन का प्रयोग किया गया है, उसमें भाषा, संवाद, स्वागत कथन, एकल भाषण सभी मिलकर एक ऐसा वातावरण प्रस्तुत करते हैं, जिससे नाट्यकृति निराली बन जाती है।

नाट्य शैली की दृष्टि से 'बिजली' मौलिक और महत्वपूर्ण है। भाषा

सार्थक, पात्रानुकूल, भावानुकूल एवं चेतना की अखण्डता को धारण करने वाली है।

"रंगमंच की दृष्टि से वीरेश्वर सिंह की नाट्यकृति की सभी चुनौतियों को स्वीकार कर एक परिष्कृत, रुचि सम्पन्न, सादगी पूर्ण रचनाओं पर बल देती है। युद्ध, अभियान आदि के दृश्य रंगचंच में अव्यवस्था नहीं उत्पन्न करते। नाट्य कृति बिजली के सफल प्रदर्शन और मंचन में कोई संदेह नही होता क्योंकि रचनाकार अत्यन्त सर्तक रहा है रंगमंचीय निर्देशनों में कौशल का परिचय दिया है आरम्भ से फलागम तक के कथानक का विकास कौशलपूर्वक किया गया है।[52]

'एकता—क्लब' बाल एकांकी के द्वारा भाषाओं की भिन्नता और राष्ट्रीय एकता के प्रश्न को लेकर वीरेश्वर सिंह ने जिस सफलता से बाल एकांकी की रचना की है, वह भी उनकी अपूर्व सृष्टि है। उसमें भी नाट्यकार का प्रायोजन राष्ट्रीय प्रेम है। इस प्रकार वीरेश्वर ने यद्यपि परिमाण की दृष्टि से अधिक नाटकों की रचना नहीं की, किन्तु अपने इन दो नाटकों से वही स्थान प्राप्त करने के अधिकारी हो गए हैं, जैसा गौरव चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी को मात्र तीन कहानियों से मिला है।
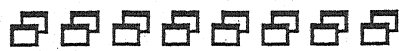
संदर्भ

1. समकालीन बाल साहित्य : परख और पहचान, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, पृ. 28
2. बालगीतायन, द्वारिका प्रसाद महेश्वरी, भूमिका पृ. 5
3. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 25
4. बाल साहित्य की अवधारणा, डा. श्री प्रसाद, पृ. 32
5. गदहा, वीरेश्वर सिंह, पृ. ...
6. बाल भारती, वीरेश्वर सिंह
7. सवेरा, वरीश्वर सिंह, पृ. 1
8. तदुपरिवत, पृ. 1
9. तदुपरिवत, पृ. 1
10. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 35
11. पुत्र के प्रश्न, वीरेश्वर सिंह, पृ. 12
12. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 36
13. तदुपरिवत, पृ. 37
14. तदुपरिवत, पृ. 38
15. अज्ञात, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1
16. गॉधी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1
17. भीखू की कुडलिया का संगम स्नान, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1
18. उद्बोधन, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1
19. बहता है पसीना, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1
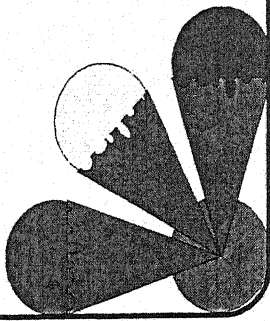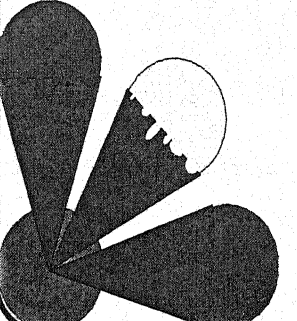
20. तदुपरिवत, पृ. 2

21. तदुपरिवत, पृ. 2

22. गोराबादल की कुंडलिया, वीरेश्वर सिंह, पृ. 2

23. गोराबादल के दोहे, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

24. तदुपरिवत, पृ. 1

25. तदुपरिवत, पृ. 1

26. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 2

27. चौराहे की लालटेन, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

28. गोराबादल की कुंडलिया, वीरेश्वर सिंह पृ. 1

29. तदुपरिवत, पृ. 2

30. 'पूस' (कविता), वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

31. तदुपरिवत, पृ. 2

32. दो बातें, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

33. चींटी, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

34. भीखू की कुडलिया, संगम स्नान, पृ. 1

35. बहता है पसीना, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

36. रेलवे का कुली, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

37. बहता है पसीना, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

38. चींटी से, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

39. भीखू की कुंडलिया, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

40. तदुपरिवत, ऋतुराज शीर्षक, वीरेश्वर सिंह, पृ. 1

41. साध्य बेला, वीरेश्वर पृ. 1

42. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 28

43. वह गोरा बादल था, (श्रद्धांजली), डा. ललित

44. उंगली का घाव, वीरेश्वर सिंह, कलाकुंज, 120, छोटी पियरी काथी

45. तदुपरिवत, भूमिका पृ. 1

46. कालजयी कहानियॉ, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित ललित, भूमिका भाग, पृ. 12

47 तदुपरिवत, भूमिका, भाग, पृष्ठ 10

48. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 28

49. आंध्र हिन्दी रूपक, पांडु रंग राव पृ.उ 154

50. वीरेश्वर का रचना संसार, डा. चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' पृ. 27

51. तदुपरिवत पृ. 27

52 तदुपरिवत पृ. 28

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

उपसंहार

कोई भी महान साहित्यकार अपनी कृतियों के बिपुल भण्डार से नही बल्कि अपनी कृतियों की गुणवत्ता, मूल्यवत्ता तथा उनमें अभिव्यक्त आस्था और जीवन दर्शन से पहचान बनाता है। वीरेश्वर का काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है उनके साहित्य में गांधी वादी आस्था मार्क्स वादी संघर्ष चेतना दोनो की अभिव्यक्ति हुयी है। रचना धर्म को जीवन एवं सामान्य मनुष्य की संवेदना के स्तर पर रूपान्तरित करने का प्रयत्न करने का वीरेश्वर को और भी महान बना देता है। उनकी गोरा बादल की कवितायें जहां वीरता का संचार करती है वही 'भीखू की कुंडलियों ' में ग्रामीण कृषकों की आत्मा का स्वर निनादित होता है। श्रम और संवेदना को लेकर लिखी गयी 'भीखू की कुंडलियां ' वस्तुत एक ऐसी कवि के हृदय का प्रतिबिम्ब है जो ईश्वर पर आस्था रखते हुये प्रकृति को जीवन का अंग मानते हुये प्रेम और सौन्दर्य को कर्तव्य की बलि वेदी पर न्यौछावर कर देता है।

भीखू जहां एक ओर समय और देशकाल से भ्रष्टाचार से संघर्ष करता है जहां वह एक ओर गूंगी जनता की आवाज बन जाता है वहीं दूसरी ओर वह करतार (श्रृष्टि कर्ता) को उसके विधान को चुनौती देता हुआ दिखायी पड़ता है। मन्दिर मस्जिद के ऊपर मानवता के श्रम को प्रतिष्ठित करने वाले वीरेश्वर ने जिस दरिद्र नारायण की आराधना की है वह उनकी मानवीय आस्था का ही परिणाम है। वीरेश्वर सिंह हिन्दी के क्रान्तिकारी, संघर्षशील और जनजागरण करने वाले प्रगतिशील कवि के रूप में दिखायी पड़ते हैं।

नाट्य साहित्य के क्षेत्र में नयी दिशा देने वाले नारियों को स्वाधीनता और संगठन की शक्ति के रूप में रूपानन्तरित करने का प्रयत्न भी रचनाकार का एक महान उद्यम कहा जा सकता है। विद्रोह करती हुयी नारी बिजली के प्रतिकार से अंधकार और अन्याय से जूझती है। कविता को विलाश की वस्तु नही बल्कि

उत्सर्ग की वस्तु मानती है तथा प्रेम और सौन्दर्य को राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर करते हुये जीवन को सार्थकता प्रदान करती है।

कथाकार वीरेश्वर ने आधुनिक कहानियों के मध्य कुंठा, संत्राश, हताशा और कामुकता को तोड़कर जिस पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराया है उससे हिन्दी कथा साहित्य को एक नयी दृष्टि मिली है। उनकी कहानियों में प्रेमचन्द्र का युगबोध झलकता है साथ ही चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की अमर संवेदनायें। इसमें कोई संदेह नही कि वीरेश्वर सिंह का यदि समग्र मूल्यांकन किया जाये तो उनकी कृतियां अर्थवान एवं स्थायी भावों को रूपान्तरित कर प्रेम सौन्दर्य और सेवा के संस्कारों से उक्त करने वाली हैं।

काव्य में वीरेश्वर सिंह के आदर्श निराला का प्रतिबिम्ब है तो नाटकों में हरि कृष्ण प्रेमी और जयशंकर प्रसाद की चेतना परिलक्षित होती है। कहानियों के क्षेत्र में वह प्रेमचन्द्र और गुलेरी के संयुक्त संस्करण निसंदेह हैं।

वीरेश्वर सिंह अमर हिन्दी के अमर साहित्यकार है। मातृ भाषा के अनन्य और गर्वीले पुजारी है उनकी प्रतिभा से हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं को जो आलोक मिलता है उससे साहित्य सृजन की नयी चिन्तन धाराओं के फूटने की अनन्त संभावनायें परिलक्षित होती हैं।

वीरेश्वर सिंह के बारे मे डा0 चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' के शब्दों में –

" गजराजों को मर्दित करने में
चींटी का दल था
हिन्दी प्रगतिशील कविता का
जो गोरा बादल था
एक कथा सम्राट कि

जिसमें बुन्देली का स्वर था
वह विराट व्यक्तित्व
राष्ट्र का गौरव वीरेश्वर था ''

संदर्भ ग्रंथ सूची :

वीरेश्वर सिंह का प्रकाशित साहित्य

1	अपराध (कहानी)	नई कहानिया, इलाहाबाद, 1968
2	उंगली का घाव (कहानी संकलन)	1945, कलाकुंज छोटी पियरी, काशी,ज्योतिष प्रकाश प्रेस
3	कम्बल (बाल कविता)	बालभारती, दिल्ली 1968
4	पतिवृता (लघुकथा)	प्रसारित आकाशवाणी इलाहाबाद, 1966
5	मातृत्व की टेक (कहानी)	नई कहानिया, इलाहाबाद, 1968
6	सवेरा (बाल कविता)	'बालक' पटना, 1968
7	बिजली (नाटिका)	साहित्य मण्डल, दिल्ली 1934,

वीरेश्वर का अप्रकाशित साहित्य

कवितायें

1	आये मेरे प्रीतम आये	1968 में पुनः सुधार 1972
2	अंधकार	1968 में पुनः सुधार 1972
3	अमर यौवन	जून 1968 में पुनः सुधार 1972
4	अज्ञात	सितम्बर 1968 में पुनः सुधार 1972
5	उदबोधन	1961 में पुनः सुधार 1972
6	खाट पर लेटे लेटे (बाल कविता)	1968
7	गजराज (बाल कविता)	1968
8	गदहा (बाल कविता)	1968

9	गोरा बादल की कहनी	1946
10	गाँधी	1968 पुनः सुधार 1972
11	गाँधी जयन्ती	1948 पुनः सुधार 1972
12	चींटी	1946 पुनः सुधार 1972
13	चौराहे की लालटेन	1946 पुनः सुधार 1972
14	जनतंत्र विहान	1953 पुनः सुधार 1972
15	जुगनू (बाल कविता)	1968
16	तकिया (बाल कविता)	1968
17	तैराक	1943
18	दियासलाई (बाल कविता)	1968
19	दो बातें	1968 पुनः सुधार 1972
20	धूप (बाल कविता)	1968
21	परिवर्तन	1929 पुनः सुधार 1972
22	पानी बरसा झमा झम	1946
23	पुत्र के प्रश्न	1946
24	पूस	1946
25	प्रेमांकुर	
26	फूल से (बाल कविता)	
27	बच्चों से (बाल कविता)	
28	बहता है पसीना	1946 पुनः सुधार 1972
29	मातृ स्तवन	1967 पुनः सुधार 1972

30	मुँह मोड़ चले	1968 पुनः सुधार 1972
31	याद	1968 पुनः सुधार 1972
32	रेलवे का कुली	1961 पुनः सुधार 1972
33	सांध्य बेला	1967 पुनः सुधार 1972
34	स्मृति चित्र	
35	स्वर्ग	1968
36	स्वप्नागन्तुक	1929 पुनः सुधार 1963

कविता संग्रह

1	गोरा बादल की कुंडलियां	1946 से 1953
2	भीखू की कुंडलियां	1953 से 1968

काव्य

1	माँ	दिसम्बर 1968

कहानियाँ

1 प्रेम का अंत

2 यात्रा भंग

3 शिक्षा मन्दिर

बाल एंकाकी

1 एकता क्लब

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 आस्था के चरण — डा0 नगेन्द्र पृ0 117, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रथम संस्करण 1968

2 अस्तित्ववाद और नयी कहानियाँ डा0 लाल चन्द्र गुप्त, 1975,

3 अवध बिलाश लाल दास, भूमिका पृ0 5

4 कलम का सिपाही अमृत राय

5 काव्य में सौन्दर्य एवं उदान्त, तत्व शिवबालक राय पृ0 97,98

6 कला हंस कुमार तिवारी, मानसरोवर, प्रकाशन,गया, पृ0 29

7 कालजयी कहानियाँ स0 डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित, 'ललित' प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ, 1993

8 कहानी पथ भूमिका स0 महेन्द्र प्रताप, 1976 पृ0 27

9 तारसप्तक अज्ञेय, (द्वितीय संस्करण कवि का वक्तव्य पुनश्च में)

10 नई कहानी की भूमिका कमलेश्वर 1966 पृ0 76

11 नाट्य शास्त्र भरतमुनि,

12 निराला आत्म हन्ता आस्था दूधनाथ सिंह, इलाहाबाद, पृ0259

13 परिवेश मोहन राकेश पृ0 203

14 बाल गीतायन द्वारिका प्रसाद महेश्वरी, भूमिका पृ0 5

15 बाल भारती सोहन लाल द्विवेदी

16 बाल साहित्य की अवधारणा डॉ0 श्री प्रसाद पृ0 32

17 भारत दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

18 भाषा विज्ञान — डॉ0 भोला नाथ तिवारी , इलाहाबाद

19 वीरेश्वर का रचना संसार — डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'

20 शब्दाानुशासन — किशोरी दास बाजपेई

21 शिव सारंगा ध्यवली — चन्द्र दास शोध संस्थान, बांदा अप्रकाशित,

22 सौन्दर्य के तत्व — डॉ कुमार विमल, पृ0 194, राजकमल प्रकाशन द्वितीय संस्करण, 1981

23 संसद से सड़क तक — धूमिल

24 समकालीन बाल साहित्य परख और पहचान — डॉ सुरेन्द्र विक्रम

25 स्वांतत्रयोन्तर कथा साहित्य — सीता राम शर्मा, 1965

26 हिन्दी कहानी उद्‌भव और विकास — डॉ0 सुरेश सिन्हा 1967

27 हिन्दी कहानी का विकास — डॉ देवेश ठाकुर, 1977

28 हिन्दी के आंचलिक उपन्यास — डॉ मृत्युंजय उपाध्याय

29 हिन्दी नयी कहानियों का समाज़ शास्त्रीय अध्ययन — डॉ महेश चन्द्र 'दिवाकर' 1992

30 हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ — डॉ शिव कुमार शर्मा, 1973

पत्रिकायें

1 कल्पना — जून 1951, स0 आर्येन्द्र शर्मा

2 चाँद

3	बालसखा	
4	माधुरी	1924, दुलारे लाल भार्गव एवं नवल किशोर, लखनऊ
5	विकल्प	2002 संयुक्तांक, स0 डॉ चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित' जे.एन. कालेज, बांदा, पृ0 –7
6	विशाल भारत	प्रथम साहित्य विशेषांक, स0 पदम सिंह शर्मा
7	वीणा	मई 1976, इन्दौर, हिन्दी समिति प्रेस
8	सुधा	
9	हंस	

पत्र

1 वीरेश्वर के नाम प्रेमचन्द्र के पत्र प्रेमचन्द्र, 28–10–1932

शोध लेख

1	वीरेश्वर और प्रेमचन्द्र का तुलनात्मक अध्ययन	डा0 शशि प्रभा दीक्षित
2	वीरेश्वर और प्रेमचन्द्र का तुलनात्मक अध्ययन	डा0 अनामिका द्विवेदी
3	स्मृतियों के छांव में	डॉ0 राजाराम पटैरिया, 'अन्वेषी'

4	हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकार वीरेश्वर सिंह	मुंशीप्रेमचन्द्र, विशाल भारत का प्रथम साहित्य विशेषांक सम्पादक श्री पदम सिंह शर्मा

कोष ग्रन्थ

1	अमर कोष	स0 हर गोविन्द शास्त्री, वाराणसी, चौखम्भा, प्रथम संस्करण 1970
2	भारतीय साहित्य कोष	स0 डॉ नागेन्द्र, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981
3	मानक हिन्दी कोष प्रथम खण्ड	स0 रामचन्द्र शर्मा, प्रयाग संस्करण वि0स0 2019

अंग्रेजी साहित्य

1	दि आर्ट आफ पोयट्री	अनु0 बेनेसफोलियर पाल बैलेरी
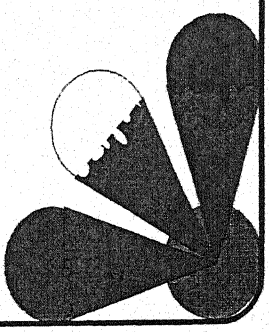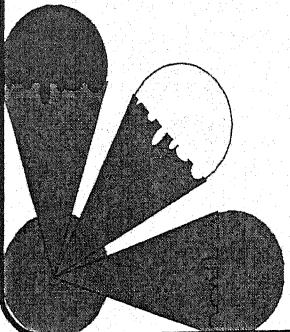
परिशिष्ट

वीरेश्वर के नाम मुंशी प्रेमचन्द्र का पत्र

फोटो वीरेश्वर सिंह "गोरा बादल"

परिवार के साथ

जागरण-कार्यालय,

सरस्वती-प्रेस, काशी

सं० ४२.३२

ता० २८—१०—१९३२ ई०

प्रिय बीरबल सिंह जी

कार्ड मिला। चांद में आप की कहानी पढ़ कर बड़ा आनंद आया। कई जगह तो मन मुग्ध हो गया।

आप की कहानी मिल गई है। अबकी अर्थात दिसंबर के अंक में अवश्य जायगी और अब की हंस में पहुँचेगा।

मैं आप की पढ़ाई में विघ्न तो नहीं डालना चाहता लेकिन कभी कभी कुछ लिखा करो तो एहसान मानूंगा।

भवदीय

प्रेमचंद

Shrijut Birgeshwar Sinha ji

150, Hindu Boarding House

Allahabad

स्व० श्रीमती राजदेवी सिंह

सिंह ...ल'

सुरेन्द्र सिंह

अजीत सिंह